ARANYASANHITA

OF THE SAMAVEDA

WITH THE COMMENTARY OF

SAYANA ACHARYA AND A
BENGALI TRANSLATION BY
SATYA BRATA SAMASRAMI.

आरण्य संहिता।

सायणाचार्य्यकृत भाष्य सहिता।

बङ्गानुवादयुताच।

वि, ए, उपाधिधारिणा

श्रीजीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्येण

प्रकाशिता।



Calcutta.

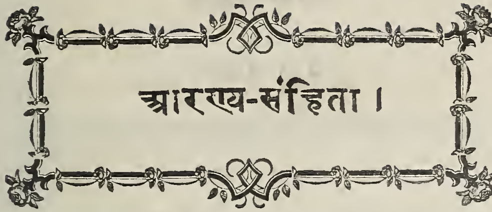
PRINTED AT THE DWEIPAYANA PRESS.

1873.

To be had from Pandit Jibananda Vidyasagara B. A. Sanskrit College of Calcutta.

पण्डितकुलतिलक-पूज्यपाद श्रीमत् तर्कवाचस्पति
पाद-प्रणीत-प्रकाशित-पुस्तकान्येतानि

१	आशुबोध व्याकरणम्	...	३।
२	धातुरूपादर्शः	...	२
३	शब्दस्तोम-महानिधि [संस्कृत अभिधान]		१०
४	सिद्धान्तकौमुदी—सरलाटीकासहिता		११
५	सिद्धान्तविन्दुसार [वेदान्त]	...	॥
६	तुलादानादिपद्धति [वङ्गाक्षरैः]	...	४
७	गयाश्राद्धादिपद्धति	...	१
८	शब्दार्थरत्न	...	॥।
९	वाक्यमञ्जरी [वङ्गाक्षरैः]	...	।
१०	छन्दोमञ्जरी तथा वृत्तरत्नाकर—सटीक		॥=
११	वेणीसंहार नाटक—सटीक	...	१
१२	मुद्राराक्षस नाटक—सटीक	...	१॥
१३	रत्नावली	...	॥।
१४	मालविकाग्निमित्र—सटीक	...	१॥
१५	धनञ्जय विजय—सटीक		।
१६	महावीरचरित	...	१॥
१७	साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी—सटीक	...	२
१८	वैयाकरणभूषणसार	...	॥।
१९	लीलावती	...	॥।
२०	वीजगणित	...	१
२१	शिशुपालबध—सटीक	...	६
२२	किरातार्जुनीय—सटीक	...	२॥
२३	कुमारसम्भव—पूर्वखण्ड सटीक	...	१
२४	कुमारसम्भव—उत्तरखण्ड	...	॥
२५	अष्टकम् पाणिनीयम्	...	॥।
२६	वाचस्पत्यम् [संस्कृत-बृहदभिधान]	...	६०



आरण्य-संहिता।

ओं नमः सामवेदाय।

वागीशाद्याः सुमनसः सर्व्वार्थानामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥ १ ॥
यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्म्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरम् ॥ २ ॥

कृपालुः सायणाचार्य्यो वेदार्थं वक्तुमुद्यतः ।
आरण्यकाभिधः षष्ठोऽध्यायो* व्याक्रियतेऽधुना ॥ ३ ॥

तवेन्द्रेत्यादिकानान्तु पञ्चपञ्चाशतां क्रमात् ।
ऋषिच्छन्दोदैवतञ्च तत्र तत्राभिदध्महे ॥ ४ ॥
तत्राद्याया ऋचो द्रष्टा भरद्वाजः प्रकीर्त्तितः ।
द्वितीयस्य वसिष्ठः स्यात्, तृतीयाया ऋचः स्मृतः ॥ ५ ॥
वामदेवस्ततश्छन्दो बृहतीत्रिष्टुवेव च ।
गायत्रीति क्रमादिन्द्रो भवेत् तिसृषु देवता ॥ ६ ॥

---

* त्रय आर्च्चिक-ग्रन्था इति विवरणादि-सकल-ग्रन्थ-सम्मता वैदिक-प्रवादानुगताः पुस्तकाद्यन्त-समीक्षणेनोपलब्धव्याश्च। तथाच षड़ध्यायकश्छन्दो नाम एकः, अपरो नवाध्यायात्मक उत्तरः, ताभ्यामन्यत् एषोऽध्यायैकात्मक आरण्य इति व्यवहृतः। सायण-मते तु नैवम्। अयं हि पञ्चोपविभागै रेव छन्दोग्रन्थं परिसमाप्य तस्यैव षष्ठोपभाग एष इति मन्येत।

প্রথম-খণ্ডে—

সৈষা প্রথমা।

ভরদ্বাজঋষিঃ, বৃহতীচ্ছন্দঃ, ইন্দ্রোদেবতা।

২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
ওম্। ইন্দ্রজ্যেষ্ঠন্নআভরওজিষ্ঠম্পুপুরিশ্রবঃ।

১র ২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ৩ ২র
যদ্দিধৃক্ষেমবজ্রহস্ত (১) রোদসীউভেসুশিপ্রপপ্রাঃ ॥১॥

হে 'ইন্দ্র'! * 'জ্যেষ্ঠং' প্রশস্যতমম্ 'ওজিষ্ঠম্' অতিশয়েন বলকরম্ 'পুপুরি' পূরকং 'শ্রবঃ' অন্নং 'নঃ' অস্মভ্যম্ 'আভর' আহর প্রযচ্ছ। হে 'বজ্রহস্ত'! বজ্রবাহো! হে 'সুশিপ্র'! শোভন-হনুক! এবম্ভূত! হে ইন্দ্র! 'যত্' অন্নং 'দিধৃক্ষেম' ধারয়িতুমিচ্ছেম, যচ্চান্নম্ ইমে পরিদৃশ্যমানে 'উভে রোদসী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'আ পপ্রাঃ' আ পূরয়সি, তদন্নমাহরেত্যন্বয়ঃ ॥১॥

হে দুরাত্মগণের শাস্তা, বজ্রহস্ত এবং সুন্দরহনুমৎ, সাধুগণের দর্শনীয় ঈশ্বর! আমরা যে অন্ন ধারণ করিতে ইচ্ছা করি—যে অন্নে এই পরিদৃশ্যমান, ঊর্দ্ধাধোভাগে পরিবর্ত্তমান, উভয়-লোক পরিপূর্ণ করিতেছ, সেই প্রশস্ত বলকর আশাপূরক অন্ন আমাদিগকে প্রদান কর ॥১॥

---

(১) "যেনেমেচিত্রবজ্রহস্ত"—ইতি বহ্বৃচাং পাঠঃ।

* "ইন্দতে বৈশ্বর্য্য-কর্ম্মণঃ"-ইতি নৈরুক্তম্ ৩কা০ ১০অ০ ৮খ০ ঈশ্বরস্যায়মিতি তদ্ভাষ্যম্।

অথ দ্বিতীয়া।

বসিষ্ঠঋষিঃ, ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ, ইন্দ্রোদেবতা।

২ ৩২ ৩ ১২ ৩ ১র ২র ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩
ইন্দ্রোরাজাজগতশ্চর্ষণীনামধিক্ষমাবিশ্বরূপং-
১ ২ ১ ২ ৩ ২ ৩১ ২ ৩ ২ উ ৩ ১ ২
যদস্য। ততোদদাতিদাশুষেবসূনিচোদদ্রাধউপস্তুতং
৩ ২
চিদর্বাক্॥ ২ ॥

যঃ 'ইন্দ্রঃ' 'জগতো' জঙ্গমস্য পশ্বাদেঃ যতো 'রাজা' ঈশ্বরো ভবতি চর্ষণীনাং মনুষ্যাণাং চ রাজা ভবতি। কিঞ্চ। অধিক্ষমা (সপ্তম্যেকবচনস্য লুক্) ক্ষমায়াং* 'বিশ্বরূপং' 'যত্' ধনমস্তি তস্যাপি রাজা ভবতি। 'ততো দদাতি দাশুষে বসূনি' যজমানায় বসূনি ধনানি দদাতি। স ইন্দ্রোঽস্মাভিঃ উপস্তুতং সম্যক্ স্তুতং 'রাধঃ' ধনং 'অর্বাগ্' অস্মদভিমুখং 'চোদত্' প্রেরয়তু ॥২॥

ইন্দ্র—মনুষ্যদিগের এমন কি সমস্ত জঙ্গম-পদার্থের ও পৃথিবীর (অর্থাৎ স্থাবর বস্তুর) অধিপতি; এই পরিদৃশ্যমান বিবিধ ঐশ্বর্য্য ইহাঁরই। সেই নিমিত্তই তিনি আস্তিক বর্গকে বহুতর ধন বিতরণ করিতে প্রবৃত্ত আছেন—আমাদিগের আদরণীয় বস্তু, আমাদিগের সম্মুখান করিতেছেন ॥২॥

---

(২) "অধিক্ষমা"-"অধিক্ষমি"-ইতি, "বিশ্বরূপং"-"বিষুরূপম্"-ইতি, "উপস্তুতম্"-"উপস্ত তঃ"-ইতি চ সাম্ন ঋচঃ পাঠভেদঃ।

* নিঘণ্টৌ পৃথিবী-নামসু ক্ষমা-ইতি ষষ্ঠম্ পদম্।

अथ तृतीया।

वामदेवऋषिः, गायत्रीच्छन्दः इन्द्रोदेवता।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २क २र
यस्येदमारजोयुजस्तुजेजनेवनꣳस्वः

१ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रस्यरन्त्यंबृहत्॥ ३॥

'रजोयुजः' ज्योतिभिर्युक्तस्य (ज्योतीरज उच्यत इति यास्कः) अत्यन्त तेजस्विनो 'यस्य' इन्द्रस्य 'इदं' पुरोवर्त्ति स्तोत्रयुक्तं हविरस्ति तद्धविः 'स्वः' स्वर्गे सर्वत्र वा 'तुजे' दातरि जने यजमान विषये 'वनं' यतो वननीयं सम्भजनीयं खलु। अतः 'इन्द्रस्य' दानं 'रन्यम्' अत्यन्तरमणीयं 'बृहत्' प्रभूतं भवति॥३॥

যে অত্যন্ত জ্যোতিষ্মান্ ইন্দ্রের প্রজাবর্গের দানবিষয়ে এই বুদ্ধিস্থ স্বর্গ অতিপ্রভূত ও পরাকাষ্ঠা হইয়াছে, তাঁহাকে নমস্কার॥ ৩॥

अथ चतुर्थी।

शुनःशेपऋषिः, चतुष्पाज्जगतीच्छन्दः, वरुणो देवता।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १ २
उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमꣳश्रथाय।

१ २ ३ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २
अथादित्यव्रतेवयन्तवानागसो अदितयेस्याम॥ ४॥

---

(४) "अथादित्यव्रतेवयन्तव"-"अथावयमादित्यव्रततव"—इति साम्न ऋचः पाठभेदः॥

आद्ये ऋचौ चतुष्पादे ह्येकपादयुतान्तिमा।
शौनःशेपी गार्त्समदी वामदेवीति ताः क्रमात्।
वारुणी पावमानी च वैश्वदेवीति संस्मृताः॥

हे 'वरुण'!* 'उत्तमम्' उत्कृष्टं शिरसि बद्धं 'पाशम्' 'उच्छ्र-थाय' उत्कृष्टं शिथिलं कुरु। 'अधमं' निकृष्टं पादेऽवस्थितं पाशं 'अवश्रथाय' अव अधस्तात् शिथिली कुरु। 'मध्यमं' 'नाभि-देशगतं पाशं 'विश्रथाय' वियुज्य शिथिली कुरु। 'अथ' अन-न्तरं हे 'आदित्य' अदितिः पुत्र! † वरुण! 'वयं' शुनःशेपाः 'तव' व्रते त्वदीये कर्म्मणि 'अदितये' खण्डन-राहित्याय 'अनागसः' अपराध-रहिताः '[illegible]' भवेम॥४॥

হে সর্ব্বাবরক দেব! আমাদের উত্তমাঙ্গে (শিরোভাগে) বদ্ধ আছে যে পাশ, তাহা শিথিল করত উপরেই তুলিয়া লও, অধমাঙ্গে (পাদভাগে) অবস্থিত পাশও শিথিল করত নিম্নভাগে খসাইয়া দাও এবং মধ্যভাগের (নাভিদেশের) পাশও শিথিল করিয়া বিযুক্ত কর। হে অখণ্ডকালের অংশ! তোমার অখণ্ডব্রতে আমরা যেন কোন রূপে অপরাধী না হই!॥৪॥

---

* "दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि। अतूर्त्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु ऋक् १०म० ६, ४, ४"-इति मन्त्रलिङ्गात्—"अहो-रात्रं मित्रावरुणौ २का० ११अ० २३ख०"-नैरुक्त-भाष्याच्च मित्र-शब्देन दिवा, वरुण-शब्देन च रात्रिः सुग्रहः। "वरुणः वृणोतीति सतः ३का० १०अ० ३ख०"-इति व्युत्पा-दनात् सर्वेषां घटपटादीनां तमोरूपेण आवरकश्च।

† "अदितिरदीना"-" 'अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।

अथ पञ्चमी।

गृत्समदऋषिः, चतुष्पाज्जगतीच्छन्दः, पवमानीदेवता।

१ २ ३१र२र ३१ २३१र २र ३१ २
त्वयावयंपवमानेनसोमभरेकृतंविचिनुयामशश्वत्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३ २
तन्नोमित्रोवरुणोमामहन्तामदितिःसिन्धुःपृथिवीउत
द्यौः॥ ५॥

हे 'सोम'! * पवमानेन पवित्रेण पूयमानेन 'त्वया' सहायेन 'भरे' (सङ्ग्राम-नाम) सङ्ग्रामे शश्वद् बहु 'कृतं' कर्त्तव्यं 'वयं' 'विचिनुयाम' विशेषेण कुर्य्याम। यस्मात्तव साहाय्येन कर्म्माणि कुर्म्मः 'तत्' तस्मात् अस्मान् 'मित्रो वरुणः अदितिः' एतन्नामिकाः, 'सिन्धुः' † एतदभिधाना, तथा 'पृथिवी', 'उत' अपिच 'द्यौः'। एते मित्रादयः 'नः' अस्मान् 'मामहन्ताम्, पूजयन्तु धनादि-दानेन ॥ ५॥

হে স্রষ্টৃদেব! আমরা তোমার পবিত্র সাহায্যে বহুতর কর্ত্তব্য সাধন করিতে পারি! অতএব দিবস ও রজনী রূপে বিভক্ত সেই অখণ্ড কাল এবং অন্তরীক্ষ, পৃথিবী ও দ্যুলোক এই ত্রিভাগীকৃত অখণ্ড দেশ আমাদিগকে পরিতৃপ্ত করুন ॥৫॥

विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्"-इत्यदितेर्विभूतिमाचष्ट एनान्यदीनानीति वा" – इति नैरुक्तम् २का० ४अ० २२ २३ख०। दितिः खण्डनं तदभावोऽदितिरिति निष्पन्नोऽर्थो भाष्यादि-लभ्यः।

* सोमः सुनोतेः"-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० ११अ० २ख०। तथाच सोमः सविता स्रष्टेत्यर्थः।

† सिन्धुः समुद्रः, समुद्र इति अन्तरिक्षनामसु पञ्चदशम् पदम् नि० १, २।

अथ षष्ठी।

वामदेवऋषिः, एकपाज्जगतीच्छन्दः, विश्वे देवा देवताः।

२ १र २र ३ २ ३उ ३ २
इमंवृषणंकृणुतैकमिन्माम्॥ ६॥

पूर्व्वस्या ऋचि प्रस्तुता हे मित्रादयो देवाः! यूयम् 'एकम्' अद्वितीयं दानकर्म्मणि 'इमं' सोमं 'वृषणं' कामानामभिवर्षकं 'कृणुत' कुरुत। तथा 'इमां' क्रियां फलाभिवर्षिकां कुरुत॥६॥

হে দেবগণ! তোমরা এই সর্ব্ব-ফল-প্রদ অদ্বিতীয় ঈশ্বরকে আমায় প্রাপ্ত করাও!।৬

अथ सप्तमी।

अमहीयु ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, पवमानी देवता।

३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
सनइन्द्राययज्यवेवरुणायमरुद्भ्यः।

२ १र २र
वरिवोवित्परिस्रव॥ ७॥

गायत्र्यौ पावमान्यौ तु सनइत्यादिके ऋचौ।
अमहीयुस्तयोरेवं छन्दोदैवत-निर्णयः॥ १॥

हे सोम! * 'सः' 'वरिवोवित्' धनस्य-लम्भकस्त्वं 'नः'

* 'अथैषा परा भवति चन्द्रमसो वैतस्य वा"-३का० ११अ० ४ख०।

अस्माकं यज्यवे' यष्टव्यायेन्द्राय * 'वरुणाय' † 'मरुद्भ्यः' ‡ च 'परिस्रव' धारया क्षर ॥ ७ ॥

হে সিতরশ্মে চন্দ্র! অভীষ্ট-সাধক তুমি, আমাদিগের পূজনীয় বায়ু, বারি ও অগ্নির স্বাস্থ্যকারিতা সম্পাদনার্থ অমৃত ধারা ক্ষরণ কর।৭

अथाष्टमी।

अमहीयुरृषिः, गायत्रीच्छन्दः, पवमानोदेवता।

३ १र २र ३ २उ ३ २ ३ १ २
एनाविश्वान्यर्य आद्युम्नानिमानुषाणाम्।
१ २
सिषासन्तोवनामहे॥ ८ ॥

'एना' एनेनानेन सोमेन 'मानुषाणां' मनुष्याणां 'विश्वानि' 'द्युम्नानि' अन्नानि 'अर्य्यः' अभिगच्छन्तः 'सिषासन्तः' सम्भक्तुमिच्छन्तश्च वयं 'वनामहे' भजामहे ॥ ८ ॥

---

* 'इरां ददातीति वेरां दधातीति वा'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० १०अ० ८ख०। इरा शब्देन जलं प्रसिद्धम्, जलयोनित्वश्चान्तरिक्षस्थाग्नेरितीन्द्रपदेनाग्निरपि गृह्यते।

† 'वरुणः कबन्धं प्र-ससर्ज' -इत्यादि-मन्त्र-लिङ्गात् वरुणो मेघ-वर्षण-हेतु-भूतः, स च आकृष्ट-वारि-समूहः प्रसिद्धः।

‡ 'मरुतो मितराविणो वा, मितरोचिणो वा, महद्द्रवन्तीति वा इति नैरुक्तम् ३का० ११अ० १३०। 'वायु र्वै क्षेपिष्ठा देवता'-इति च श्रूयते। ततो मरुतो वायव इति सिद्धान्तः।

এই চান্দ্রমস রশ্মির প্রভাবে মনুষ্যগণের অদনীয় শস্যাদি সমস্ত পরিপুষ্ট হইতেছে, যাহার ভোগে অভিলাষী হইয়া আমরা সতত উপচর্য্যা করি।৮

अथ नवमी।

त्रिष्टुभा अन्नदेवता आत्मान मेवाह—आत्माएव ऋषि:।

२ १ २　　३ २ ३ २ ३
अहमस्मिप्रथमजाऋतस्य-

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाम।

३ १ २ ३ २उ ३ १ २　३
योमाददातिसइदेवमावद-

२उ २ ३१ ३१ २
हमन्नमन्नमदन्तमद्मि॥९॥

'देवेभ्यः' पूर्वं अग्नि-वरुणादि-देवेभ्यः-पुरा 'अहम्' अन्न देवता 'अमृतस्य' विनाश-रहितस्य 'ऋतस्य' सत्यस्य परब्रह्मणः सम्बन्धिनी 'प्रथमजा अस्मि नाम' प्रथमतएवोत्पन्ना भवामि खलु। 'यः' पुमान् 'मां ददाति' अन्नरूपां माम् अतिथ्यादिभ्यो ददाति 'सइत्' सएव 'एवं' परिदृश्यमान-प्रकारेण 'आवत्' अवति सर्वान् प्राणिनो रक्षति। यस्तु लोभ-युक्तः-सन् प्राणि-भ्योऽन्नमदत्वा स्वयमेव तदन्नमत्ति। 'अन्नम् अदन्त' नाना-विधान्नभक्षकं तं लोभिनम् 'अहमन्नम्' अन्न-देवता 'अद्मि' भक्ष-यामि विनाशयामीत्यर्थः॥ ९॥

['उषस:' सम्बन्धी 'पृश्नि:' आदित्य:*[पृश्निरादित्यो भवति, प्राश्नुत एनं वर्ण इति नैरुक्ता:]। 'अग्रिय:' अग्र: मुख्यः सोम: 'अरूरुचत्' रोचयति। स 'उक्षा' जलस्य सेक्ता पर्जन्य: सन् 'मिमेति' भृशं शब्दायते। 'भुवनेषु' भूतजातेषु 'वाजयु:' तेषा मन्न मिच्छन्; 'मायाविन:' माया प्रज्ञा तद्वन्तो देवा: 'अस्य' सोमस्य 'मायया' प्रज्ञया 'ममिरे' निर्मितवन्त: [सोमस्य एकैकांश-पान-वशात् अग्न्यादय: स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थ:]। तस्य 'अस्य' मायया 'नृचक्षस:' नृणां द्रष्टार: 'पितर:' पालका: देवा: अङ्गिरस: पितरो वा 'गर्भम्' 'आदधु:' धारयन्ति ओषधीषु॥

सचात्र सूर्यात्मा सोम: स्तूयते। सूर्य-रश्म्यनुगमाधीन-वर्द्ध-नाच्च चन्द्रस्य॥

यद्वा अय मुषस: पृश्नि: सविता अरूरुचत् रोचयति रोचते वा। सर्वं शिष्टं समानम्। तत्सम्बन्धिनो नृणां द्रष्टार: पितरो जगद्रक्षका: रश्मयो गर्भ मादधु र्वृष्ट्यर्थम्॥ ११॥

ঊষার সহচারী সূর্য্য, নানাবর্ণের কারণরূপে কিরণজাল বিস্তার করিতেছেন, চন্দ্র প্রতিনিয়ত প্রদীপ্ত হইতেছেন; পর্জন্য এই ভুবনসকলে অন্ন-কামনায় নির্ঘোষ করিতেছেন; মনুজগণের জীবনাধার ও রক্ষক, শস্যসকল গর্ত্ত ধারণ করিতেছেন—অধিক কি, দীপ্যমান স্থাবর জঙ্গমসকলই ইহাঁর প্রজ্ঞা শক্তিতেই প্রজ্ঞাবান্ হইয়া সচেতনবৎ সৃজনক্রিয়ার উপযোগিতা করিতেছেন। ১১

+ 'सहचारिणावुषाश्चादित्यश्च इति च नैरुक्तम् ३का० ११अ० १०ख०।

अथ तृतीया।

ऋषी मधुच्छन्दा वैश्वामित्री द्रष्टा साम्नायत्रीच्छन्द इन्द्रो देवतेति।

२ ३ ३ उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रइद्धर्योःसचासम्मिस्लआवचोयुजा।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रोवज्रीहिरण्मयः॥१२॥

'इन्द्रइत्' इन्द्रएव 'हर्योः' हरि-नामकयो रश्वयोः 'सचा' सह युगपत् 'आ सम्मिस्लः' सर्वतः सम्यङ्मिश्रयिता। कीदृशयो र्हर्योः? 'वचोयुजा' इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः सुशिक्षितयोरित्यर्थः। अयम् 'इन्द्रः' 'वज्री' वज्र-युक्तः 'हिरण्मया' हिरण्मयसर्वाभरणैरुपेत इत्यर्थः॥१२॥

সূর্য্য এবং চন্দ্র ঈশ্বরের এই দুইটি বেগগামী অশ্ব, তিনি ইচ্ছামাত্রে ইঁহাদিগকে অহোরাত্র-করণরূপ কার্য্যে নিয়োগ করিয়া থাকেন, তিনিই একমাত্র এই অশ্বদ্বয়ের সংযোজয়িতা। ঈশ্বর, দুরাত্মদিগের জন্য বজ্রী এবং সাধুগণের সম্বন্ধে অমৃতময়।১২

अथ चतुर्थी।

मधुच्छन्दविश्वामित्रऋषिः, गायत्री च्छन्दः, इन्द्री देवता।

३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषुच।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
उग्रउग्राभिरूतिभिः॥१३॥

हे इन्द्र! 'उग्रः' शत्रुभिरप्रधृष्यस्त्वम् 'उग्राभिः' अप्रधृष्याभिः ऊतिभिः अस्मद्द्वेष्य-पर-पक्षाभिः 'वाजेषु' युद्धेषु 'नः' अस्मान् 'अव' रक्ष। तथा 'सहस्रप्रधनेषु' च सहस्र-सङ्ख्याक-गजाश्वादि-लाभ-युक्तेषु महायुद्धेष्वपि रक्ष ॥ १३ ॥

হে ঈশ্বর! অপ্রধৃষ্য তুমি অপ্রধৃষ্য পালন শক্তিতে আমাদগকে অন্নাদিমৎসম্পদে এবং রণক্ষেত্রাদি ঘোরবিপৎ স্থলে রক্ষা কর (সম্পদে যেন প্রমত্ত না হই! এবং বিপদে যেন ব্যাহত না হই! ।১৩

अथ पञ्चमी।

प्रथ ऋषिः, त्रिष्टुब्छन्दः, विश्वेदेवा देवताः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
प्रथश्चयस्यसप्रथश्चनामानुष्टुभस्यहवि-
२ ३ २ ३ १र ३ २ ३ १
षोहविर्यत्। धातुर्द्युतानात्सवितुश्चवि-
२ ३ १ र २ र ३ १ २
ष्णोरथन्तरमाजभारावसिष्ठः ॥१४॥

अपश्यत् प्रथइत्येतां त्रिष्टुभं प्रथनामकः।
वैश्वदेवीं भवेदेवं छन्दोदैवत-निर्णयः ॥ १ ॥

'यस्य' वसिष्ठस्य 'प्रथ नाम' पुत्रः, यस्य भरद्वाजस्य 'सप्रथः' नाम पुत्रः—तयोर्मध्ये 'वसिष्ठः' मम पिता 'आनुष्टुभस्य' अनुष्टुप्छन्दसा-युक्तस्य 'हविषः' घर्माख्यस्य 'हविः' हविष्ट्वापादकं 'रथन्तरं'

साम तद्रथन्तरं 'धातुः' धातृसंज्ञाद्देवात् (१)। 'द्युतानात्' द्योतमानात् 'सवितुश्च' (२)'विष्णोश्च'(३) 'आ जभार' आजहार आहृतवान् (हृग्रहोर्भइति भत्वम्। रथशब्दोपपदात्तरतेः संज्ञायां भृतृवृजीति खच्। अरुर्द्विषदजन्तस्येति मुमागमः॥१४॥

সুপ্রসিদ্ধ বশিষ্ঠ ঋষি, দ্যোতমান স্রষ্টা, পাতা, সর্ব্ব-ব্যাপী দেবতার যজনে প্রবৃত্ত হইয়া—অনুষ্টুপ্ছন্দে প্রদেয় যে হবির প্রথম প্রচারয়িতা প্রথ ও সপ্রথ নামক ঋষিরা, যাহা অনুষ্টুপছন্দে প্রদেয় হবির মধ্যে উৎকৃষ্ট, সেই হবি এবং রথন্তর সাম লাভ করিয়াছেন॥ ১৪

अथ षष्ठी॥

नियुत्वानिति गायत्री वायुं गृत्समदोऽब्रवीत्।

३ १ २ र ३ २ ३ ३ १ २
नियुत्वान्वायवागह्ययं शुक्रो अयामिते।
१ २ ३ २ ३ २
गन्तासि*सुन्वतो गृहम्॥१५॥

हे 'वायो!' (४) 'नियुत्वान्' नियुतो वाहनानि वायोः (नियुतो वायोरिति निघण्टुः) तैर्युक्तस्त्वं 'आगहि' आगच्छ।

* "गतासि" इति ऋग्वेद पाठः।

१—'धाता-विधाता' सर्वस्य इति नैरुक्तम् ३का० ११अ० १०ख०।

२—'सविता सर्वस्य प्रसविता'-इति नैरुक्तम् ३का० १०अ० ३१ख०।

३—'विष्णु र्विशतेर्वा व्यश्नोतेर्वा'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० ११अ० १५ख०।

एवञ्च विष्णुशब्देन सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामीति सिद्धान्तः।

४—'वायुर्वातेर्वेत्तेर्वास्याद् गति-कर्मणः'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० १० १,२ख०।

'अयं' 'शुक्रः' दीप्यमानः सोमः 'ते' तुभ्यम् 'अयामि' (यामः कर्मणि लुङि रूपम्)नियतो गृहीत आसीत्। यतः 'सुन्वतः' सोमाभिषवं कुर्वतो यजमानस्य 'गृहं' 'गन्तासि' यातोसि ॥१५॥

হে সর্ব্বত্রগামিন্! তুমি সর্ব্ব কার্য্যের নিয়ন্তা, আগমন কর। তোমার জন্য এই শুক্লবর্ণ সোমরস উৎসর্গই রহিয়াছে; কারণ—অভিষবকারী যজমানদিগের গৃহে গমন করিয়াই থাক॥ ১৫

अथ सप्तमी।

नृमेधपुरुमेधौ द्वावृषी ऐन्द्र्या अनुष्टुभः।

३र २र ३ १२ ३१२
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय।
१२ ३१२ ३१२ ३१ ३१र २
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ॥१६॥

हे 'अपूर्व्य!' त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित! हे 'मघवन्!' मंहनीयतम! धनवन्निन्द्र! 'वृत्रहत्याय' (१) वृत्रासुर-हननाय 'यद्' यदा त्वं 'जायथाः' उत्पन्नः प्रादुर्भूतोसि 'तत्' तदानीमेव 'पृथिवीं' प्रथमानाम् 'अप्रथयः' प्रसिद्धां दृढ़ामकरोः। 'उत' अपिच 'दिवं' द्यां द्युलोकं अन्तरिक्षेण 'अस्तभ्नाः' निरुद्धामकार्षीः (ईदृशं वीर्यं त्वदन्यस्य न भवतीत्यर्थं द्योतयितुम् अपूर्व्येति पदम् ॥१६॥

হে পূর্ব্ব-বর্জ্জিত, ঐশ্বর্য্যশালিন্! দেব! যখন তুমি মেঘ সঞ্চালনে প্রবৃত্ত হও, তখনই এই পৃথিবী শস্যোৎপাদিকা

१—'अथास्य कर्म—रसानुप्रदानं वृत्रवधो या च का च बलकृतिरिन्द्र-कर्मैव तत्'-इति नैरुक्तम् २का० ७अ० १०ख०। 'वृत्रवधो मेघवधः'-इति तत्रत्य-भाष्यम्।

শক্তিমতী রূপে প্রথিত হইয়া পড়ে এবং তখন দ্যুলোক স্তম্ভিত অর্থাৎ নির্ব্বাতপ্রায় করিয়া থাক ॥ ১৬

इति द्वितीयः खण्डः ॥

अथ तृतीयखण्डे—

सैषा प्रथमा।

वामदेवऋषिः प्रीतो मयीत्यस्याः प्रजापतिः।
देवतास्यास्तनच्छन्दोनुष्टुप् सद्यद्रतीरितम् ॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ र २र ३ २ ३ १र २र
मयिवर्चोअथोयशोथोयज्ञस्ययत्पयः।

३ २ ३ १ २ ३ १र १ २र
परमेष्ठीप्रजापतिर्दिविद्यामिवदृꣳहतु॥१७॥

'परमेष्ठी' परमे लोके तिष्ठतीति परमेष्ठी प्रजापतिः (१) 'दिवि' द्योतमाने स्वर्गे 'द्यामिव' द्योतमानां कान्तिमिव। 'मयि' अस्मदीये शरीरे 'वर्चः' तेजः ब्रह्माख्यं 'दृंहतु' वर्द्धयतु। 'अथो' अपिच 'यशश्च' 'दृंहतु'। 'अथो' किञ्च। 'यज्ञस्य' यागस्य सम्बन्धि अतएव स उत्तमं 'पयः' हविर्लक्षणमन्नं च दृंहतु॥१७॥

পরম লোকস্থায়ী প্রজাগণের পাতা দেবতা আমার শরীরে সেই স্বর্গীয় ব্রহ্মতেজ পরিবর্দ্ধিত করুন এবং যশ পরিবর্দ্ধিত করুন ও যজ্ঞীয় উৎকৃষ্ট অন্নও পরিবর্দ্ধিত করুন ॥ ১৭

१—'प्रजापतिः प्रजानां पाता पालयिता वा'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० १०अ० ४२, ४३ख०।

অথ দ্বিতীয়া।

ত্রিষ্টুভঃ পাবমান্যা' স্যাদৃষি র্গৌতম নামকঃ।

৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১র ২১
সন্তেপয়াꣳসিসমুযন্তুবাজাঃসংবৃষ্ণ্যান্যভি

৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
মাতিষাহঃ। আপ্যায়মানোঅমৃতায়সোম

৩ ১র ১ ২র ৩ ১ ২
দিবিশ্রবাꣳস্যুত্তমানিধিষ্ব॥ ১৮ ॥

হে 'সোম!' 'অভিমাতিসাহঃ' অভিমাতীনাং শত্রূণাং হন্তুঃ 'তে' তব এবংভূতং ত্বাং 'পয়াংসি' অপ্যার্থানি ক্ষীরাণি 'সংযন্তু সংগচ্ছন্তাম্। তথা 'বাজাঃ' হবির্লক্ষনান্যন্নানি চ ত্বাং সংগচ্ছন্তাং 'বৃষ্ণানি' বীর্য্যাণি চ সঙ্গচ্ছন্তাম্। হে সোম! ত্বং 'অমৃতায়' আত্মনঃ অমৃতত্বায় অমরত্বায় 'আ' সমন্তাদ্বর্দ্ধমানঃ সন্ 'দিবি' নভসি স্বর্গে 'উত্তমানি' উন্নততমানি উৎকৃষ্টানি 'শ্রবাংসি' অন্নানি অস্মাভিঃ ভোক্তব্যানি হবির্লক্ষণানি 'ধিষ্ব' ধারয় (তি ক্রিয়া-গ্রহণং কর্তব্যমিতি কর্মণঃ সংপ্রদানত্বাৎ চতুর্থ্যর্থে ষষ্ঠী ॥১৭॥

হে স্রষ্টঃ! এই পেয় হব্য তোমার উদ্দেশে গমন করিতেছে, এই অন্ন সমস্তও তোমার উদ্দেশে গমন করিতেছে; এই সমিভ্যারে প্রমত্ত শক্রগণের বীর্য্য সকলও তোমার উদ্দেশে গমন করুক। হে দেব! তুমি সন্তুষ্ট হইয়া, আমাদের ভোগের জন্য দ্যুলোকে অক্ষয় উৎকৃষ্ট ভোগ্য বস্তু সকল আয়োজন কর॥ ১৮

अथ तृतीया ॥

(ऋष्यादिकम् पूर्ववत्)

२ १ र १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वमिमाओषधीःसोमविश्वास्त्वमपोअज-
३ २ १ २ ३ २ १ २ ३
नयस्त्वंगाः। त्वमातनो*रुर्वाऽन्तरिक्षं
१र २र ३ १र २१
त्वंज्योतिषावितमोववर्थ ॥ १६॥

हे 'सोम' ! 'त्वम्' 'इमाः' भूम्यां वर्तमानाः 'विश्वाः'सर्वाः 'ओषधीः' 'अजनयः' उत्पादितवानसि। तथा 'त्वम्' 'अपः' तासामोषधीनां कारणभूतानि वृष्ट्युदकानि अजनयः। तथा 'त्वं' 'गाः' सर्वान् पशून् उदपादयः। 'उरु' विस्तीर्णाम् 'अन्तरिक्षं' 'त्वम्' 'आतनोः' विस्तारितवानसि। तस्मिन्नन्तरिक्षे यत् 'तमः' अस्मद्दृष्टि-निरोधकम् अन्धकारं यदपि 'त्वं' 'ज्योतिषा' आत्मीयेन प्रकाशेन 'वि ववर्थ' विशिष्टं कृतवानसि। (ववर्थ वृञ वरणे लिटस्थलि, "बभूथा-ततंथ-जगृम्भ-ववर्थेति" निपात्यते ॥१६॥

হে স্রষ্টঃ! তুমি এই ভূমিতে বিদ্যমান সমস্ত ওষধি সৃজন করিয়াছ, তুমি ঐ সমস্তের কারণস্বরূপ বৃষ্টি জলের সৃজন করিয়াছ তুমি ঐ সমস্তের উৎপাদনার্থ ভূমি কর্ষণোপযোগী গো-জাতির সৃজন করিয়াছ, তুমি এই সমস্তের স্থা-

---

*"आतनोः" "आतन्थ"—इति साम्नऋचः पाठौ।

য়িত্বের জন্য এই বিস্তীর্ণ অন্তরীক্ষের বিস্তারয়িতা হইয়াছ, তুমিই জ্যোতিঃ সৃজন পূরঃসর তমোজাল বিনষ্ট করিয়া থাক॥ ১৯

অথ চতুর্থী।

अग्निमीडे मधुच्छन्दा गायत्रे ग्षाग्निसंस्तुति:।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
अग्निमीडे* पुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम्।
१ २ ३ १ २
होतारं रत्नधातमम्॥ २०॥

'अग्नि'-नामकं 'देवम्' 'ईडे' स्तौमि (ईड स्तुताविति धातु:; मन्त्रस्यास्य होत्रा प्रयुज्यमानत्वात् अहं होता स्तौमीति लभ्यते) कीदृशम् अग्निम्? 'यज्ञस्य पुरोहितं' यथा राज्ञ: पुरोहित: तदभीष्टं सम्पादयति तथाग्निरपि यज्ञस्यापेक्षितं होमं सम्पादयति। यद्वा यज्ञस्य सम्बन्धि पूर्वभागे आहवनीयरूपेणावस्थितम्। पुन: कीदृशम्? 'होतारमृत्विजम्' (देवानां यज्ञेषु होतृनामक-ऋत्विगग्निरेव। तथाच श्रूयते—"अग्निर्वै देवानां होतेति")। पुनरपि कीदृशम्? 'रत्नधातमम्'। यागरूपाणां रत्नानाम् अतिशयेन धारयितारं पोषयितारम्॥

अत्राग्निशब्दस्य यास्को बहुधा निर्वचनं दर्शयति—"अथातो नुक्रमिष्यामोऽग्नि: पृथिवीस्थान स्तं प्रथमं व्याख्यास्यामोऽग्नि: कस्मादग्रणी र्भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयतेऽगं नयति सन्नममा-

* "मीले" इति ऋग्वेद पाठ:।

नोऽक्नोपनो भवतीति स्थौलाष्ठीवि र्नक्नोपयति न स्नेहयति त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायतइति शाकपूणिरितादक्ताद्गन्धाद्दानी तास्स खल्वेते रकार मादत्ते गकारमनक्तेर्वा दहते र्वा नीः परस्तस्यैषा भवति(७,४,१)"इति ॥२०॥

হে অগ্নিদেব ! তুমি যজ্ঞের মধ্যে প্রথমেই স্থাপিত হইয়া থাক, তুমি না থাকিলে হোমকার্য্য নিষ্পন্নই হইত না, অতএব তুমিই যাগরত্নের পোষক—তোমাকে স্তব করি ॥ ২০

अथ पंचमी।

त्रिष्टुभावामदेवोऽग्नीदग्निं तेमन्वतेति च।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १
तेमन्वतप्रथमन्नामगोनांत्रिःसप्तप

२ ३ १ र २ र १ २ ३ २ क २र
रमन्नामजानन्। ताजानतीरभ्यनूष

३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
तच्चाआविर्भुवन्नरुणीर्यशसागावः* ॥२१॥

---

*"ताजानतीरभ्यनूषतच्चाआविर्भुवन्नरुणीर्यशसागावः"—इति छन्दोगाः। "ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिःसप्त परमं नाम जानन्। ता जानती रभ्यनूषत च्चा आविर्भुवन् धेनोस्त्रिः परमाणि विन्दन्। तज्जानती रभ्यनूषत च्चा आविर्भुव दरुणी र्यशसा गोः" —इति बह्वृचाः।

হে ‘অগ্নে!’ ‘তে’ স্তোত্রং কুর্ব্বাণা অঙ্গিরসঃ ‘গোনাং’ গবাং বাচাং সম্বন্ধি নাম স্তুতি-সাধকং শব্দ-মাত্রং ‘প্রথমং’ পূর্ব্বম্, ‘অমন্বত’ অজানত। পশ্চাত্তস্যা বাচঃ সম্বন্ধীনি ‘ত্রিঃসপ্ত’ একবিংশতি-সংখ্যাকানি ‘পরমং’ পরমাণ্যুৎকৃষ্টানি ‘নাম’ নামানি স্তুতিসাধকানি স্তোত্রাণি (জাতাবেকবচনং। ছন্দাংসি বা, তানি চ গায়ত্র্যাদীনি জগত্যন্তানি সপ্ত, অতিজগত্যাদীনি অতিধৃত্যন্তানি সপ্ত, কৃতি-প্রভৃতীন্যুৎকৃতি-পর্য্যন্তানি সপ্ত) ‘জানন্’ অজানন্ অলভতম্ (এবং-বিধচ্ছন্দো যুক্তৈ র্মন্ত্রৈ রগ্নি মস্তুবন্নিত্যর্থঃ) ‘তাঃ’ বাচঃ ‘জানতীঃ’ সর্ব্বং জানত্যঃ ‘ঊষাঃ’ (উচ্ছিয়ন্তি গচ্ছন্ত্যুষঃ কালং প্রাপয়ন্তি তাঃ) ‘অভ্যনূষত’ অস্তুবন্। ততঃ সূর্য্যস্য ‘যশসা’ তেজসা সহ ‘অরুণীঃ’ অরুণবর্ণাঃ ‘গাবঃ’ ‘আবির্ভুবন্’ প্রাদুরভূবন্। (যদ্বা ‘তে’ অঙ্গিরসঃ ‘প্রথমং’ পুরাতনং ‘নাম’ এহি সুরভি-গুগ্‌গুলু-গন্ধিনীতি ধেনু-নামধেয়ম্ ‘অমন্বত’ উচ্চারয়ামাসুঃ। পশ্চাৎ স্ব-ভূতানি পণিভিরপহৃতানি ত্রিঃসপ্ত-রত্নান্যবিন্দন্। তত উচ্চারিতং জানন্ত্যো ‘গাবঃ’ ‘অভ্যনূষত’ হম্বারব-লক্ষণং শব্দমকুর্ব্বত। তদানী মুষাঃ প্রাদুরভূদিতি ।।২১।।

সেই পূর্ব্বতন ঋষিগণ, সর্ব্ব প্রথমে একমাত্র ব্রহ্মনাম বা একমাত্র প্রণবাক্ষর জানিতেন, পরে ক্রমে একবিংশতি প্রকার ছন্দে নিবদ্ধ উৎকৃষ্ট বেদগ্রন্থ লাভ করেন, তাহা অবগত হইয়া অবধি পৃথিবীতে আস্তিক্য ও উপাসনা প্রবৃত্ত হয়, তখন তাঁহাদের নিকটে সর্ব্ব প্রথমে সূর্য্যদেবের এই তেজঃপুঞ্জ আরক্তিম দীপ্তিই উপাসনার একমাত্র অবলম্বন বলিয়া প্রকাশিত হইয়াছিল॥ ২১

अथ षष्ठी।

इतीयं त्रिष्टुबाग्नेयी दृष्टा गृत्समदेन सा ॥

३ १र　२र　३ १　२ ३ २ ३ २
समन्यायन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं
क २र　३　३ १ २
नद्यस्पृणन्ति। तमूशुचिंशुचयोदी
३ १　२ ३ १र　२र३१ २ ३ १ २
दिवाꣳसमपान्नपातमुपयन्त्यापः* ॥२२॥

'अन्याः' वर्षाणाम् 'आपः' 'संयन्ति' भूम्यां सङ्गच्छन्ते 'अन्या' श्च 'पूर्वं' तत्रावस्थिताः 'उपयन्ति' उपगच्छन्ति। ताः सर्वा आपः 'समानं' सह 'नद्यो' नदी भूत्वा 'ऊर्वं' समुद्रमध्ये वर्तमानं वडवानलं 'पृणन्ति' प्रीणयन्ति (पृण प्रीणने तौदादिकः) 'तम्' तमेव 'अपान्नपातम्' 'शुचिं' निर्मलं 'दीदिवांसं' दीप्यमानं [दीदिवेति छान्दसो दीप्तिकर्मा लिटः क्वसुः। वस्वेकाजाद्घसा मिति नियमा दड़भावः। छन्दसीवेति वक्तव्य मिति वचनाद्द्विवचनाभावः। एवं भूतं] 'शुचयः' शुद्धाः 'आपः' 'उपयन्ति' समीपे गच्छन्ति ॥

एष हि वैद्युताग्निरूपेण मेघे वर्तमानोऽस्मान् अजीजनदिति बुध्वा वडवानलरूपेण वर्तमानं तं पर्युपासत इत्यर्थः। यद्वा

---

* "अपान्नपातमुपयन्त्यापः"—"परितस्थुरापः"-इति साम्नऋचः पाठ-भेदः ॥

अन्या एकधनाख्या आपः संयन्ति। चात्वालोत्करयो र्मध्ये वसतीवरीभिः सङ्गच्छन्ते। अन्या वसतीवर्याख्या आपश्च उपयंति उपगच्छन्ति एकमत्यं प्राप्ता भवन्ति। एताश्च मिलित्वा यज्ञं साधयन्त्यः तत्साध्य-वृष्टि-द्वारा नद्यो भूत्वा ऊर्वं पृणन्तीत्यादि समानम्। एवं हि आपो वा अस्पर्द्धन्त वयं पूर्वं यज्ञं वक्ष्याम इत्यादिको बह्वृच-ब्राह्मण-विनियोगश्चानुसन्धेयः॥ २२॥

উদক সকল, নভোমণ্ডল হইতে একরূপ বৃষ্ট হইতে দেখা যায়, এই ধরণীমণ্ডলের সমতল (ক্ষেত্রাদি) ভূমিতে অপর আকারে সঞ্চলিত হইয়া থাকে। নদী সকল সমুদ্রে গমন করে; সেই সমিভ্যারে এই পবিত্র নির্ম্মল জল সকলও সেই পবিত্র দেদীপ্যমান পয়োধিতে গমন করিয়া থাকে॥২২

अथ सप्तमी।

अस्या दनुष्टुभा रात्रिं वामदेव ऋचानया॥

१र २र३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र
आप्रागाद्भद्रायुवतिरह्नःकेतूंत्समीर्त्सति।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभूद्भद्रानिवेशनीविश्वस्यजगतोरात्री॥ २३॥

'भद्रा' सूर्यप्रकाशसन्तापं निवारयन्ती सुखकरी 'युवतिः' तमसो मिश्रयित्री 'रात्रिः' 'आ प्रागात्' आभिमुख्येन प्रगच्छति। 'अह्न' श्चन्द्रमसः 'केतून्' रश्मीन् 'समीर्त्सति' सम्यक्प्रेरयितु मिच्छति च। अतएव 'भद्रा' कल्याणी रात्री 'विश्वस्य' सर्व्वस्य 'जगतः' 'निवेशनी' निवेशकारिणी

'अभूत्' भवति। (अहनि स्वस्वव्यापारात् खिन्नान् सर्वप्राणिनः स्वाश्रयेषु स्वापयतीत्यर्थः ॥ २३ ॥

দিবসের প্রভা গোপনকারিণী, কল্যাণরূপা, চির যুবতি, রাত্রি প্রতিনিয়ত আগমন করিতেছেন। এই কল্যাণী সমস্ত জগতের বিশ্রাম দায়িনী হইয়াছেন ॥২৩

अथ अष्टमी ॥

वैश्वानरं जगत्या स्तौइरद्वाजो वार्हस्पत्यः ॥

३ २ ३ १ २　३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
प्रक्षस्यवृष्णोअरुषस्यनूमहः प्रनोवचो

३ १ २ ३ १ २　३　१ २ ३ १र
विदथाजातवेदसे। वैश्वानरायमतिर्न

२र ३ २ ३ १ २　३ १ २ ३ १ २
व्यसेशुचिः सोमइवपवतेचरुरग्नये* ॥ २४ ॥

'प्रक्षस्य' संपृक्तस्य व्याप्तस्य (यद्वा पृक्षं हविर्लक्षण मन्नं तद्वतः) 'वृष्णः' सेक्तुः 'अरुषस्य' आरोचमानस्य 'वैश्वानराय'[१] 'महः' पूजायुक्तं बलं तेजो वा 'नु' क्षिप्रं स्तौमि। अतएव 'नो' अस्मदीयं 'वचो'

* "प्रक्षस्य"—"पृक्षसा"-इति, "महः"-"सहः"-इति, "प्रनोवोचः"-"प्र नु वोचम्"-इति, "जातवेदसे"-"जातवेदसः"-इति, "नव्यसे"-"नव्यसि'-इति च साम्नक्चः पाठ-भेदः ॥

१—वैश्वानरः कस्माद् विश्वान् नरान् नयति इत्यादि नि ७,२१ ॥

বচনং 'বিদথে' যাগে 'প্রযচ্ছতি' স্তৌতীত্যর্থঃ। 'জাতবেদসে' জাতপ্রজ্ঞায় জাতধনায় বা তমুদ্দিশ্যেত্যর্থঃ। (উক্তমেব প্রকারা ন্তরেণাদরাদাহ) 'নব্যসে' নবতরায় 'বৈশ্বানরায়' 'অগ্নয়ে' 'শুচিঃ' নির্ম্মলা স্তোতৃণাং শোধয়িত্রী বা। 'চারুঃ' কল্যাণী 'মতিঃ' মননীয়া স্তুতিশ্চ 'পবতে' মৎসকাশাৎ প্রভবতি স্বয়মেব গচ্ছতী ত্যর্থঃ। 'সোমইব' যথা সোমো দশাপবিত্রাৎ স্রবতি তদ্বদিত্যর্থঃ॥২৪

চরাচরে ব্যাপ্ত ও যথাপ্রার্থিত ফলবর্ষী, সর্ব্বত্র দেদীপ্যমান সেই দেবতার তেজ আমাদিগের বাক্য অবগত হউক। পবিত্র অগ্নির নিমিত্ত শোধিত সোমের ন্যায়—পবিত্র, আমাদের মতি, চিরমভিনব ও জাতপ্রাজ্ঞ, সর্ব্বনিয়ন্তার জন্য হউক ॥২৪

অথ নবমী।

এষা ত্রিষ্টুব্ বৈশ্বদেবী ভরদ্বাজেন দৃষ্টা চোদিতা॥

১ ২ ৩ ১র ২র ৩ ২ ৩ ১র ২র ৩ ১র
বিশ্বেদেবামমশৃণ্বন্তুযজ্ঞ[*]মুভেরোদসীঅপান্ন

২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
পাত্মমন্ম। মাবোবচাংসিপরিচক্ষ্যাণি

৩ ২উ ৩ ১ ২
বোচংসুম্নেষ্বিদ্বোঅন্তমামদেম ॥ ২৫ ॥

'বিশ্বে' সর্ব্বে 'দেবাঃ' 'মম' মদীয়ং 'মন্মঃ' মননীয়ং 'যজ্ঞং'

---

[*] "যজ্ঞং"—"যজ্ঞিয়াঃ"-ইতি পাঠো।

यजनीयं पूजां हवींषि वा 'शृखन्तु' गच्छन्त्वित्यर्थः। 'अपान्न-पात्' मध्यस्थानोऽग्निश्च 'उभे रोदसी' द्यावा-पृथिव्यौ अस्मदीयं स्तोत्रं शृखन्तु चित्ते अवधारयन्तु।

अथ प्रत्यक्ष-कृताः।—हे 'देवाः'! 'वः' युष्माकं 'परिच-क्षाणि' परिवर्जनीयानि यानि 'वचांसि' स्तोत्राणि 'मा वोचं' न ब्रवीमि। अपितु समीचीनानीति। अतः, वो युष्माकम् 'अन्तमाः' अन्तिकतमाः सन्तो वयं 'सुम्नेष्वित्' युष्माभिर्दत्तेषु सुखेष्वेव वर्तमानाः 'मदेम' मोदेम ॥ २५ ॥

এই ভূলোক, দ্যুলোক এবং অন্তরীক্ষলোকে বর্ত্তমান সমস্ত দেবগণ আমার মাননীয় প্রতিজ্ঞা শ্রবণ করুন। 'হে দেবগণ! আমি তোমাদের অহিতকর বাক্যও প্রয়োগ করিব না, তোমাদের সুখে সুখজ্ঞান করিয়া চিরদিন সুখে কাল যাপন করিব' ॥২৫

अथ दशमी।

वामदेवो महापङ्‌क्त्या स्तौति लिङ्गोक्तदेवताः॥

१ २　३ १　२　३ १र २र　　　३ २
यशोमाद्यावापृथिवीयशोमेन्द्रबृहस्पती।

३ १ २　　　३ १ २ ३ १ २
यशोभगस्यविन्दतुयशोमाप्रतिमुच्यताम्।

३　२　　२　३　२३ १ २　३ १ २
यशस्वा३ऽस्याःसꣳसदोऽहंप्रवदितास्याम् ॥२६॥

'द्यावापृथिवी' द्यावापृथिव्यौ 'यशः' 'मा' स्तोतारम् 'आवि-

ন্দতু' লভতাং প্রাপ্নোত্বিত্যর্থঃ। কিঞ্চ, 'ইন্দ্রবৃহস্পতী'' ইন্দ্রাবৃহস্পত্যোঃ 'যশো' 'মা' মাং বিন্দতু। কিঞ্চ, 'ভগস্য' আদিত্যস্য 'যশো, মা' মাং বিন্দতু। বহুলেন যশসা যশো ময়া 'মা প্রতিমুচ্যতাং' ন প্রমুচ্যতাম্। 'যশস্তস্যাঃ' অস্যাঃ মম 'সংসদঃ' সমূহস্য 'যশো' ন প্রমুচ্যতাম্। 'অহং' প্রবদিতা সর্ব্বত্র প্রবক্তা 'স্যাম্' ভূয়াসম্ ॥২৬॥

এই দ্যাবা পৃথিবীর যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই ইন্দ্র ও বৃহস্পতির যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই সূর্য্যের যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই আমার সভা হইতে কখন যেন যশ বিদূরিত না হয়—আমি প্রকৃত যশস্বী হইবার অভিলাষে এইরূপ প্রার্থনা করি ॥২৬

অথ একাদশী ॥

দৃষ্টা হিরণ্যস্তূপেন ত্রিষ্টুবৈন্দ্রদেবতা ॥

১ ২ ৩ ২ক ২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
ইন্দ্রস্যনুবীর্য্যাণিপ্রবোচংযানিচকার
৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
প্রথমানিবজ্রী। অহন্নহিমন্বপস্ত
৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
স্তর্দ্দপ্রবক্ষণাঅভিনৎপর্ব্বতানাম্ ॥২৭॥

'বজ্রী' বজ্রযুক্তইন্দ্রঃ 'প্রথমানি' পূর্ব্বসিদ্ধানি মুখ্যানি বা 'যানি' 'বীর্য্যাণি' পরাক্রমযুক্তানি 'কর্ম্মাণি' চকার। তস্য 'ইন্দ্রস্য' তানি বীর্য্যাণি। 'নু' ক্ষিপ্রং 'প্রবোচং' প্রব্রবীমি। কানি বীর্য্যাণীতি?

तदुच्यते—'अहिं' मेघम् 'अहन्' हतवान्। तदेतदेकं वीर्यम्। 'अनु' पश्चाद् 'अपो' जलानि 'ततर्द' हिंसितवान् भूमौ पातितवानित्यर्थः। इदं द्वितीयं वीर्यम्। 'पर्वतानां' सम्बन्धिनीः 'वक्षणाः' प्रवहणशीला नदीः 'ाभिनत्'। कूलद्वयकर्षणेन प्रवाहितवानित्यर्थः। इदं तृतीयं वीर्यम् ॥ २७ ॥

ইন্দ্র বজ্র ধারণ করিয়া মুখ্য যে কয়েকটি কর্ম্ম করেন, তাহা বলি—প্রথম মেঘকে তাড়ন করেন ; পশ্চাৎ ভূমিতে বৃষ্টি ধারা পাতন করেন ; তাহার পরে সেই সমস্ত জল পর্ব্বতবৃন্দ হইতে নদী রূপে প্রবাহিত করিতে থাকেন ॥২৭

अथ द्वादशी।

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दस्त्वग्निरिति द्वयीः ॥
उत्तराग्नेः स्तुतिः पूर्वा स्तुतिः सर्व्वात्मनात्मनः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
अग्निरस्मिजन्मनाजातवेदाघृतंमेचक्षु
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २
रमृतंमआसन्। त्रिधातुरर्कोरजसो
३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
विमानोऽजस्रं*ज्योतिर्हविरस्मिसर्वं ॥२८॥

साक्षात्कृत-परतत्त्व-स्वरूपोऽग्निः स्वात्मनः सर्व्वात्मनः सर्व्वात्मकत्वानुभवम् अस्यां ऋचि आविष्करोति—

हे कुशिकाः! भोक्तृ-भोग्य-भावेन द्विविधम् इदं सर्वं जगत्।

* "अजस्रं"-"घर्मः"-इति साम्नऋचः पाठ-भेदः॥

"एतावद्वा इदमन्नं चैवान्नादश्च सोम एवान्नमग्नि रन्नादः"-इति श्रुतेः। तत्र सकल-भोक्तृ-वर्ग-रूपेणान्नादोऽग्निः। स च अग्नि-वाय्वादित्य-भेदेन त्रेधा भूत्वा पृथिव्यन्तरिक्ष-द्युलोकानधितिष्ठति। तदुक्तं वाजसनेयके—"स त्रेधात्मानं व्यकुरुतादित्यं द्वितीयं वायुं तृतीय" मिति।

तत्र सोऽग्निः अहं 'जन्मना' एव 'जातवेदाः' 'अस्मि' श्रवण-मननादि-साधन-नैरपेक्ष्येण स्वभावतएव साक्षात्कृत-पर-तत्त्व-स्वरूपोऽस्मि। 'घृतं मे चक्षुः' यदेतद्विश्वस्यावभासकं मम स्वभाव-भूतम्प्रकाशात्मकं चक्षुः तद्घृतम् इदानी मत्यन्त-दीप्तम्। यदेतद् अमृतं कर्म-फलं दिव्यादि-विविध-विषयोपभोगात्मकं तन्मे मम आसन्नास्ये वर्त्तते। सकल-भोक्तृ-वर्गात्मना स्वयमेवावस्थानात्। (एवं स्वात्मनः पृथिव्यधिष्ठातृ-रूपता-मभिधाय वाय्वात्मनान्त-रिक्षाधिष्ठातृता माह—) अर्कों जगतः स्रष्टा प्राणः। "सोर्चन्न चरत्तस्यार्चत आपो जायन्तार्चतैव मेकमभूदिति तदेवार्कस्यार्कत्व मिति श्रुतेः। स प्राणः अहं त्रिधातुः त्रिधात्मानं विभज्य तत्र वाय्वात्मना 'रजसः' ऽन्तरिक्षस्य 'विमानः' विमाता अधिष्टा-तास्मि। (तथा आदित्यरूपेण द्युलोकाधिष्ठातृतामाह—) 'अजस्रं ज्योतिः' अनुपक्षीणं नित्यं तेजः प्रकाशात्मा द्युलोकाधिष्ठाता आदित्योऽप्यहमस्मि। (एवं भोक्तृ-रूपता मात्मनोनुसन्धाय भोग्य-रूपता मप्यनुसन्धत्ते। यद्धविर्भोग्यं प्रसिद्ध मस्ति तत्सर्व मप्यहमेवास्मि॥

यद्वा। अहं 'मग्नि रस्मि देवानां' हविः-प्रापणात् अङ्गनादि-गुण-युक्तोऽस्मि। किञ्च, 'जन्मना' उत्पत्त्या 'जातवेदाः' जात-ज्ञानोऽस्मि। उत्पत्ति-क्षण एव सर्वज्ञोऽह मस्मि। अथवा जातं सर्वं स्वात्मतया वेत्तीति जातवेदाः सर्वात्मकइत्यर्थः। तत् कथम्? इत्युच्यते—'घृतं मे चक्षुः यदेतद् घृतं प्रसिद्धमस्ति तन्मे चक्षुः-स्थानीयम्, यथालोके चक्षुर्भासकम् एवं घृत-

मपि प्रक्षिप्तं ज्वालामुत्पादयत मम भासकम्। 'अमृतं' प्रभा-रूपं। यदमृत मविनाशि ज्योतिः 'मे' मम 'आसन्' आस्ये वर्त्तते। 'त्रिधातुः' प्राणापानव्यानात्मकस्त्रिधा वर्तमानोऽर्कोऽर्चनीयो यः प्राणोऽस्ति सोऽप्यहमेवास्मि। तथा 'रजसः' अन्तरिक्षस्य 'वि-मानः' विशेषेण माता परिच्छेत्ता वायुश्चाह मस्मि। किञ्च। 'अजस्रं ज्योतिः' नैरन्तर्य्येण तापकः सूर्य्यश्चाह मस्मि। किं बहुना। आज्य-पुरोडाशादि-रूपं यदेतद्धवि रस्ति तदुपलक्षितं तत्सर्व्व मप्यह मस्मि ("सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति श्रुतेः) तमनेनाधाग्नेः सर्व्वा-त्मकत्व-प्रतिपादनेन परब्रह्मत्त्व मुक्तं भवति ॥२८

ইহার অর্থ স্পষ্টরূপে বুঝিতে পারিলাম না ॥২৮

अथ त्रयोदशी।

३ २ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १र
पात्यग्निर्विपो अग्रं* पदं वेःपातियह्व

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
श्चरणꣳसूर्य्यस्य। पातिनाभासप्तशीर्षा-

३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
णमग्निःपातिदेवानामुपमादमृष्वः॥ २९ ॥

'अग्निः' 'वेः' गन्तुः सर्व्वत्र व्याप्तायाः 'विपः' रिपः भूम्याः 'अग्रं' मुख्यं 'पदं' स्थानं "'पाति' रक्षति। 'यह्वः' महान् अग्निः 'सूर्य्यस्य' 'चरणं' चरत्यनेनेति चरण मन्तरिक्षं 'पाति'। 'नाभा' नाभौ अन्तरिक्षस्य मध्ये 'सप्त शीर्षाणं' सप्तगणं मरुद्गणं 'पाति'। 'ऋष्वः' दर्शनीयोऽयम् 'अग्निः' 'देवानाम्' 'उपमादम्' उपमादकं यज्ञं 'पाति' रक्षति ॥२९

* "पात्यग्निर्विपो अग्रं"-"पाति प्रियं रिपो अग्रम्"-इति पाठो।

অগ্নি এই প্রথিত পৃথিবীর মুখ্য পদ রক্ষা করেন। অগ্নি সূর্য্যরূপে অন্তরীক্ষের উর্দ্ধভাগের মুখ্য পদ রক্ষা করেন। অগ্নি সপ্তশীর্ষ হইয়া বায়ুর সহিত মিলন ভাবে (বিদ্যুদাদি রূপে) মধ্য স্থানের মুখ্য পদ রক্ষা করেন। এই দর্শনীয় অগ্নি দেবগণের আমোদ-স্থান (যজ্ঞ) রক্ষা করেন ॥২৯

इति तृतीयः खण्डः।

———०-ঃ-०———

अथ—चतुर्थखण्डि—

सैषा प्रथमा।

वामदेवऋषिः पंक्तिर्भ्राजंत्यग्नइति द्वयीः।

आग्नेयी प्रथमर्त्तव्या द्वितीया इन्द्रते तयोः॥

१ २ ३ १ २ ३
भ्राजंत्यग्नेसमिध्यानदीदिवोजिह्वाचरत्यं
२ ३ १ २ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र
तरासनि। सत्वंनोअग्नेपयसावसुविद्रयिं
२र ३ १ २
वर्चोदृशेदाः॥ ३०॥

'समिधान' ऋत्विग्भिः समिध्यमान! दीप्त! हे 'अग्ने'! 'भ्राजन्ती' प्रकाशमाना 'आसनि' आस्ये 'अन्तर्, मध्ये स्थिता त्वदीया 'जिह्वा' हवींषि 'चरति' भक्षयति। हे 'अग्ने'! 'वसुवित्'! धनलम्भक! त्वं 'नः' अस्मभ्यं 'पयसा' अन्नेन सह 'रयिं' रमणीयं धनं 'दृशे' दर्शनाय 'वर्चः' तेजश्च तेजस्वित्वं वा 'अदाः' देहि॥३०

হে প্রদীপ্ত অগ্নে! তোমার এই প্রকাশমান আস্যে শিখা রূপে দেদীপ্যমান জিহ্বা হবি গ্রহণ করিতেছে; হে অভীষ্ট-দ অগ্নে! তুমি আমাদিগকে অন্ন ও তাহার সহিত অন্যান্য রম-ণীয় ধন প্রদান কর অপিচ আমাদের তেজস্বিতা পরিবর্দ্ধিত কর ॥৩০

অথ দ্বিতীয়া।

३ १र २र ३ १र २र ३ १र २र
वसंतइन्नुरंत्यो ग्रीष्मइन्नुरंत्यः। वर्षाण्यनु
३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र
शरदोहेमंतःशिशिरइन्नुरंत्यः ॥ ३१ ॥

'वसन्तः इन्नु' वसन्तएव चैत्र-वैशाखरूपवसन्त ऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः भवति। 'ग्रीष्मइन्नु'ज्येष्ठाषाढ़रूपी ग्रीष्मऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः। 'वर्षाणि' वर्षा श्रावण-भाद्रपदरूपेणावयवी-भूतः प्रावृट् ऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः। 'तान्यनु' 'शरदः' आ-श्विनकार्त्तिकरूपेणावयवीभूतऋतुः 'रन्त्यः' रमणीयः। 'हेमन्तः' मार्गशीर्ष-पौषरूपएव रन्त्यः' रमणीयः। 'शिशिरइन्नु' माघ-फा-ल्गुनरूपएव 'रन्त्यः' रमणीयः ॥३१

বসন্ত ঋতুই অতি রমণীয়, গ্রীষ্ম ঋতুই অতি রমণীয়, বর্ষা ঋতুই অতি রমণীয়, অনন্তর আগত শরৎ ঋতুই অতি রমণীয়, হেমন্ত ঋতুই রমণীয়, শিশির ঋতুই রমণীয়, (এতাবতা দেশ ভেদে, পাত্র ভেদে সকল ঋতুই রমণীয়, কেহই নিন্দনীয় নহে)॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १र २
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सभूमिꣳसर्वतो* वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ ३२॥

सर्व-प्राणि-समष्टि-रूपो ब्रह्माण्ड-देहो विराड़ाख्यो यः पुरुषः सोऽयं 'सहस्रशीर्षाः' (सहस्र-शब्दस्योपलक्षणत्वात्) अनन्तैः शिरोभिर्युक्तइत्यर्थः। यानि सर्व-प्राणिनां शिरांसि तानि सर्वाणि तद्देहान्तःपातित्वात्तदीयान्येवेति सहस्र-शीर्षत्वम्। एवं सहस्राक्षत्वं सहस्रपादत्वं च। सपुरुषो 'भूमिं' ब्रह्माण्ड-गोलक-रूपां सर्वतः 'आ' समन्तात् 'वृत्वा' परिवेष्ट्य दशाङ्गुल-परिमितं देशम् 'अत्यतिष्ठत्' अतिक्रम्य व्यवस्थितः। (दशाङ्गुलमित्युपलक्षणं) ब्रह्माण्डाद्बहिरपि सर्वतो व्याप्यावस्थितइत्यर्थः॥३२

সেই পুরুষ—অনন্ত মস্তকে বিশিষ্ট, অনন্ত চক্ষু বিশিষ্ট, ব্রহ্মাণ্ড গোলকান্তর্ব্বর্ত্তী সমস্ত ভূমি ব্যাপিয়া দশাঙ্গুল পরিধির বহির্দ্দেশেও রহিয়াছেন॥৩২

अथ चतुर्थी॥

३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः।
३ १ क २र ३ २ ३ २
तथा विष्वङ्व्यक्रामदशनानशनेअभि †॥३४॥

* "विश्वतो"-इति ऋ०।

† "ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि" ऋ०।

योऽयं 'त्रिपात् पुरुषः' संसार-स्पर्श-रहितः बहुल-स्वरूपः सोऽयम् 'ऊर्ध्वउदैत्' अस्मादज्ञान-कार्य्यात्संसाराद्बहिर्भूतः सन् तत्रत्यैर्गुणदोषै रस्पृष्टः उत्कर्षेण स्थितवान्। 'अस्य' योयं 'पादः' लेशः सोऽय मिह मायायां पुनरभवत्। सृष्टि-संहाराभ्यां पुनः पुनः रागच्छदिति (अस्य सर्वस्य जगतः परमात्म-लेशत्वं भगवताप्युक्तं—"विष्टभ्याह मिदं कृत्स्न मेकांशेन स्थितो जगदिति") तथा मायाया मागत्यानन्तरं 'विष्वङ्' देव-तिर्य्यगादि-रूपेण विविधः सन् 'व्यक्रामत्' व्याप्तवान्। किं कृत्वा ? 'अशनानशने' अभिलक्ष्य अशनं भोजनादि-व्यवहारोपेतं चेतनं प्राणि-जातम्, अनशनं तद्रहित मचेतनं गिरि-नद्यादिकम्। तदुभयथा यथा स्यात्तथा। अय मेव विविधो भूत्वा व्याप्तवानित्यर्थः ॥३३

এই ত্রিপাৎ পূরুষ, অজ্ঞান কার্য্য সংসারের ঊর্দ্ধে অর্থাৎ বাহিরে আছেন, কিন্তু এই সংসারেরও তাঁহার অংশ আছে, এবং তিনিই চেতন, অচেতন বিবিধ রূপে বর্ত্তমান রহিয়াছেন ॥৩৩

अथ पञ्चमी।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २उ ३ १ २
पुरुष * एवेदꣳसर्वं यद्भूतंयच्चभाव्याम् †।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
पादोस्यसर्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि ‡॥३५॥

* "पुरुएवेदं"—† "यच्च भव्यम्"—‡ "उतामृतत्वेत्यादि" ऋ०।

यत् 'इदं' वर्त्तमानं जगत् तत् 'सर्वं' 'पुरुषएव'। 'यद्भूतम्' उत्पन्नं जगत् 'यच्च भाव्यं' भविष्यज्जगत् तदपि पुरुषएव। यथास्मिन् काले वर्त्तमानाः प्राणिनः सर्वेऽपि चराचरात्मक-पुरुषस्यावयवाः तथैव गतागामिनो ऽपि कल्पयोर्द्रष्टव्य मित्यभिप्रायः। एतदेवोभयं स्पष्टीक्रियते—'अस्य' पुरुषस्य 'सर्वाणि भूतानि' काल-त्रय-वर्त्तीनि प्राणि-जातानि 'पादः' चतुर्थोंऽशः। 'अस्य' पुरुषस्यावशिष्टं 'त्रिपात्' स्वरूपम् 'अमृतं' 'विनाश-रहितं' सत् 'दिवि' द्योतनात्मके स्व-प्रकाश-स्वरूपे व्यवतिष्ठतइति शेषः। (यद्यपि "सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म"-इत्यनन्तस्य परब्रह्मणो-ह्यीयदल्पत्वाभावात् पादचतुष्टयं निरुपयितु मशक्यं, तथापि जगदिदं ब्रह्म-स्वरूपापेक्षया अल्पमिति विवक्षित्वात् पादत्वो-पचारः॥३४

যাহা কিছু উৎপন্ন হইয়াছে ও যাহা কিছু উৎপন্ন হইবে—এই সমস্তই সেই পুরুষ, এই বিনশ্বর জগৎ এই ত্রিপাৎ পুরুষের এক অংশ অথচ তিনি দ্যু-লোকে অবিনশ্বর পূর্ণ স্বরূপে বিরাজমান আছেন॥৩৪

अथ षष्ठी।

१ २ २ २उ ३ १ २ ३ १ २
तावानस्य * महिमाततो † ज्यायाᳬंश्चपूरुषः ‡।
३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १ २
उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥ ३६॥

* "एतावानस्य"—† "अतोज्यायांश्च"—‡ "पादोऽस्येत्यादि" ऋ०।

अतीतानागतवर्तमान-रूप-जगदाद्याधारो योऽस्ति 'तावान्' सर्वोऽपि 'अस्य' पुरुषस्य 'महिमा' स्वकीय-सामर्थ्य-विशेषः। न तु तस्य वास्तवं स्वरूपं। वास्तवस्तु 'पुरुषः' 'ततो' महिम्नोऽपि 'ज्यायान्' अतिशयेनाधिकइत्यर्थः। 'उत' अपिच 'अमृतत्वस्य' देवत्वस्य 'अयम् ईशानः' स्वमायया 'यत्' यस्मात्कारणात् 'अन्नेन' प्राणिनां भोग्येन अन्नेन निमित्त-भूतेन 'अतिरोहति' स्वकीयां कारणावस्था मतिक्रम्य परिदृश्यमान-जगदवस्थां प्राप्नोति। तस्मात् प्राणिनां कर्म्म-फल-भोगाय जगदवस्था-स्वीकारात् नेदन्तस्य वस्तु-तत्व मित्यर्थः ॥३५

উক্ত সমস্তই ইহাঁর মাহাত্ম্য, অপিচ যেহেতু ইনি ভোগ্য বস্তুর অনুরোধে স্বীয় স্বরূপ অতিক্রম করিয়া জীবত্ব আরোহণ করেন অথচ সমস্ত অবিনশ্বরের ঈশ্বর অতএব বর্ণিত-স্বরূপ হইতেও অতিশয় শ্রেষ্ঠ ॥৩৫

अथ सप्तमी।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ततो * विराडजायतविराजोअधिपूरुषः।
२ १र २र ३ २उ ३ १ २ ३ २
सजातोअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ३७ ॥

"विष्वङ् व्यक्रामत्"-इति यदुक्तं तदेवात्र प्रपञ्चयति—'ततः' तस्मादादि-पुरुषात् 'विराट्' ब्रह्माण्ड-देहः 'अजायत' उत्पन्नः।

* " तस्माद् " ऋ०।

(विविधानि राजन्ते वस्तून्यत्रेति विराट्) 'विराजो अधि' विराड्देहस्योपरि तमेव देहमधिकरणं कृत्वा 'पुरुषः' तद्देहाभिमानी कश्चित्पुमानजायत। योऽयं सर्व्व-वेदान्त-वेद्यः परमात्मा सएव स्वकीयया मायया विराड्देहं ब्रह्माण्ड-रूपं सृष्ट्वा तत्र जीव-रूपेण प्रविश्य ब्रह्माण्डाभिमानी देवतात्मा जीवोऽभवत् (एतच्चाथर्व्वणिकउत्तरतापनीये विस्पष्टमामनन्ति—"स वा एष भूतानीन्द्रियाणि विराजं देवताः कोशांश्च सृष्ट्वा प्रविश्य मूढोमूढइव व्यवहरन्नास्ते माययैवेति)। 'स जातः' विराट् पुरुषः 'अत्यरिच्यत' अतिरिक्तोऽभूत्। विराड्व्यतिरिक्तो देवतिर्य्यङ्मनुष्यादिरूपोऽभवत्। पश्चाद्देवादि-जीव-भावात्पूर्व्वं भूमिं ससर्ज्जेति शेषः। 'अथो' भूमि-सृष्टेरनन्तरं तेषां जीवानां 'पुरः' ससर्ज [पूर्य्यन्ते सप्तभि र्धातुभि रिति पुरः] शरीराणि ॥३६

সেই পুরুষরূপ কারণ হইতে বিরাট্ অর্থাৎ ব্রহ্মাণ্ড দেহাভিমানী জীব পুরুষ হইয়াছেন, সেই জীব পুরুষ উৎপন্ন মাত্রই দেব তির্য্যঙ্ মনুষ্যাদি রূপে বিরাট্ হইতে ব্যতিরিক্ত হইয়াছেন, তাহার পরে ভূম্যাদি সপ্ত ধাতু, তদনন্তর জীবাশ্রয় শরীর সকল হইয়াছে ॥৩৬

मन्येवामिति पञ्चर्चो वामदेवेन वीक्षिताः।
अत्राद्यैकान्तिमे च द्वे त्रिष्टुभस्तासु चादिमा॥
उपरिष्टाज्ज्योतिरिति बह्वृचैव विधीयते।
अन्ये अनुष्टुभौ द्यावा-पृथिव्योः प्रथमा तथा॥
द्वितीयैन्द्री चतुर्थी च तृतीयाग्नीर्निजात्मनः।
स्तुतिर्गवा मन्त्रिमेति छन्दो दैवत-निर्णयः॥

অথ অষ্টমী

বামদেবঋষিঃ। ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ। দ্যাবাপৃথিবী দেবতে।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১র ২র ৩ ১
মন্যেবাংদ্যাবাপৃথিবীসুভোজসৌযেঅপ্রথেথাম
৩ ৩ ১র ২র ১ ২ ৩ ১ ২
মিতমভিযোজনম্। দ্যাবাপৃথিবীভবতꣳ
৩ ১র ২র ৩ ১ ২
স্যোনেতেনোমুঞ্চতমꣳহসঃ॥ ৩৭ ॥

হে 'দ্যাবাপৃথিবী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ! 'বাং' যুবাং 'সুভোজসৌ' শোভনপালয়িত্র্যাবিতি 'মন্যে' অহং জানামি হে দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'অমিতম্' অপরিমিতং 'যোজনং' [যুজ্যতে পুরুষোঽনেনেতি যোজনং] ধনাদি তৎ 'অভ্যপ্রথেথাম্' অভিবিস্তারয়তম্ হে 'দ্যাবাপৃথিবী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ! যুবাং অস্মাকং 'স্যোনে' সুরূপে স্বসুখকার্যে 'ভবতম্' 'তে' দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'বঃ' অস্মান্ 'অংহসঃ' পাপাৎ 'মুঞ্চতং' 'মোচয়তম্'॥ ৩৭

আমি স্বীকার করি—এই দ্যাবা-পৃথিবী আমাদের মঙ্গলকারী, যাঁহারা অপরিমিত সম্বন্ধের বা অপরিমিত ভোগ্য বস্তুর বিস্তার করিতেছেন ; হে দ্যাবাপৃথিবী! আমাদিগের কল্যাণের জন্য আমাদিগকে পাপ হইতে মুক্ত কর॥৩৭

অথ নবমী।

অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। ইন্দ্রো দেবতা। বামদেব ঋষিঃ।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২
হরীতইন্দ্রশ্মশ্রূণ্যুতোতেহরিতৌহরী।
১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
তংত্বাস্তুবন্তিকবয়ঃপরুষাসোবনর্গবঃ॥ ৩৮॥

হে 'ইন্দ্র' 'তে' তব 'শ্মশ্রূণি' 'হরী' সোম-পানেন হরিত-বর্ণানি' [তথাচশ্রূয়তে—'ইন্দ্রঃ শ্মশ্রূণি হরিতাভি প্রষ্ণুত' ইতি। "শেশ্ছন্দসি বহুল"-মিতি হরি-শব্দাৎপরস্য শের্লুক] 'উতো' অপিচ। 'তে' 'হরী' অশ্বৌ 'হরিতৌ' হরিদ্বর্ণৌ। 'কবয়ঃ' মেধাবিনঃ 'পুরুষাসঃ' পুরুষাঃ 'বনর্গবঃ' বননীয়াঃ সম্ভজনীয়া সেবনীয়া গাবো যেষাং তে বনর্গবঃ [মধ্যরেফশ্ছান্দসঃ। গোস্ত্রিয়ো রিতিহ্রস্বত্বং] তাদৃশঃ কবয়ঃ 'তং' 'ত্বা' ত্বাং স্তুবন্তি॥ ৪৮॥

হে ইন্দ্র! যাঁহাদিগের ভাল ভাল গোধন আছে, সেই বড় বড় কবিগণ, বর্ণনা করেন—যে, হরিত বর্ণ সোম রস পান করিয়াই তোমার শ্মশ্রু সকল হরিত বর্ণ হইয়াছে এবং এই কারণেই ত্বদীয় অশ্বগণও হরিত বর্ণ॥৩৮

॥ अथ दशमी ॥

वामदेव ऋषि: । अनुष्टुप्छन्द: । आशासने विनियोज्या ।

२उ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ ३२ ३ २ ३
यद्वर्चोहिरण्यस्ययद्वावर्चोगवामुत । सत्यस्य
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्मणोवर्चस्तेनमासꣳसृजामसि ॥ ४९ ॥

'हिरण्यस्य' हित-रमणीयस्य एतन्नामकस्य 'यद्वर्च:' तेजोऽस्ति । 'यद्वा' अपिच । 'गवाम्' एतन्नामकानां 'यद्वर्च:' तेजोऽस्ति । 'उत' अपिच । 'सत्यस्य' सर्वै: सम्मतस्य 'ब्रह्मण:' यद्वर्चोऽस्ति तेन तै: 'मा' 'संसृजामसि' सम्पादयाम: । धनवन्त: पशुमन्त: श्रोत्रिया भवेमेति तात्पर्यार्थ: ॥ ४९ ॥

আমরা হিরণ্ময়ের (তেজের) সত্তা, গোসকলের (অর্থাৎ পৃথিবী, জল ও বায়ুর) সত্তা এবং সত্য স্বরূপ ব্রহ্মের সত্তায় স্পৃষ্ট হইয়াথাকি ॥ ৩৯

॥ अथ एकादशी ॥

३ १ २ ३ २ ३ २क २र १ २
सहस्तंनइन्द्रदध्योजईशेह्यस्यमहतोविरप्-
३ २ ३ ११ २र ३ १ २ ३ २ ३ १
शिन् । क्रतुन्नन्नृम्णꣳस्थविरंचवाजंवृत्रेषुशत्रू-
२ ३ १ २
न्त्सुहनाकृधीन: ॥ ४० ॥

হে ‘ বিপ্‌রশ্নন্’ ! বিশেষেণ রপণং ব্যক্ত-বচনং তদস্যাস্তীতি বিরপ্‌শী, তস্য সম্বোধনং হে বিপ্‌রশ্নন্ ! বিশেষেণ স্তোত্র-বিষয়ে সত্যবাক্য ! ‘ইন্দ্র’ ! ‘ তে’ তব ‘সহঃ’ শত্রূণামভিভবন-রূপম্ ‘ওজো’ বলং ‘নঃ’ অস্মভ্যং ‘দদ্ধি’ দেহি (দদাতেশ্ছান্দসং রূপং লোড়ি হেদ্ধিভাবাদিনা) যস্মাত্ ত্বং তস্য ‘অস্য’ ‘মহতঃ’ বলস্য ‘ইশে’ ঈশ্বরো ভবসি। অতো হে ইন্দ্র ! ‘নঃ’ অস্মাকং ‘ক্রতুং ন’ যজ্ঞমিব ‘নৃম্ণং’ ধনং ‘স্থবিরম্’ অতিশয়েন প্রবৃদ্ধং, “বাজং” বলং চ ‘ কৃধি’ কুরু। কিঞ্চ নোঽস্মাকং ‘ শত্রূন্’ ‘ বব্রেষু’ আবরকেষু উপায়েষু ‘ কৃধি’ কুরু ॥ ৪০

যাঁহার স্তুতি কার্য্যে সততই স্ফুট বাক্যের স্ফূর্ত্তি হইয়া-থাকে এতাদৃশ ! হে ইন্দ্র ! যেহেতু তুমিই সুমহৎ বলের অধিপতি অতএব আমাদিগকে ইন্দ্রিয়-দমনোপযোগি ত্বদীয় সামর্থ্য প্রদান কর । ইন্দ্র ! আমাদিগকে আবশ্যকানুযায়ি সমধিক সামর্থ্য ও ধন প্রদান কর এবং অস্মদাদির শত্রুবর্গকে আবরণের অন্তর্গত কর ॥ ৪০

॥ অথ দ্বাদশী ॥

২ ১ ২ ২ ১ ২ ২ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ২
সহর্ষভাঃ সহবৎসাউদেতবিশ্বারূপাণিবিভ্র
৩ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ৮
তীর্দ্ব্যূধ্নীঃ। উরুঃপৃথুরয়ংবো অস্তুলোকইমাঃ
২ ৮ ৩ ২ ৩ ১ ২
আপঃ সুপ্রপাণাইহস্ত ॥ ৪১ ॥

হে ‘ সহর্ষভাঃ’ বৃষভৈঃ সহিতাঃ ! ‘ সহবৎসাঃ’ বৎসৈঃ সহিতাঃ ! গাবঃ ! ‘দ্ব্যূধ্নীঃ’ সায়ং প্রাতঃ কালে দ্বিবিধান্য ধাংসি

যাসাং তা ধূম্রধী: ধূম্রঘ্ন: । ‘ বিশ্বা’ সর্বাণি নানা রূপাণি বিভ্রতী’ বিভ্রত্য: যূয়ম্ ‘উদেত’ উদ্গচ্ছত সমৃদ্ধা: সত্য:আগচ্ছত । কিঞ্চ । ‘উরু:’ বহু: ‘ পৃথু:’ বিস্তীর্ণ: (উরু: পৃথু রিতি শব্দাভ্যাম্ আয়াম-বিস্তারৌ উচ্যেতে । ‘ অয়ং লোক:’ ‘ ব:’ যুষ্মাকম্ ‘অস্তু’ ভবতু । ‘ ইমা আপ:’ ‘ইহ’ লোকে ভূতলে অস্মিংস্থানে ‘সুপ্রপাণা:’ সুখেন প্রকর্ষেণ পাতুং যোগ্যা: সন্তু তস্মাদিহ বহ্বীভূতা: ‘ স্ত’ ভবত উপবিশতেতি পূর্বেণ সম্বন্ধ: ॥ ৪১ ॥

হে অনন্তদীপ্তে ! অনন্তস্রষ্টঃ! তেজ:পুঞ্জ! তোমরা সায়ং প্রাত:কালে বিবিধ আকার ধারণ করত উদিত হইতেছ ; এই সুবিস্তীর্ণ ভূলোক তোমার কৃপাপাত্র হউক, এই লোকস্থ বায়ু বারি সমস্ত স্বাস্থ্যকর কর ॥ ৪১

ইতি চতুর্থ: খণ্ড: ।

—:-০-:—

অথ পঞ্চমে খণ্ডে—

॥ অথ প্রথমা ॥

চতুর্দশাগ্নআয়ূংষীত্যাদ্যাস্তত্র জগত্যসৌ ।
বিভ্রাট্‌চিষ্টুপ্‌চিত্রমিতি গায়ত্রী দ্বাদশীতরা: ।
আদ্যাগ্নে: পবমানস্য স্তুতি: সৌর্যস্ত্রয়োদশ ।

ঋষীণাং বিপ্রকীর্ণত্বাত্তন্ন তন্নাভিদধ্মহে ।
মতং বৈখানসা এবং দৃষ্টবন্তো মহর্ষয়ঃ ।

২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ২ ১ ২
অগ্ন আয়ূংষিপবস আসুবোর্জমিষংচনঃ।
৩ ১ ২ ৩ ১ ২
আরেবাধস্বদুচ্ছুনাম্ ॥ ৫২॥

হে ‘অগ্নে’ পবমান-রূপ! অস্মাকমায়ূংষি অন্নান্যেতন্নামকানি বা ‘পবসে’ চরসি ‘নঃ’ অস্মাকম ‘ঊর্জম্’ অন্নরসম্ ‘ইষম্’ অন্নং চ ‘আসুব’ আভিমুখ্যেন প্রেরয়। কিঞ্চ। ‘দুচ্ছুনাং’ (রক্ষোনামৈতদ্) রক্ষাংসি ‘আরে’ অস্মত্তো দূরএব ‘বাধস্ব’ সম্পীড়য় ॥ ৪২ ॥

হে অন্তরীক্ষস্থ অগ্নে! আমাদিগের আয়ু বৃদ্ধি কর এবং আমাদিগের আয়ুর উপযোগী অন্ন ও জল সুখকর কর, বিপক্ষ দলকে দূরেই দলন কর ॥ ৪২

॥ অথ দ্বিতীয়া ॥

বভ্রাণ্নামকএত-াতু সূর্য-পুত্রীদদর্শ সঃ ॥

৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২উ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩
বিভ্রাড়্‌বৃহৎপিবতুসোম্যংমধ্বায়ুর্দধদ্যজ্ঞপতা
১ ২ ১ ৩ ২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১
ববিহ্রুতম্। বাতজূতোযোঅভিরক্ষতিত্মনাপ্রজাঃ
২ ৩ ১র ২র
পিপর্ত্তিবহুধাবিরাজতি ॥ ৫৩ ॥

'বিভ্রাট্' বিভ্রাজমানঃ বিশেষেণ দীপ্যমানঃ সূর্য্যঃ 'বৃহৎ' পরিবৃঢ়ং 'সোম্যং' সোমময়ং 'মধু' পিবতু। কিং কুর্ব্বন্? 'যজ্ঞপতৌ' যজমানে 'অবিহ্রুতম্' অকুটিলম্ অকপটকম্ 'আযুর্দধত্' অন্নং বা কুর্ব্বন্। 'যঃ' সূর্য্যো 'বাতজূতঃ' বাতেন বায়ুনা প্রের্য্যমাণঃ সন্ 'ত্মনা' আত্মনা স্বয়মেব অভিরক্ষতি সর্ব্বং জগদভিম্নন্ পালয়তি(রাশি-চক্রস্য বায়ু-প্রের্য্যত্বাত্ সূর্য্যস্যাপি তৎপ্রের্য্যত্বম্) স সূর্য্যঃ 'প্রজাঃ' পিপর্ত্তি'* বৃষ্ট্যাদি-প্রদানেন পূরয়তি পালয়তি বা। 'বহুধা' 'বিরাজতি' বিশেষেণ দীপ্যতে চ। ৪৩॥

যে সূর্য্য, বায়ু-কর্ত্তৃক* চালিত হইয়া স্বয়ং এই সমস্ত জগৎ সংরক্ষণ করিতেছেন, যে সূর্য্য বৃষ্ট্যাদি প্রদান দ্বারা সমস্ত তৃষা নিবারণ করিতেছেন, যে সূর্য্য দিবসে ও নিশিতে বিভিন্ন প্রকারে আলোক দান করিতেছেন, বিশেষ রূপে প্রদীপ্ত; সেই সূর্য্য যজ্ঞকারী আমাদিগকে অকপট আয়ু প্রদান করত এই সোমীয় মধু পান করুন॥ ৪৩

॥ অথ তৃতীয়া ॥

কুৎসা।

২ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ২ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২
চিত্রংদেবানামুদগাদনীকংচক্ষুর্মিত্রস্যবরুণ-

*"পিপর্ত্তি"-"পুপোষ"-ইতি, "বহুধা" "পুরুধা" ইতি চ পাঠৌ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
स्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसू-
२ ३ १र २र ३ १ २
र्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ४४ ॥

'देवानां' दीव्यतीति देवा रश्मयः, तेषां देवानामेव वा प्रसिद्धानाम् 'अनीकं' तेजः-समूह-रूपं 'चित्रम्' आश्चर्य-करं सूर्य-मण्डलम् 'उदगात्' उदयाचलं प्रयासीत्। कीदृशं ? 'मित्रस्य वरुणस्याग्नेश्च' (चक्षुरुपलक्षणमेतत्) एतदुपलक्षितानां जगतां 'चक्षुः' प्रकाशकं चक्षुरिन्द्रियस्थानीयं वा। उदयं प्राप्यैव 'द्यावा-पृथिवी' दिवं च पृथिवीं च 'अतरिक्षं' च 'आप्राः' स्वकीयेन तेजसा 'आ' समन्तात् अपूरयत्। ईदृग्भूत-मण्डलान्तरवर्ती सूर्यः अतर्यामितया सर्वस्य प्रेरकः परमात्मा 'जगतो' जङ्गमस्य 'तस्थुषश्च' स्थावरस्य च 'आत्मा' स्वरूप-भूतः स हि सर्वस्य स्थावर-जङ्गमात्मकस्य कार्य-वर्गस्य (कारणाच्च कार्यं नातिरिच्यते। तथाच पारमर्षं सूत्रं—"तदनन्यत्वमारम्भण-शब्दादिभ्यः"-इति। यद्वा। स्थावर-जङ्गमात्मकस्य सर्व-प्राणि-जातस्य जीवात्मा। उदिते हि सूर्ये मृतप्रायं सर्वं जगत् पुनश्चेतन-युक्तं सत् उपलभ्यते! तथाच श्रूयते-"योसौ तमो नुदेति सर्वेषां भूतानां। प्राणाना-दायोदेती ति ॥ ४४ ॥

দিবারাত্রি ও অগ্নির চক্ষু স্থানীয় প্রকাশক, তেজ সমস্তের আকর স্বরূপ আশ্চর্য্যরূপ এই সূর্য্য ভূলোক দ্যুলোক এবং অন্তরীক্ষলোক স্বীয় প্রভায় পরিপূর্ণ করিয়া থাকেন। ইনি কি স্থাবর, কি জঙ্গম, সকল প্রকার প্রাণীরই জীবন ॥ ৪৪

॥ अथ चतुर्थी ॥

आयङ्गौः पृश्निरित्यस्य सार्पराज्ञी समैक्षत।
ऋचस्तिस्रोभवेदासां विकल्पे नात्मदैवता ॥

१र २र ३ १ २ ३ १ २
आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरः। पितरंचप्रयंत्स्वः ॥ ४५ ॥

'गौः' गमनशीलः 'पृश्निः' प्राष्टवर्णः व्याप्ततेजाः 'अय' सूर्यः 'आक्रमीत्' आक्रान्तवान् उदयाचलं प्राप्तवानित्यर्थः। आक्रम्य च 'पुरः' पुरस्तात् पूर्वस्यां दिशि 'मातरं' सर्वस्य भूत-जातस्य निर्मात्रीं 'भूमिम्' 'असदत्' आसीदति प्राप्नोति (सदे श्छान्दसो लेट्। लृदित्वात् च्लेरङादेशः) ततः 'पितरं' पालकं द्युलोकं, 'च' शब्दादन्तरिक्षं 'प्रयन्' प्रकर्षेण शीघ्रं गच्छन् 'स्वः' सु अरणः शोभन-गमनो भवति। यद्वा। पितरं स्वर्द्युलोकं प्रवर्त्तते ॥ ४५ ॥

এই সর্ব্বত্রগামী, প্রাষ্ঠবর্ণ, তেজঃপুঞ্জরূপী সূর্য্য সতত পূর্ব্বদিকে উদিত হইয়া থাকেন, উদিত হইয়াই ভূতসমস্তের নির্ম্মাণ-ভূমি মাতৃরূপা এই পৃথিবীকে প্রসন্না করেন এবং পিতৃরূপে সমস্ত প্রাণিবর্গের পালয়িতা দ্যুলোকেরও প্রকাশক হইয়া থাকেন ॥ ৪৫ ॥

॥ अथ पञ्चमी ॥

३ १ २ २उ ३ १ २ ३ २
अन्तश्चरतिरोचनास्यप्राणादपानती।
२उ ३ १र २र
व्यख्यन्महिषोदिवम् ॥ ४६ ॥

'अस्य' सूर्यस्य 'रोचना' रोचमाना दीप्तिरन्तःशरीर-मध्ये मुख्य-प्राणात्मना 'चरति' वर्त्तते। किं कुर्वती? 'प्राणाद-पानती' (मुख्य-प्राणस्य प्राणाद्याः पञ्च वृत्तयः। तत्र प्राणनं नाड़ीभि रूर्द्ध्वं वायो निर्गमनं) तथाविधात्प्राणात् प्राणनादनन्त-रम् अपानती (अपाननं नाड़ीभि रवाङ्मुखं वायो र्नयनं) तत्-कुर्वन्ती (अपपूर्वादनिति लटः शतृ, अदादित्वाच्छपो लुक्। उगितश्चेति ङीप्। शतुरनुमद्यति नद्याउदात्तत्वम्।

यद्वा। 'अन्तः' द्यावापृथिव्योर्मध्ये "अस्य" सूर्यस्य "रोचना" रोचमाना दीप्तिः "चरति" गच्छति (रुच दीप्तौ। अनुदात्तेतश्च हलादेरिति युच्) किंकुर्वन्ती ? "प्राणात्" प्राणनादुदयादनन्तरम् 'अपानती' सायाह्न-समये अस्तङ्गच्छन्ती। ईदृश्या दीप्त्या युक्तः) अतएव 'महिषो' महान् सूर्यः 'दिवम्' अन्तरिक्षं उदयास्तम-योर्मध्ये 'व्यख्यत्' विचष्टे प्रकाशयति (महेरचि महेष्टिषजिति औणादिकष्टिषच् प्रत्ययः। चक्षिङःख्याञ् छांदसे लुङि अस्यति-वक्तिख्यातीत्यादिना च्लेरङादेशः॥

এই সূর্য্যের প্রভা দ্যাবা পৃথিবীর মধ্য ভাগে প্রকাশিত

হইয়া অধোমুখে এই পৃথিবীকে প্রকাশ করিতেছেন অপিচ এই মহাভাগ সূর্য্যদেবই দ্যুলোকও প্রকাশ করিতেছেন ॥ ৪৬

॥ अथ षष्ठी ॥

२ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिंशद्धामविराजतिवाक्पतंगायधी

३ २ ३ २ ३ १ २
यते । प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ ४७ ॥

'त्रिंशद्धाम' धामानि स्थानानि (वचनव्यत्ययः) 'वस्तोः' वासरस्य अहोरात्रस्यावयवभूतानि । 'अह' शब्दोऽवधारणे । 'द्युभिः' सूर्यस्य दीप्तिभिरेव 'विराजति' विराजते विशेषेण दीप्यते (व्यत्ययेनैकवचनं । मुहूर्तान्यत्रधामान्युच्यन्ते । पञ्च-दशरात्रिःपञ्चदशाह्नः) 'पतङ्गाय' पतति गच्छतीति पतङ्गः सूर्यः तस्मै सूर्याय स्तुति-रूपा 'वाक्' 'प्रतिधीयते' प्रतिमुखं स्तोतृभि र्विधीयते क्रियते [यद्वा 'वस्तोः' अहः 'त्रिंशत्' 'धाम' धामानि (घटिकाभिप्रायमेतत्) त्रिंशद्घटिकाः (अत्यन्तसंयोगे द्वितीया) एतावत् कालं 'द्युभिः' दीप्तिभि रसौ सूर्यो 'विराजति विशेषेण दीप्यते । तस्मिंश्च समये 'वाक्' त्रयीरूपा तस्मै 'पतङ्गाय' 'प्रति-धीयते' प्रतिमुखं धार्यते] तं पूर्वं सेवतइत्यर्थः ॥ [श्रूयते हि "ऋग्-भिः पूर्वाह्ने दिवि देवईयते, यजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अह्नः । साम-वेदे नास्तमये महीयते वेदैरशून्यस्त्रिभिरेति सूर्यः"-इति । यदा त्विह सूक्ते सार्पराज्ञ्या आत्मस्तुतिस्तदा सूर्यात्मना स्तूयतइत्यवगन्तव्यम् ॥ ४७ ॥

পতঙ্গরূপী এই সূর্য্য স্বীয় দীপ্তিতে প্রতি দিবসকে ত্রিংশৎভাগে ভোগ করিয়া থাকেন, এতাদৃশ হিতকারী দেবতার স্তুতি-ক্রিয়ায় বাক্যপ্রয়োগ সাধুমাত্রেরই কর্ত্তব্য ॥ ৪৭

॥ অথ সপ্তমী ॥

৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
অপত্যেতায়বোযথানক্ষত্রাযন্ত্যক্তুভিঃ।

১ ২ ৩ ১ ২
সূরায়বিশ্বচক্ষসে ॥ ৪৮ ॥

'তে' 'তায়বো' 'যথা' প্রসিদ্ধাস্তস্করাইব 'নক্ষত্রাণি' দেবগেহরূপাণি ("দেবগৃহা বৈ নক্ষত্রাণি" ইতি শ্রুত্যন্তরাৎ) যদ্বা। ইহ লোকে মানুষা যে স্বর্গ মাপ্নুবন্তি তে নক্ষত্ররূপেণ দৃশ্যন্তে। তথাচ—শ্রূয়তে—'যো বা ইহ যজতে অমুং স লোকং নক্ষতে তন্নক্ষত্রাণাং নক্ষত্রত্ব' মিতি। যদ্বা, তেষাং সুকৃতিনাং জ্যোতীংষি নক্ষত্রাণ্যুচ্যন্তে। 'সুকৃতাং বা এতানি জ্যোতীংষি যন্নক্ষত্রাণী' ত্যাম্নানাৎ। যাস্কস্ত্বাহ—'নক্ষত্রাণি নক্ষতের্গতিকর্ম্মণো নেমানি ন ক্ষত্রাণীতি চ ব্রাহ্মণ' মিতি) যথাবিধানি নক্ষত্রাণি 'অক্তুভিঃ' রাত্রিভিঃ সহ 'অপযন্তি' অপগচ্ছন্তি। 'বিশ্বচক্ষসে' বিশ্বস্য সর্ব্বস্য প্রকাশকস্য 'সূরায়' সূর্য্যস্য আগমনং দৃষ্ট্বেতি শেষঃ (তস্করা নক্ষত্রাণি চ রাত্রিভিঃ সহ সূর্য্যআগমিষ্যতীত্যা-কুলায়ন্তিইত্যর্থঃ। তায়ুরিতি স্তেননাম। তায়ুস্তস্করইতিতন্নামসু পাঠাৎ। অক্তুরিতি রাত্রিনাম। শর্ব্বরীঅক্তুরিতিতন্নামসু-পাঠাৎ ॥ ৪৮ ॥

নিশাকালে নভোমণ্ডলে পরিদৃশ্যমান উড়ুগণ বিশ্বপ্রকাশক এই সূর্য্যদেবের উদয়ে তস্কর দলের ন্যায় স্বসাহায্যকারিণী নিশার সহিত প্রস্থান করেন ॥ ৪৮ ॥

॥ অথাষ্টমী ॥

১ ২ ২ ২ ২ ২ ২ ২ ২ ২ ২
অদৃশ্রন্*স্যকেতবোবিরশ্ময়োজনাঁ৩

১ ২ ১ ২ ২ ১ ২
অনু। ভ্রাজন্তোঅগ্নয়োযথা ॥ ৪৯ ॥

'অস্য' সূর্য্যস্য 'কেতবঃ' প্রজ্ঞাপকা 'রশ্ময়ো' দীপ্তয়ঃ 'জনান্-অনুঅদৃশ্রন্' জনান্ সর্ব্বান্ অনুক্রমেণ প্রেক্ষন্তি। সর্ব্বং জগৎপ্রকাশয়ন্তীত্যর্থঃ। তত্র দৃষ্টান্তঃ—'ভ্রাজন্তো' দীপ্যমানা 'অগ্নয়ইব' ॥ ৪৯ ॥

এই সূর্য্যের বিখ্যাতিকারী, জ্বলন্ত অগ্নির ন্যায় দেদীপ্যমান, এই রশ্মিপুঞ্জই সমস্ত জগৎ প্রকাশ করিতেছেন ॥ ৪৯ ॥

॥ অথ নবমী ॥

২ ১ ২ ২ ১ ২ ২ ১ ২
তরণির্বিশ্বদর্শতোজ্যোতিষ্কৃদসি

২ ১ ২ ২ ২
সূর্য্য। বিশ্বমাভাসিরোচনম্ ॥ ৫০ ॥

---

* "অদৃশ্রন্"—"অদৃশ্রম্" ইতি পাঠো ॥

हे 'सूर्य' त्वं 'तरणिः' प्रगन्ता अन्येन गन्तुमशक्यस्य महतोऽध्वनो गन्तासि (तथाच स्मर्यते—"योजनानां सहस्रे द्वे द्वे शते द्वे च योजने। एकेन निमिषार्द्धेन क्रममाण नमोस्तु ते"- इति। यद्वा। उपासकानां रोगात्तारयितासि। "आरोग्यं भास्करादिच्छे" दिति स्मरणात्) तथा 'विश्वदर्शतः' विश्वैः सर्वैः प्राणिभिर्दर्शनीयः (आदित्य-दर्शनस्य चण्डालादि-दर्शन-जनित-पाप-निबर्हण-हेतुत्वात्। तथाचापस्तम्बः—'दर्शने ज्योतिषां दर्शन' मिति। यद्वा, 'विश्वं' सर्वं भूतजातं 'दर्शतं' द्रष्टव्यं प्रकाश्यं येन स तथोक्तः) तथा 'ज्योतिष्कृत्' ज्योतिषः प्रकाशस्य कर्ता। सर्वस्य वस्तुनः प्रकाशयितेतर्थः (यद्वा। चन्द्रादीनां। रात्रौ हि अस्तमये चन्द्रादिषु सूर्य-किरणाः प्रतिफलिताः अतोन्धकारं निवारयन्ति। यथा द्वारस्य दर्पणोपरि निपतिताः सूर्यरश्मयो गृहान्तर्वर्ति तमो निवारयन्ति तद्वदितर्थः यस्मादेवं तस्मात् 'विश्वं' प्राप्तं 'रोचनं' रोचमानम् 'अन्तरिक्षम्' 'आ' समन्तात् 'भासि' प्रकाशयसि॥

यद्वा। हे "सूर्य" अन्तर्यामितया सर्वस्य प्रेरक परमात्मन्! "तरणिः" संसाराब्धेस्तारकोसि। यस्मात् त्वं 'विश्वदर्शतः' विश्वैः सर्वैर्मुमुक्षुभिर्दर्शतोद्रष्टव्यः साक्षात्कर्तव्यइतर्थः [अधिष्ठान-साक्षात्कारे हि आरोपितं निवर्तते] ज्योतिषः सूर्यादेः कर्त्ता [तच्चाम्नायते-"चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायते" ति] ईदृशस्त्वं चिद्रूपतया 'विश्वं' सर्वं दृश्यजातं 'रोचमानं' दीप्यमानं यथा भवति तथा 'आभासि' प्रकाशयसि (मैवं न्यक्करणे हि सर्वं जगत् दृश्यते। तथाचाम्नायते-"तमेवभांतमनुभातिसर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाती" ति॥ ५०॥

হে সূর্য্য! তুমি সমস্ত জগতের দর্শনীয় ও জ্যোতিকারী এবং প্রকাশক রূপে পথ-প্রদর্শক হইতেছ এই অন্তরীক্ষ সমস্তও প্রকাশ করিয়া রাখিয়াছ ॥ ৫০ ॥

॥ अथ दशमी ॥

२ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १
प्रत्यङ्देवानांविशः प्रत्यङ्ङुदेषिमा

२ १ २ क २र ३ २
नुषान्। प्रत्यङ्विश्वंस्वर्दृशे ॥ ५१ ॥

हे सूर्य! त्वं 'देवानां' 'विशः' मरुन्नामकान् देवान् ['मरुतो वै देवानां विशः"-इति श्रुतयन्तरात्। तान्मरुत्सञ्ज्ञकान्देवान् 'प्रत्यङ् उदेषि' प्रतिगच्छन्नुदयं प्राप्नोषि। तेषामभिमुखं यथा भवति तथेत्यर्थः। तथा 'मानुषान्' मनुष्यान् प्रत्यङ् उदेषि। तेपि यथास्मदभिमुखएव सूर्यउदेतीति मन्यन्ते तथा। 'विश्वं' प्राप्तं 'स्वः' द्यां लोकं 'दृशे' द्रष्टुं 'प्रत्यङ्' उदेषि। यथा स्वर्लोक-वासिनो जनाः स्वस्याभिमुखेन पश्यन्ति तथा उदेषीत्यर्थः [एतदुक्तं भवति—ये लोकाः पश्यन्ति ते जनाः सर्वेऽपि स्वस्वाभिमुख्येन सूर्यं पश्यन्तीति। तथाचाम्नायते—'तस्मात्सर्व-एव मन्यन्ते मां प्रत्युदगा' दिति ॥ ५१ ॥

হে সূর্য্য! তুমি অন্তরীক্ষস্থ দেবগণের সম্মুখে উদয় হইতেছ, তুমি ভূলোকস্থ আমাদিগেরও সম্মুখেই উদয় হইতেছ এবং দ্যুবাসিদিগের দর্শনার্থ তাহাদিগেরও সম্মুখেই উদয় হইতেছ—কি আশ্চর্য্য! একমাত্র তুমি লোকত্রয়ের

সন্মুখস্থ হইতেছ, যিনি যথা হইতে দর্শন করুন তোমাকে সন্মুখেই দেখিতে পাইবেন॥ ৫১

অথ একাদশী।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩
যেনাপাবকচক্ষসাভুরণ্যন্তংজনাঁ৷

১ ২ ১ ২ ৩ ১ ২
অনু। ত্বংবরুণপশ্যসি॥ ৫২॥

হে 'পাবক' সর্বস্য শোধক 'বরুণ' অনিষ্ট-বারক সূর্য ! ত্বং 'জনান্' প্রাণিনঃ 'ভুরণ্যন্ত' ধারতন্তং পোষয়ন্তং বা ইমং লোকং যেন 'চক্ষসা' প্রকাশেনানু পশ্যসি অনুক্রমেণ প্রকাশয়সি তং প্রকাশং স্তুমইতি শেষঃ। [যদ্বা। উত্তরস্যামৃচিসম্বন্ধঃ, তেন চক্ষসা উদেষীতি। তথা চ যাস্কেনোক্তং—তত্তে বয়ং স্তুমইতি বাক্যশেষোপিবোত্তরস্যা মন্বয়স্তেন ব্যাখ্যাতীতি' ॥ ৫২ ॥

সমস্ত পদার্থের শোধক ও অনিষ্টবারক হে সূর্য্য! তুমি প্রাণিগণকে পোষণ করত যে প্রকাশে প্রতিনিয়ত প্রকাশিত করিয়া থাক, সেই প্রকাশ সর্ব্বথা বর্ণনীয়॥ ৫২

অথদ্বাদশী।

১র ২র ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩
উদ্যা*মেষিরজঃ পৃথ্বহামিমানোঅ

১ ২ ২ ৩ ১ ২
ক্তুভিঃ। পশ্যঞ্জন্মানিসূর্য্য॥ ১২॥

* "উদ্যাম্"—"বিদ্যাম্"—ইতি পাঠৌ॥

হে 'সূর্য!' ত্বং 'পৃথু' সুবিস্তীর্ণং 'রজঃ' লোকং [লোকা রজাংস্যুচ্যন্তে"-ইতি যাস্ক-বচনাৎ] দ্যুলোকং 'দ্যাম্' অন্তরিক্ষলোকম্ 'উদেষি' উদ্গচ্ছসি। কিং কুর্বন্? 'অহানি' 'অক্তুভিঃ' রাত্রিভিঃ সহ 'মিমানঃ' উন্মানয়ন্ [আদিত্যগত্যধীনত্বাদহোরাত্রবিভাগস্য] তথা 'জন্মানি' জননবন্তি ভূতজাতানি 'পশ্যন্' প্রকাশয়ন্ ॥ ৫৩ ॥

হে সূর্য্য! তুমি এই সুবিস্তীর্ণ অন্তরীক্ষ লোক, দ্যুলোক ও ভূলোক অহোরাত্রে পরিমাণ করত এবং সমস্ত পদার্থের প্রকাশয়িতা হওত প্রতিনিয়তই উদয় হইতেছ ॥ ৫৩

অথ ত্রয়োদশী।

১ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩ ১ ক ২র
অযুক্তসপ্তশুন্ধ্যুবঃ সূরো রথস্য নপ্ত্র্যঃ
১ ২ ৩ ১ ২
তাভির্যাতিস্বযুক্তিভিঃ ॥ ১৩ ॥

'সূরঃ' সর্বস্য প্রেরকঃ সূর্যঃ, 'শুন্ধ্যুবঃ' শোধিকা অশ্বাস্ত্রিয়ঃ। তাদৃশীঃ সপ্ত সপ্ত সংখ্যাকাঃ 'অযুক্ত' স্ব-রথে যোজিতবান্। কীদৃশীঃ? 'রথস্য' 'নপ্ত্র্যঃ' নপাতয়িত্র্যঃ। যাভির্যুক্তো রথো যাতি ন পততি ঈদৃশীরিত্যর্থঃ। এবং ভূতাভিস্তাভিরশ্বস্ত্রীভিঃ স্বযুক্তিভিঃ স্বকীয়-যোজনেন রথে সংবদ্ধাভির্যাতি যজ্ঞগৃহং প্রত্যাগচ্ছতি। অতস্তস্মৈ হবির্দাতব্য মিতি বাক্য-শেষঃ ॥ ৫৪ ॥

সূর্য্য সেই সপ্ত ঘোটকী স্বীয় রথে যুক্ত করেন, যাহারা তাঁহার ভার বহনে সক্ষম; সেই স্বকীয় রথে সর্ব্বত্র গমন করিয়া থাকেন ॥ ৫৪

অথ চতুর্দশী।

২ ১ ২ ২ ২ ২ ২ ২ ১ ২
সপ্তত্বাহরিতোরথেবহন্তিদেবসূর্য।

২ ১ ২
শোচিষ্কেশংবিচক্ষণ ॥ ১৪ ॥

হে 'সূর্য' 'দেব!' দ্যোতমান! 'বিচক্ষণ'! সর্বস্য প্রকাশয়িতঃ! 'সপ্ত' সপ্ত-সঙ্খ্যাকাঃ 'হরিতঃ' অশ্বাঃ রস-হরণ-শীলা রশ্ময়ো বা 'ত্বা' ত্বাং 'বহন্তি' প্রাপ্নুবন্তি। কীদৃশং 'রথে' অবস্থিত মিতি শেষঃ তথা 'শোচিষ্কেশং' শোচীংষি তেজাংসিএব যস্মিন্ কেশাইব দৃশ্যন্তে স তথোক্তস্তমিতি ॥ ৫৫ ॥

হে সূর্য্য! হে সমস্ত জগতের প্রকাশয়িতঃ! দেব! তোমাকে হরিতবর্ণ সপ্ত অশ্বে * বহন করিয়া থাকে; তাহারা তোমার রথে সুনৈপুণ্যে সংযুক্ত রহিয়াছে এবং তাহাদের স্কন্ধদেশীয় কেশ সকল অতি শুভ সুচিক্কণ ॥ ৫৫

* সায়ণাচার্য্য বলেন—রশ্মিপুঞ্জই অশ্বরূপে কল্পিত এবং তদীয় প্রভাপুঞ্জই কেশস্থানীয়।

—:০:—

॥ ইতি শ্রীমদ্ ভগবত্ কুথুমর্ষি প্রাদুষ্কৃতা ভাষ্যেণানুবাদেন চ সমেতা সামবেদীয়া আরণ্যসংহিতা সমাপ্তা ॥



२७	कादम्बरी—सटीक	...	४
२८	राजप्रशस्ति	...	=
२९	अनुमानचिन्तामणि तथा अनुमानदीधिति		४
३०	सर्वदर्शनसंग्रह	...	१
३१	भामिनीविलास—सटीक	...	१
३२	हितोपदेश—सटीक	...	१
३३	भाषापरिच्छेद मुक्तावलीसहित	...	१
३४	बहुविवाहवाद	...	।
३५	दशकुमारचरित—सटीक	...	१॥
३६	परिभाषेन्दुशेखर	...	॥।
३७	कविकल्पद्रुम (वोपदेवकृत धातुपाठ)		॥
३८	चक्रदत्त (वैद्यक)	...	१॥
३९	उणादिसूत्र—सटीक	...	२
४०	मेदिनी कोष	...	१
४१	पञ्चतन्त्रम् [श्रीविष्णु-शर्म्म-सङ्कलितम्]		२॥
४२	विद्वन्मोदतरङ्गिणी (चम्पूकाव्य)	...	॥
४३	माधवचम्पू	...	।=
४४	तर्कसंग्रह (इंराजी अनुवाद सहित)		॥
४५	प्रसन्नराघवनाटक (श्रीजयदेवकविरचित)		१
४६	विवेकचुड़ामणि [श्रीमत्शङ्कराचार्य्य विरचित]		।=
४७	काव्यसंग्रह [सम्पूर्ण]	...	५
४८	लिङ्गानुशासन (सटीक)	...	।
४९	ऋतुसंहार—सटीक	...	।=
५०	विक्रमोर्वशी—सटीक	...	१॥
५१	वसन्ततिलक भाण	...	॥–
५२	गायत्री [वङ्गाक्षरैः]	...	
५३	सांख्यदर्शन (भाष्यसहित) सांख्यप्रवचनभाष्य		२

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिरे—वि,ए,उपाधिधारिणः
श्रीजीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यस्य
सकाशात् लभ्यानि ।

24/10.74

MANTRA BRAMHANAM

OF THE SAMAVEDA

WITH A COMMENTARY AND BENGALI TRANSLATION BY

SATYA BRATA SAMASRAMI.

सामवेदस्य मन्त्रब्राह्मणम् ।

भाष्यसहितम् ।

वङ्गानुवादयुक्तञ्च ।

वि, ए, उपाधिधारिणा

श्रीजीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्येण

प्रकाशितम् ।



Calcutta.

PRINTED AT THE DWEIPAYANA PRESS.

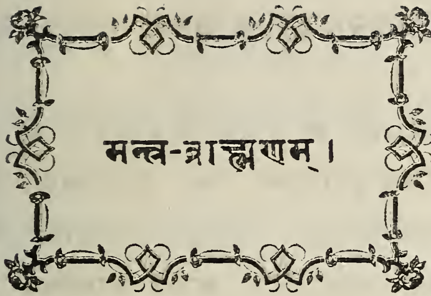
1873.

To be had from Pandit Jibananda Vidyasagara B. A. Sanskrit llege of Calcutat.

पण्डितकुलतिलक-पूज्यपाद श्रीमत् तर्कवाचस्पति

पाद-प्रणीत-प्रकाशित-पुस्तकान्येतानि

१	आशुबोध व्याकरणम्	...	३।
२	धातुरूपादर्शः	...	२
३	शब्दस्तोम-महानिधि [संस्कृत अभिधान]		१०
४	सिद्धान्तकौमुदी—सरलाटीकासहिता		११
५	सिद्धान्तविन्दुसार [वेदान्त]	...	॥
६	तुलादानादिपद्धति [वङ्गाक्षरैः]	...	४
७	गयाश्राद्धादिपद्धति	...	१
८	शब्दार्थरत्न	...	॥।
९	वाक्यमञ्जरी [वङ्गाक्षरैः]	...	।
१०	छन्दोमञ्जरी तथा वृत्तरत्नाकर—सटीक		॥=
११	वेणीसंहार नाटक—सटीक	...	१
१२	मुद्राराक्षस नाटक—सटीक	...	१॥
१३	रत्नावली	...	॥।
१४	मालविकाग्निमित्र—सटीक	...	१॥
१५	धनञ्जय विजय—सटीक		।
१६	महावीरचरित	...	१॥
१७	साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी—सटीक	...	२
१८	वैयाकरणभूषणसार	...	॥।
१९	लीलावती	...	॥।
२०	वीजगणित	...	१
२१	शिशुपालबध—सटीक	...	६
२२	किरातार्जुनीय—सटीक	...	२॥
२३	कुमारसम्भव—पूर्वखण्ड सटीक	...	१
२४	कुमारसम्भव—उत्तरखण्ड	...	॥
२५	अष्टकम् पाणिनीयम्	...	॥।
२६	वाचस्पत्यम् [संस्कृत-वृहदभिधान]	...	६०



मन्त्र-ब्राह्मणम्।

॥ अथ प्रथमः प्रपाठकः ॥

तत्र

प्रथम-खण्डः।

ओं। देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु ॥१॥ काम वेद ते नाम मदो नामासि समानया

हे 'देव' द्योतमान! 'सवितः'! जगत्-प्रसवितः! त्वम् 'यज्ञं' इदं कर्म्म 'प्रसुव' अनुजानीहि; 'भगाय' कर्म्म-फल-भाजनाय 'यज्ञपतिं' यजमानं माम् 'प्रसुव' अनुजानीहि, अनुष्ठित-कर्म्म-फल-भाजं मां कुरुतेति यावत्। किञ्च, 'दिव्यः'

হে দ্যোতমান জগৎপ্রসবিতা দেবতা! তুমি এই কর্ম্ম অবগত হও এবং এই কর্ম্মের ফলভাগী করণার্থ আমাকে

१ — परमेष्ठि-प्रजापतिर्ऋषिः *। यजुः। सविता देवता।

* यावन्न भवति ऋष्यन्तरस्योपन्यासः, तावदेष एव ऋषिर्ज्ञेयः सर्वत्र। विनियोगस्तु वृत्तिकारवचनानुसारादवगन्तव्यः।

मुꣳ सुरा ते अभवत् । परमत्र जन्माग्ने तपसो निर्मितोसि स्वाहा ॥२॥ इमन्त उपस्थं मधुना सꣳ सृजामि

द्युलोकस्थः ‘गन्धर्व्वः’ गां पृथिवीं धारयति यः सः ‘केतपूः’ केतं चित्तं प्रज्ञानं तत् पुनाति सः ‘नः’ अस्माकम् ‘केतं’ चित्तम् ‘पुनातु’ निर्म्मलीकरोतु । किञ्च, ‘वाचस्पतिः’ वाचामधिपतिः ‘नः’ अस्माकम् ‘वाचः’ गिरः ‘स्वदतु’ आस्वादयतु ॥ १ ॥

हे ‘काम’ ! ‘ते’ तव ‘नाम’ ‘वेद’ जानाति सर्व्वं जगदिति शेषः ; किम्पुनस्तदित्याह—‘मदः’ मदकरः ‘नाम’ प्रसिद्धः ‘असि’ भवसि ; ‘ते’ त्वदर्थां त्वदुत्पत्त्यर्थां इयं कन्या ‘सुरा’

কর্ম্ম-কর্ত্তা বলিয়া অবগত হও। চিত্ত-পবিত্র-কারী পৃথিবীর ধারয়িতা দেবতা, আমাদিগের চিত্তক্ষেত্র পবিত্র করুন। বাক্যের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা, আমাদিগের বাক্যকে সুমধুর করুন ॥১

হে কাম দেবতা ! তোমার নাম সকলই বিদিত আছে, তুমি মাদক বলিয়া প্রসিদ্ধ ; তোমার উৎপত্তির আকর —সুরা-স্বরূপা এই কন্যাকে আত্ম-নিয়োগার্থ প্রাপ্ত হও (অর্থাৎ এই কন্যাতে আবির্ভূত হও)। হে কামাগ্নে ! এই স্ত্রীজাতিতেই তোমার শ্রদ্ধেয় জন্ম, তুমি পুরুষার্থ-সিদ্ধির জন্যই সৃষ্ট হইয়াছ ॥২॥

---

२ — प्रस्तारपङ्क्तिश्छन्दः । कामो देवता ।

प्रजापते र्मुखमेतद् द्वितीयं तेन पुंसोऽभिभवासि सर्वानवशान्वशिन्यसि राज्ञी स्वाहा ॥३॥ अग्निं क्रव्याद-मकृण्वन्गुहानाः स्त्रीणामुपस्थ मृषयः पुराणाः । तेना-

सुराभूता 'अभवत्' 'अमुं' कन्यकां 'समानय' स्वात्मानं प्रापय, इहोत्पद्यतामिति भावः। हे 'अग्ने' कामाग्ने! 'अत्र' स्त्री-जातिष्वेव तव 'परं जन्म' उत्कृष्टा जनिः, त्वं 'तपसः' पुरुषार्थस्य सिद्ध्यर्थं निर्म्मितः सृष्टः 'असि' भवसि। 'स्वाहा'-एष शब्दः प्रसिद्धार्थः ॥ २ ॥

हे 'कन्यके'! 'इमं' 'ते' तव 'उपस्थं' आनन्देन्द्रियं 'मधुना' 'संसृजामि' संयोजयामि ; 'एतत्' 'प्रजापतेः' 'द्वितीयम्" अपरं 'मुखम्' ; 'तेन' उपस्थ-प्रभावेण 'सर्व्वान्' 'अवशान् अपि' 'पुंसः' 'अभिभवासि' वशीकरोषि, 'वशिनी' कान्ति-मती 'राज्ञी' च स्वामिनी सर्व्वकामानाम् 'असि' भवसि ॥३॥

হে কন্যে! এই ত্বদীয় আনন্দেন্দ্রিয় মধু-ষিক্ত করি, ইহা প্রজাপতির একটি মুখ (অর্থাৎ প্রজোৎপত্তির দ্বার) ; এই ইন্দ্রিয়-প্রভাবেই অ-বশ পুরুষ সকলকেও বশীভূত করিয়া থাক এবং কান্তিমতী স্বরূপে সর্ব্বকামের অধিপতি হইয়াছ ॥ ৩

---

३ – मध्ये ज्योतिर्जगतीच्छन्दः । उपस्थरूपः कामी देवता ।

ज्यमकृण्वꣳस्त्रैशृङ्गं त्वाष्ट्रं त्वयि तद्दधातु स्वाहा ॥४॥
या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देव्यो अन्तान
भितो ततन्थ । ता त्वा देव्यो जरसा संव्ययन्त्वायुष्मती

'गुहानाः' तत्वदर्शिनः 'पुराणाः' पुरातनाः 'ऋषयः' 'स्त्रीणां' स्त्री-जातीनाम् 'उपस्थं' 'क्रव्यादम्' मांस-भक्षकम् 'अग्निम्' इति 'अकृण्वन्' स्वीकृतवन्तः । किञ्च, 'तेन' संयुतं 'त्रैशृङ्गं' त्रिशृङ्गं पुरुषशिश्नं तेन निर्वृत्तं 'त्वाष्ट्रं' त्वष्टा विश्वकर्मा जगत्स्रष्टा तद्दैवताकं शुक्रम् 'आज्यम्' इति 'अकृण्वन्' निर्णयं कृतवन्तः । हे कन्ये! 'तत्' शुक्रं 'त्वयि' 'दधातु' स्थापयतु कामी देवता पतिर्वेति शेषः ॥ ४ ॥

'याः' 'देव्यः' पणिग्यः व्यवसायिन्य 'स्त्रिय' इदं परिधेयं वस्त्रं 'अकृन्तन्' कर्त्तितवत्यः एतद्वस्त्र-निर्माणार्थं सूत्रं निर्मितवत्य इत्यर्थः, 'याः' 'अवयन्, उतवत्यः तन्तुसन्तानं कृतवत्यः,

তত্ত্বদর্শী, পুরাতন, ঋষিগণ স্ত্রীজাতির আনন্দেন্দ্রিয়কে মাংস-ভক্ষক অগ্নি বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন এবং বিশ্বকর্ম্মা (সর্ব্ব-স্রষ্টা) দেবতার ইচ্ছায় তৎসংযোগে পুরুষেন্দ্রিয় হইতে প্রাদুর্ভূত শুক্রকে হোমীয় ঘৃত বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন। হে কন্যে! তোমাতে তাহা স্থাপিত হউক ॥ ৪ ॥

४ – उपरिष्टाज्ज्योतिरियं त्रिष्टुप् । उपस्थरूपः कामी देवता ।

दं परिधत्स्व वासः ॥५॥ परि धत्तधत्त वाससैनाᳬ शता-
युषोᳬ कृणुत दीर्घमायुः। शतं च जीव शरदः सुवर्चा व
सूनि चार्यै विभजासि जीवन् ॥६॥ सोमो ददद्गन्धर्वाय

'याः' 'अतन्वत' तनु विस्तारे विस्तारितवत्यः, 'याः च' अन्तान् पट-सन्नान् 'अभितः' उभयपार्श्वयोः 'अततन्थ' ग्रथितवत्यः, 'ताः देव्यः' हे कन्ये ! 'त्वां' 'जरसा' जरान्तं यावत् 'संव्ययन्तु' परिधापयन्तु। हे 'आयुष्मति !' दीर्घायुषि ! 'इदम्' प्रकृतं 'वासः' वसनम् 'परिधत्स्व' परिधानं कुरु ॥५॥

हे परिधापयितारः ! ऋत्विजादयः ! 'शतायुषीम्' शतवर्षजीविनीम् 'एनां' कन्यकाम् 'वाससा' वस्त्रेण 'परि' सर्वतः 'धत्त धत्त' धारयतैव वेष्टनं कुरुतैव; किञ्च एतदीयम् 'आयुः'

যে দেবীরা এই বসনের সূত্র সকল প্রস্তুত করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহা বয়ন করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহাকে এই আকারে বিস্তৃত করিয়াছেন, এবং যে দেবীরা ইহার উভয় পার্শ্বের ছিলা সকল গ্রথন করিয়াছেন হে কন্যে ! সেই দেবীরা তোমাকে জরাবস্থা পর্য্যন্ত সোৎসাহে বস্ত্র পরিধান করাইতে থাকুন ; হে আয়ুষ্মতি ! এই বস্ত্র পরিধান কর ॥৫

হে বস্ত্র-পরিধাপয়িতৃগণ ! তোমরা শতবর্ষজীবিনী এই কন্যাকে বসনে পরিবেষ্টিত কর এবং আশীর্ব্বাদন দ্বারা ইহার

५—जगतीच्छन्दः। वस्त्रकारादेवता। वस्त्रपरिधापने विनियोगः।

६—त्रिष्टुप्छन्दः। परिधापयितारो देवताः। उत्तरीय परिधापने विनियोगः।

गन्धर्वो ददग्नये। रयिञ्च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्य मथो इमाम् ॥७॥ प्र मे पतियानः पन्थाः कल्पता৮

दीर्घं 'कृणुत' कुरुत। एवम् परिधापयितारोऽभिधाय अधुना तामेव साक्षादाशास्ते—हे 'आर्ये!' आर्य्यदेशोद्भवे! माननीये! वा, 'सुवर्चाः' तेजस्विनी सती 'शरदःशतं' शत-शरदृतु-परिमितं कालं 'जीव' 'च' अपिच 'जीवन्' जीवन्ती सती 'वसूनि' ऐश्वर्य्याणि 'विभृजासि' भजस्व ॥६॥

'इमां' कन्यां 'सोमः' सूयतइति सोमः स्रष्टृदेवता 'गन्ध र्वाय' गां धारयति यः तस्मै पालकाय 'ददत्' अदात् समर्पयत; सच 'गन्धर्वः' अग्नये ददत्' अग्निसमीपमधुना समर्पयत्; 'अग्नि साक्षिरूपेण स्थितः 'मह्यं' परिणेत्रे 'अदात्;' 'अथो' अनन्तरं 'रयिं' धनं 'पुत्रान् च' अदादित्याशास्महे ॥७॥

পরমায়ু পরিবর্দ্ধিত কর। হে আর্য্যদেশোদ্ভবে! কন্যে! তুমি তেজস্বিনী হইয়া শত শরৎ (অর্থাৎ শতবর্ষ) জীবিত থাক এবং জীবিত থাকিয়া ঐশ্বর্য্যসকল ভোগ কর ॥৬

স্রষ্টা এই কন্যাকে পাতার হস্তে সমর্পণ করেন, পাতা এই অগ্নির নিকটে উপনীত করিয়াছেন, অগ্নি সাক্ষীরূপে উপস্থিত থাকিয়া ইহা আমাকে প্রদান করিলেন, ভরসা করি ধন পুত্রাদিও এই সমভিব্যারেই প্রদত্ত হইল ॥৭

৭—अनुष्टुप्छन्दः। सोमादयो देवताः।

शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम् ॥८॥ अग्निरेतु प्रथमो देवताभ्यः सो स्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु-पाशात्। तदयं राजा वरुणोनु मन्यतां यथेयं स्त्री पौत्र मघन्नरोदात् स्वाहा ॥९॥ इमा मग्नि

'नः' अस्माकम् 'पतिः' पाता देवः 'मे' मदर्थं 'पन्थां' पन्थानम् 'प्र कल्पताम्' प्र करोतु; 'या' येन पथा, कीदृशेन? 'शिवा' शिवेन कल्याणमयेन 'अरिष्टा' अरिष्टेन विघ्नशून्येन 'पतिलोकम्' पतिकूलं 'गमेयम्' गच्छेयम् अहमिति शेषः ॥८॥

'देवताभ्यः' देवतानां 'प्रथमः' मुख्यः 'अग्निः' 'एतु' आगच्छतु आगत्य च 'सः' 'अस्यै' अस्याः भाविनीं 'प्रजां' सन्तति-ततिं 'मृत्युपाशात्' अकाल-मरण-भयात् 'मुञ्चतु'; 'अयं' 'राजा' राजमानः वरुणः 'तत्' तथा अनुम न्यतां, यथा' 'इयं स्त्री' 'पौत्रम्' पुत्रसम्बन्धि 'अघम्' पाप-मूलकं शोकं प्राप्य 'न रोदात्' रोदनं न कुर्य्यात्; नैव प्राप्नुयादिति यावत् ॥९॥

অমাদিগের পাতা, আমাদের জন্য সেই পথ কল্পিত করুন যে কল্যাণময় বিঘ্নশূন্য পথে পতি-কূল-কার্য্য-নির্ব্বাহ করিতে পারি ॥৮

দেব-শ্রেষ্ঠ অগ্নি আগমন করুন; তিনি এই কন্যার ভবিষ্যৎ সন্ততিগুলিকে মৃত্যুভয় হইতে মুক্ত করুন; এই রাজমান রজনি দেবতা সেইরূপ অনুমতি করুন যাহাতে এই স্ত্রী পাপমূলক পুত্রশোক প্রাপ্ত হইয়া ক্রন্দন না করেন্ ॥৯

८—त्रिपाद् जगतीच्छन्दः। पतिर्देवता। पदप्रवर्त्तने विनियोगः।

९—अतिजगतीच्छन्दः। अग्निर्देवता। आज्यहोमे विनियोगः।

स्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै जरद्ष्टिं कृणोतु । अशू-न्योपस्था जीवता मस्तु माता पौत्र मानन्दमभिविबु ध्यता मियꣳ स्वाहा॥१०॥द्यौस्ते पृष्ठꣳ रक्षतु वायुरूरू अश्विनौ च । स्तनन्धयस्ते पुत्रांत् सविताभि रक्षत्वा

'गार्हपत्यः' 'अग्निः' 'इमां' कन्यां 'त्रायतां' पालयतु 'अस्यै' एतदर्थम् 'जरदष्टिं' जरान्वितां दीर्घायुषीम् प्रजां सन्तति-ततिं 'कृणोतु' विदधातु, किञ्च 'इयम्' 'जीवतां' जीवन्तु नाणां माता 'सती' 'अशून्योपस्था' अशून्यागारा अविधवा 'अस्तु' अपिच 'पौत्रम्' आनन्दं सुपुत्र-सम्बन्धिन मानन्दं 'विबुध्यताम्' विशेषेण जानीयात् ॥१०॥

हे 'कन्ये ! 'ते' तव 'पृष्ठं' पृष्ठदेशं 'द्यौः' द्यु-लोको 'रक्षतु'; 'ऊरू' ऊरूदेशौ 'वायुः' 'च' अपिच 'अश्विनौ' दिवा-रात्री रक्षतु ; 'ते' तव 'स्तनन्धयः' स्तनन्धयान् 'पुत्रान्' हृदय-रूपान् 'सविता' 'अभिरक्षतु' ; 'आ वाससः परिधानात्'

গার্হপত্য, এই কন্যাকে সতত রক্ষা করুন, ইহার জন্য ভাবি-জরাক্রান্ত (অর্থাৎ দীর্ঘজীবী) প্রজা বিধান করুন ; এই কন্যা জীবিত পুত্রগণের মাতা হইয়া পতির সহিত বাস করুন এবং সৎপুত্রজনিত আনন্দ উপভোগ করুন ॥১০

হে কন্যে ! দ্যুলোক তোমার পৃষ্ঠদেশ রক্ষা করুন, বায়ু এবং দিবস রজনি ঊরুদ্বয় রক্ষা করুন, তোমার স্তন্য-পায়ী

১০ – अतिजगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । आज्यहोमे विनियोगः ।

বাসসঃ পরিধানাদ্‌ বৃহস্পতি র্বিশ্বেদেবা অভিরক্ষন্তু পশ্চাৎ স্বাহা॥১১॥ মা তে গৃহেষু নিশি ঘোষ উত্থা দন্য ত্র ত্বদ্রুদত্যঃ সংবিশন্তু॥ মাত্বঁ রুদত্যুর আবধিষ্ঠা জীবপত্নী পতিলোকে বিরাজ পশ্যন্তী প্রজাঁ সুমনস্যমানাঁ স্বাহা॥১২॥ অপ্রজস্যং পৌত্রমর্ত্যং পাপ্মান

বাস-পরিধানং যাবৎ প্রচ্ছন্নদেশং 'বৃহস্পতিঃ' অভিরক্ষতু; 'পশ্চাৎ' ততোঽধস্তনস্থানানি পাদাগ্রাদীনি, উপরিতন-স্থানানি গ্রীবাদীনি চ 'বিশ্বেদেবাঃ' 'অভিরক্ষন্তু'॥১১॥

হে 'কন্যে! 'তে' তব 'গৃহেষু' 'নিশি' রাত্রৌ 'ঘোষঃ' আর্ত্ত-শব্দঃ 'মা উত্থাৎ' ন উত্তিষ্ঠেৎ; কিন্তু 'ত্বৎ' ত্বত্তঃ 'অন্যত্র' শত্রুগৃহাদৌ 'রুদত্যঃ' স্ত্রিয়ঃ 'প্রবিশন্তু,' 'ত্বং' 'রুদৎ' রুদতী

হৃদয় স্বরূপ পুত্রদিগকে সবিতা রক্ষা করুন, পরিধেয় বস্ত্রে যাবৎ আবৃত থাকে তৎসমস্ত অঙ্গ বৃহস্পতি রক্ষা করুন, এতদ্‌ব্যতিরিক্ত (পাদাগ্রপ্রভৃতি ও গ্রাবা-প্রভৃতি) বিশ্বেদেবা দেবতারা রক্ষা করুন!১১

হে কন্যে! তোমার গৃহে কদাপি নিশাভাগে আর্ত্তনাদ উত্থিত না হউক! তোমার শত্রু-গৃহাদিতে স্ত্রীগণ ক্রন্দন করিতে করিতে প্রবিষ্ট হউক! রোদন করিতে করিতে অন্তঃ-

১১—শক্করীচ্ছন্দঃ। বিশ্বেদেবা দেবতাঃ। আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।

১২—অতিজগতীচ্ছন্দঃ। অগ্ন্যাদয়ো দেবতাঃ। আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।

मुत वा अघम्॥　शीर्ष्णः स्रजमिवोन्मुच्य द्विष-द्भ्यः प्रति मुञ्चामि पाशꣳ स्वाहा ॥१३॥परैतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु॥ परं मृत्यो

सती 'पुरः' अन्तःपुरे 'मा' 'आवधिष्ठाः' न कदाचिदपि परि-जनान् घातयेः ; किन्तु 'जीवपत्नी' जीवत्पतिका सती 'सुमन-स्यमानां' हृष्टचित्तां 'प्रजां' 'पश्यन्ती' वीक्षमाणा 'पतिलोके' पतिगृहे 'विराज' शोभस्व ॥१२॥

हे कन्ये ! 'अप्रजस्यम्' बन्ध्यात्वं 'पौत्रमर्त्यम्' पुत्र-सम्बन्धि-मरणं 'पाशम्' मृत्योः पाशरूपम् 'पाप्मानम्' 'उत वा' अन्यदपि 'अघम्' अरिष्टं त्वयि यद् स्थितं तत् सर्वं 'शीर्ष्णः' मस्तकात् 'स्रजम् इव' मालामिव त्वत्तः 'उन्मुच्य' अवतार्य्य द्विष-द्भ्यः द्वेष्टृभ्यः 'प्रति मुञ्चामि' प्रतिक्षिपामि ॥१३॥

পুর বাসী-দিগকে তোমায় পীড়িত করিতে না হয় ! স-ধবা থাকিয়া হৃষ্টচিত্তে পুত্রাদি লইয়া আমোদ প্রমোদ করত পতি-গৃহে সুখে বাস কর ॥১২

হে কন্যে ! বন্ধ্যাত্ব, পুত্র-শোক প্রভৃতি মৃত্যুর পাশ স্বরূপ যে সকল পাপ ও অরিষ্ট তোমাতে আছে, তৎসমস্তই তোমার মস্তক হইতে মালা-উন্মোচনের ন্যায় উন্মুক্ত করিয়া শত্রুবর্গের প্রতি নিঃক্ষিপ্ত করিতেছি ॥১৩

१३ – उपरिष्टाद्बृहतीच्छन्दः । अग्न्यादयो देवताः । आज्यहोमे विनियोगः ।

अनु परेहि पन्थां यत्र नो अन्य इतरो देवयानात्॥चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषोमोत वीरांत् स्वाहा ॥१४॥

'मृत्युः' 'परैतु' पराङ्मुखो गच्छतु 'मे' मम 'अमृतम्' अमरणम् 'आगात्' आगच्छतु नाहं म्रिये ! इति भावः, 'वैवस्वतः' 'नः' 'अस्माकम् 'अभयं' 'कृणोतु' करोतु। 'मृत्यो !' 'यत्र' 'नः' अस्माकम् 'अन्यः' सदृशम् मर्त्यभूमि-कृत-वासः जीवः अस्ति—यः 'देवयानात्' देवमार्गात् 'अन्यः', तम् 'परं' परलोकीयं 'पन्थां' पन्थानम् 'अनु' संलक्ष्य 'परेहि' पराङ्मुखो गच्छ। 'चक्षुष्मते' पश्यतः 'शृण्वते' दर्शतः 'ते' तव सन्निधौ 'ब्रवीमि' प्रार्थयामि—'नः' अस्माकं 'प्रजां' परिवारं' 'उत' अपिच (विशेषेण) 'वीरान्' पुत्रान् 'मा' रीरिषः' मा हिंसीः ॥१४॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य

प्रथमः खण्डः ॥१॥

—०—

মৃত্যু পরাঙ্মুখ হইয়া গমন করুন, অমর ভাব আমার নিকটে আসিয়া উপস্থিত হউক; বৈবস্বত আমাদিগের অভয় বিধান করুন। হে মৃত্যো! যে স্থলে আমাদিগের ন্যায় মর্ত্ত্য জীব সকল আছে—যাহা দেবগণের গমনীয় নহে, সেই (প্রেতলোকের) পথ লক্ষ্য করত পরাঙ্মুখ হইয়া গমন কর। উৎকৃষ্ট দর্শনবান্—উৎকৃষ্ট শ্রুতিমান্ তোমার নিকটে প্রার্থনা করি—আমার পরিবার বর্গকে বিশেষত পুত্রদিগকে নষ্ট করিও না ॥১৪

१४—मत्यु त्रिष्टुप्छन्दः। वैवस्वतो देवता। आज्यहोमे विनियोगः।

द्वितीय-खण्ड:—

इम मश्मान मारोहा श्मेव त्वꣳ स्थिरा भव ॥ द्विष न्त मप बाधस्व मा च त्वं द्विषता मध:॥१॥ इयं नार्यु- पब्रूते ग्नौ लाजानावपन्ती । दीर्घायु रस्तु मे पति:

हे कन्ये ! 'इमम्' प्रत्यक्षम् 'अश्मानम्' शिलाखण्डम् 'आरोहा:' आक्रम। तथाच 'त्वम्''अश्मा इव'पाषाणइव 'स्थिरा' अचला 'भव' ; अस्मिन्नेव पति-कुले जीवनं यापयेत्यर्थ: । किञ्च कन्ये ! 'द्विषन्तम्' शत्रु कुलम् 'अपबाधस्व' पीड़य, 'च' 'अपिच' 'त्व'' 'द्विषतां' तेषाम् 'अध:' अधस्तात् अवरभावेन 'मा' अभू: ; त्वदीयागमनेनात्र कुले मङ्गलं—शत्रु-कुले अमङ्गलञ्च भवत्विति त्वाशय: ॥ १ ॥

'इयं नारी' 'लाजान्' भ्रष्टव्रीहीन् 'आवपन्ती' प्रक्षिपन्ती सती 'उप' अस्मत्-समीपे 'ब्रूते' कथयति ; किमित्याह—'मे' मम 'पति:, 'दीर्घायु:' दीर्घजीवी 'अस्तु' 'शतं वर्षाणि जीवतु' इति ; किञ्च 'मम' ज्ञातय: 'एधन्ताम्' परिवर्द्धन्ताम् ॥ २ ॥

কন্যে ! এই শিলাখণ্ডে আরোহণ কর, তুমি এই প্রস্তরবৎ দৃঢ় রূপে অবিচলভাবে পতি-গৃহে বাস কর। কন্যে ! শত্রু-কুল নষ্ট কর এবং শত্রুদিগের নিকটে কখন অপদস্থ হইও না। অর্থাৎ তোমার আগমনে রিপুগণ নিস্তেজ হউক ॥১

এই নারী লাজাগুলি বিক্ষিপ্ত করত ক্রমে আমাদের নিকটস্থ হইয়া বলিতেছেন—যে, "আমার পতি দীর্ঘজীবী

१ – अनुष्टुव् छन्द: । अश्मा देवता । अश्माक्रमणे विनियोग: ।

शतं वर्षाणि जीवत्वे धन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥२॥ अर्य्यमणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमान्देवो अर्य्यमा प्रेतो मुञ्चातु मा मुत स्वाहा ॥३॥ पूषणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमां देवः पूषा प्रेतो

'उत' अपिच, इयं 'कन्या' 'अर्य्यमणम्' अर्य्यमाख्यम् 'अग्निम्' 'देवं' 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' उद्दिश्य 'प्र मुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु मह्यं ददातु इत्यर्थः ॥ ३ ॥

'उत' अपिच इयं 'कन्या' 'पूषणं' पूष-नामकम् 'अग्निम्' 'देवं' 'नु' निश्चयम् 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' 'प्रमुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु ॥ ४ ॥

হউন, শতবর্ষ পরমায়ু লাভ করুন এবং আমার দেবর প্রভৃতি জ্ঞাতিরা পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুন" ॥২

এবং এই কন্যা অর্য্যমা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি, এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়াছেন ॥৩

এবং এই কন্যা পূষা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা

२ – उपरिष्टाज्जगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । लाज* होमे विनियोगः ।

* लाजा भृष्टव्रीहयः ।

३—उपरिष्टाद् बृहतीच्छन्दः । अर्य्यमा देवता । लाजहोमे विनियोगः ।

মুঞ্চাতু মামুত স্বাহা ॥৪॥ কন্যলা পিতৃভ্যঃ পতিলোকং পতীয মপ দীক্ষা ময়ষ্ট॥ কন্যা উত ত্বয়া বয়ং ধারা-উদন্যা ইবাতি গাহেমহি দ্বিষঃ ॥৫॥ একমিষে বিষ্ণু-স্ত্বানয়তু ॥ দ্বে ঊর্জ্জে বিষ্ণুস্ত্বা নয়তু ॥ ত্রীণি ব্রতায

‘কন্যলা’ কন্যা ‘পিতৃভ্যঃ’ পিতৃ-ভ্রাতৃ-প্রভৃতিভ্যঃ ‘অপ’ তান্ পরিত্যজ্য ‘পতিলোকং’ পতিগৃহম্ আগত্য ‘পতীয়ং’ পতি-সম্বন্ধিনীং ‘দীক্ষাম্’ ‘অযষ্ট’ ইষ্টবতী। ‘উত’ অপিচ ‘কন্যা’ ‘ত্বয়া’ সহ একত্রীভূতাঃ ‘উদন্যা ধারাঃ’ উদকধারাঃ ‘ইব’ বলবন্তো বেগবন্তো পরস্পর-ভেদ-শূন্যাস্তাদাত্ম্য-ভাবাশ্চ বয়ং ‘দ্বিষঃ’ দ্বেষ্টৄন্ ‘অতি গাহেমহি’ অতিক্রান্ত্য বিলোড়য়ামঃ উদ্বে-জয়ামঃ ॥ ৫ ॥

হে কন্যে! ‘বিষ্ণুঃ’ ব্যাপকো দেবঃ ‘ত্বাম্’ ‘একং’ পদং ‘ইষে’ অন্নলাভায় ‘নয়তু’ প্রাপয়তু। ‘বিষ্ণুঃ’ ‘ত্বাং’ ‘দ্বে’ পদে ‘ঊর্জ্জে’

করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়াছেন ॥৪

কন্যা, পিতা মাতা ভ্রাতা প্রভৃতিকে ত্যাগ করিয়া পতিগৃহে আগমন করত পতি-সম্বন্ধী উপদেশ গ্রহণ করিতেছে, এবং কন্যে! আমরা তোমার সহিত একত্র হইয়া জলধারাসমূহের ন্যায় বলবান্, বেগবান্ ও পরস্পর অভিন্নভাবে স্থিত হইয়া দ্বেষ্টৃগণকে উদ্বিগ্ন করি ॥৫

৪—উপরিষ্টাদ্ বৃহতীচ্ছন্দঃ। পূষা দেবতা। লাজহোমে বিনিয়োগঃ।

৫—ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। কন্যা দেবতা। লাজহোমে বিনিয়োগঃ।

বিষ্ণুস্ত্বা যত্ন ॥ চত্বারি মায়োভবায় বিষ্ণুস্ত্বা নয়তু॥ পঞ্চ পশুভ্যো বিষ্ণুস্ত্বা নয়তু ॥ ষড্রায়স্পোষায় বিষ্ণু-স্ত্বা নয়তু॥ সপ্ত সপ্তভ্যো হৌত্রাভ্যো বিষ্ণুস্ত্বা নয়তু॥৬॥ সখা সপ্তপদী ভব সখ্যং তে গমেয়ং সখ্যং তে মাযোষাঃ সখ্যং তে মায়োষ্ঠাঃ ॥৭॥ সুমঙ্গলী রিয়ং বধূ রিমাং

বললাভায় 'নয়তু'। 'বিষ্ণুঃ' 'ত্বাম্' 'ত্রীণি' পদানি 'ব্রতায়' পঞ্চ-মহাযজ্ঞান্তর্গত-বলি-কর্ম্মণে 'নয়তু'। 'বিষ্ণুঃ' 'ত্বাম্' 'চত্বারি' পদানি 'মায়োভবায়' সৌখ্যে 'নয়তু'। 'বিষ্ণুঃ' 'ত্বাম্' 'পঞ্চ' পদানি 'রায়স্পোষায়' ধনস্য পোষণায় 'নয়তু'। 'বিষ্ণুঃ' 'ত্বাম্' 'সপ্ত' পদানি 'সপ্তভ্যঃ হৌত্রাভ্যঃ' যজ্ঞীয়-সপ্ত-র্ত্বিক্প্রাপ্তয়ে 'নয়তু' ॥ ৬ ॥

'সপ্তপদী' সপ্তপদাক্রান্তা ত্বং কন্যা 'সখা' মম সহচারিণী 'ভব'; অহঞ্চ 'তে' তব 'সখ্যং' 'গমেয়ম্' উপভুঞ্জেয়ম্।

হে কন্যে! এই সর্ব্বব্যাপী দেবতা অন্নলাভের জন্য এক পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন। বললাভের জন্য দ্বিতীয়। নিত্য কার্য্য পঞ্চ মহাযজ্ঞাদি সিদ্ধির জন্য তৃতীয়। সৌখ্যের জন্য চতুর্থ। পশুলাভের জন্য পঞ্চম। ধনরক্ষার জন্য ষষ্ঠ। সপ্ত ঋত্বিক্ লাভের জন্য অর্থাৎ সম্পত্যাদি হইলে কোন প্রশস্ত কাম্য যাগাদি কার্য্য করিবার জন্য ঋত্বিক্ আবশ্যক হইয়া থাকে, সেই অবস্থা সিদ্ধির জন্য, সপ্তম পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন ॥৬

৬—বিরাট্‌ছন্দঃ। বিষ্ণুর্দেবতা। পদাক্রমণে বিনিয়োগঃ।

৭—নামকী পঙ্‌ক্তিচ্ছন্দঃ। আশাস্যমানা দেবতা। আশাসনে বিনিয়োগঃ।

সমেত পশ্যত॥ সৌভাগ্য মস্যৈ দত্ত্বা যাথাস্তং বিপরে-তন॥৮॥ সমঞ্জন্তু বিশ্বে দেবাঃ সমাপো হৃদয়ানি নৌ॥

'তে' তব ময়া সহ 'সখ্য' 'যোষাঃ' স্ত্রিয়ঃ বিদ্বিষিকাঃ সমস্তাঃ 'মা' বিচ্ছিন্দন্তু ইতি শেষঃ। অপিতু 'মায়োষ্ট্যাঃ' অস্মৎ সুখহিতৈষিণ্যঃ স্ত্রিয়ঃ 'তে' তব তৎ সখ্যং ময়া সহ সখিত্বং বর্দ্ধয়ন্ত্বিতি শেষঃ ॥৭॥

হে ঈক্ষকাঃ! যূয়ং 'সমেত' একত্রীভূত্বা আগচ্ছত, এত্য চ 'ইয়ং' পরিণীতা 'বধূঃ' 'সুমঙ্গলীঃ' কল্যাণী ইতি মত্বা 'ইমাং' 'পশ্যত!' কিঞ্চ 'অস্যৈ' 'সৌভাগ্য' দত্ত্বা (আশীর্ভিরিতিযাবৎ) 'অস্তং' গৃহং 'বিপরেতন যাথাঃ' প্রত্যাবৃত্তং গচ্ছত ॥ ৮ ॥

'বিশ্বেদেবাঃ' দৃশ্যমানাঃ দীপ্যমানাঃ সমস্তাঃ পদার্থ-জাতাঃ 'নৌ' আবয়োঃ 'হৃদয়ানি' 'সমঞ্জন্তু' শোধয়ন্তু। 'আপঃ'

এই একত্র সপ্তপদগমনা কন্যা, তুমি চিরদিনের জন্য আমার সহচারিণী হও! আমি ত্বদীয় সখ্য ভোগ করি! তোমার সহিত সুদৃঢ় সংস্থাপিত এই সখ্য (ঘরভাঙানি) বিচ্ছেদকারিণী স্ত্রীগণে বিচ্ছিন্ন করিতে না পারে! বরং অস্ম-দাদির হিতৈষিণা ভদ্রা স্ত্রীরা এই অভিনব সঞ্জাত সখ্য সদুপ-দেশ প্রদানাদি দ্বারা ক্রমে পরিবর্দ্ধিত করিতে থাকুন ॥৭

হে পরিদর্শকগণ! তোমরা একত্র হইয়া এই অগ্নি-সমীপে আগমন কর, অনন্তর এই পরিণীতা বধূকে কল্যাণ-কারিণী বিবেচনায় দর্শন কর এবং ইহাকে আশীর্ব্বাদ-বলে সৌভাগ্য প্রদান করত নিজ নিজ নিকেতনে প্রতি গমন কর ॥৮

৮—অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। আশাসমানা দেবতা। দর্শক-প্রতিমন্ত্রণে বিনিয়োগঃ।

সংমাতরিশ্বা সং ধাতা সমুদেষ্ট্রী দধাতু নৌ ॥৯॥ গৃভ্ণা-মি তে সৌভগত্বায় হস্তং ময়া পত্যা জরদষ্টি র্যথাসঃ ॥ ভগো অর্য্যমা সবিতা পুরন্ধির্মহ্যং ত্বা দুর্গার্হপত্যায় দেবাঃ ॥১০॥ অঘোরচক্ষু রপতিঘ্ন্যেধি শিবা পশুভ্যঃ

জলদেবতাঃ 'সম্' অঞ্জন্তু-ইতি কর্ষণীয়ঃ। 'মাতরিশ্বা' বায়ুঃ 'সম্' অঞ্জন্তু। 'ধাতা' প্রজাপতিঃ 'সম্' অঞ্জন্তু। কিঞ্চ 'উ-দেষ্ট্রী' দেবী 'নৌ' আবয়োঃ হৃদয়ানি 'সংদধাতু' একীকুর্ব্বন্তু ॥৯॥

হে কন্যে! 'পুরন্ধিঃ' পুর-রক্ষকরূপঃ 'ভগঃ' 'অর্য্যমা' 'সবিতা' চ নামভেদেন বিভিন্না এতে 'দেবাঃ' 'ত্বা' ত্বাং 'গার্হপত্যায়' গার্হস্থ্য-কার্য্য-নির্ব্বাহায় 'মহ্যম্' 'অদুঃ'। ততশ্চ 'ময়া পত্যা' 'জরদষ্টিঃ' জরান্ত যাবৎ 'যথা অসঃ' যথা ভবসি তথা 'সৌ-ভগত্বায়' সৌখ্যায় 'তে' তব 'হস্তং' পাণিম্ 'গৃভ্ণামি' গৃহ্ণামি ॥১০॥

এই সমস্ত দেদীপ্যমান পদার্থসকল আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, জলদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, অন্তরীক্ষচারী বায়ুদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, প্রজাপতি (আকাশ) আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন। সদুপদেশকারিণী ভদ্র মহিলাগণ আমাদের উভয়ের হৃদয়-দ্বয়ের ঐক্য সম্পাদন করুন ॥৯

হে কন্যে! অর্য্যমা, ভগ, সবিতা প্রভৃতি নাম ভেদে বিভিন্ন পুর-রক্ষক এই সূর্য্য দেবতা এই উদ্বাহ কার্য্যে সাক্ষী রূপে

৯—অনুষ্টুব্‌ছন্দঃ। বিশ্বেদেবাদ্যা দেবতাঃ। মূর্দ্ধাভিষেচনে বিনিয়োগঃ।

সুমনাঃ সুবর্চ্চাঃ। বীরসূর্জ্জীবসূ র্দেবকামা স্যোনা শন্নো ভব দ্বিপদে শং চতুষ্পদে॥১১॥ আ নঃ প্রজাং জনয়তু প্রজাপতি রাজরসায় সমনক্ত্বর্য্যমা॥ অদুর্ম্মঙ্গলীঃ

হে কন্যে! ত্বম্ 'অঘোরচক্ষুঃ' অক্রূরদৃষ্টিঃ 'অপতিঘ্নী' অবিধবা, 'পশুভ্যঃ শিবা' গো-বৎসাদি-পালন-কারিণী, 'সুমনাঃ' সহৃদয়া, 'সুবর্চ্চাঃ' তেজস্বিনী, 'বীরসূঃ' পুত্রপ্রসূতিঃ, 'জীবসূঃ' জীবৎপুত্রা 'দেবকামা' পঞ্চযজ্ঞানুকূলা 'স্যোনা' সুখকরী কিং বহুনা—'নঃ' অস্মাকং সর্ব্বথৈব 'শং' কল্যাণকরী 'এধি' ভব। কিন্তু অন্যস্মিন্নপি দ্বিপদে 'চ' অপিচ 'চতুষ্পদে' প্রাণিজাতৌ 'শং' কল্যাণকরী 'ভব' ॥১১॥

হে কন্যে! 'প্রজাপতিঃ' 'নঃ' অস্মাকং 'প্রজাং' পুত্রপৌত্রাদিকম্ 'আ' আভিমুখ্যেন 'জনয়ন্তু'। 'অর্য্যমাঃ' সঃ তান্ 'সমনক্তু' অবস্থিত থাকিয়া তোমাকে গার্হস্থ্য কার্য্য সম্পাদানার্থ আমায় সমর্পন করিয়াছেন, আমিও পালনকারী হইয়া জরাবস্থা পর্য্যন্ত যতদিন তুমি জীবিতা থাকিবে তাবৎ কালের জন্য সুখ-ভোগাশয়ে তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ॥১০

হে কন্যে! তুমি মন্দেক্ষণা ও পতিঘাতিনী না হইয়া-গো-বৎসাদির পালন কারিণী, সহৃদয়া, তেজস্বিনী, জীবৎ-সন্ততি, পঞ্চযজ্ঞান্তর্গত বলি কার্য্য-পরায়ণা, সুখকরী—অধিক কি, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের বংশের কল্যাণ-সাধিনী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চতুষ্পদ প্রাণীদের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১১

১০—ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ। ভগাদয়ো দেবতাঃ। পাণিগ্রহণে বিনিয়োগঃ।

১১—ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ। কন্যা দেবতা। আশাসনে বিনিয়োগঃ।

পতিল্লোক মাবিশ শং নো ভব দ্বিপদে শং চতুষ্পদে॥১২॥ ইমাং ত্ব মিংদ্ব মোঢ্বঃ সুপুত্রাং সুভগাংকৃধি ॥ দশাস্যাং পুত্রানাধেহি পতিমেকাদশং কুরু ॥১৩॥ সংম্রাজ্ঞী শ্বশুরে

রূপগুণাদিভির্ব্যঞ্জয়ন্তু। 'মঙ্গলীঃ' মঙ্গলাকারিণ্যো দেবতাঃ ত্বাং মহ্যম্ 'অদুঃ' দত্তবন্তঃ, অতস্ত্বং 'পতিলোকম্' 'আবিশ'। এবং সর্ব্বথৈব 'নঃ' অস্মাকং 'শং' কল্যাণী 'চ' অপিচ অন্যস্মিন্নপি 'দ্বিপদে' 'চতুষ্পদে' প্রাণিজাতৌ 'শং' কল্যাণী ভব ॥ ১২ ॥

হে 'ইন্দ্র!' ঐশ্বর্য্যমান্ দেব 'মীঢ্বঃ' দ্যুলোকস্য সেক্তা তর্পয়িতা 'ত্বম্' 'ইমাং' কন্যাং 'সুপুত্রাং' সত্পুত্রবতীং 'সুভগাং' সৌভাগ্যশালিনীং 'কৃধি' কুরু। কিঞ্চ 'অস্যাং' কন্যায়াং 'দশ পুত্রান্' 'আধেহি' আধানং কুরু অপিচ অস্যাঃ 'পতিম্' ভর্ত্তারং তৈঃ সহ সঙ্কলনয়া 'একাদশং' 'কুরু' ॥১৩॥

হে কন্যে! প্রজাপতি আমাদের পুত্র পৌত্রাদি প্রদান করুন, অর্য্যমা তাহাদিগকে রূপগুণাদিতে প্রসিদ্ধ করুন। মঙ্গল-কারিণী দেবীরা তোমাকে আমায় সমর্পন করিয়াছেন অতএব তুমি পতিগৃহে প্রবেশ কতিেছ, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের কল্যাণ-কারিণী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চতুষ্পদ প্রাণিগণের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১২

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্! দেব! তুমি এই কন্যাকে সৎপুত্রজননি, সৌভাগ্যশালিনী কর এবং কন্যার দশটি গর্ভ পালন কর, ঐ দেশের সহিত পতিকে সঙ্কলন করিলে ইহার একাদশ জনা রক্ষক হইতে পারিবে। ॥১৩

১২—জগতীচ্ছন্দঃ। প্রজাপতির্দেবতা। আশাসনে বিনিয়োগঃ।

১৩—অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। ইন্দ্রো দেবতা। আশীঃ-প্রার্থনে বিনিয়োগঃ।

भव संम्राज्ञी श्वश्र्वां भव॥ नानान्दरि संम्राज्ञी भव संम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥१४। मम व्रते ते हृदयं दधातु मम चित्त मनुचित्तन्ते अस्तु ॥ मम वाच मेकमना जुषस्व बृहस्पति स्त्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥१५ ॥

कन्ये ! त्वं 'श्वशुरे' श्वशुर-मनोरञ्जने 'संम्राज्ञी प्रधाना' 'भव'। 'श्वश्र्वां' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'ननान्दरि' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'देवृषु' देवरेषु 'अधि' अधिकृत्य 'सम्राज्ञी' भवेति अनुकर्षणीयः ॥१४॥

कन्ये ! 'ते' तव 'हृदयं' 'ममव्रते' मदीय-कर्मणि 'दधातु' धेहि धारय। 'ते' 'चित्तं' 'मम' 'अनुचित्तम्' 'अस्तु'। त्वम् 'एकमनाः' सती मम' वाचम्' जुषस्व' सेवस्व। 'बृहस्पतिः' जगत्पतिर्देवः त्वां 'मह्यं' 'नियुनक्तु' मां प्रसादयितुं मनोरञ्जिनीं करोतु ॥१५॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथम-प्रपाठकस्य द्वितीयःखण्डः ॥२॥

হে কন্যে ! তুমি শ্বশুর, শশ্রু, ননন্দা, দেবর প্রভৃতি তাবৎ পরিজনের উপরেই আধিপত্য করিতে সক্ষমা হও ॥১৪

হে কন্যে ! তোমার হৃদয় আমার কার্য্যে নিযুক্ত কর, তোমার চিত্ত আমার চিত্তের অনুগামী হউক, তুমি একমনা হইয়া আমার আজ্ঞা প্রতিপালন কর। এই বৃহৎ জগতের পালয়িতা দেবতা তোমাকে আমার মনোরঞ্জনে নিযুক্ত করিতেছেন ! ॥১৫

१४—अनुष्टुप्छन्दः। कन्या देवता। सम्राज्ञीकरणे विनियोगः।

१५—त्रिष्टुप्छन्दः। प्रार्थ्यमान देवता। एकीभाव-प्रार्थने विनियोगः।

अथ: तृतीय खण्ड:—

लेखा सन्धिषु पक्ष्मस्वावर्त्तेषु च यानि ते॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्व्वाणि शमयाम्यहम्॥ १ ॥ केशेषु यच्च पापक मीक्षिते रुदिते च यत्॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्व्वाणि शमयाम्यहम्॥२॥ शीलेषु यच्च पापकं भाषिते

हे कन्ये ! 'ते' तव 'लेखा-सन्धिषु' लेखानां रेखानां सन्धयो यत्र तादृशेषु मूर्द्ध-प्रदेशेषु, किञ्च 'पक्ष्मसु' चक्षुर्लोमसु 'च' अपिच 'आवर्त्तेषु' नाभिरन्ध्रादिषु 'यानि' अपचिह्नानि (सन्तीति शेषः)—अहं पाणिग्रहः 'तानि सर्व्वाणि' 'पूर्णाहुत्या' अनया शेषाहुत्या 'समयामि' उपशमितानि करोमि ॥ १ ॥

हे कन्ये ! 'यच्च' 'पापकं' पापं अशुभकारं 'ते' तव 'केशेषु (अस्तीति शेषः) 'च' अपिच 'ईक्षिते दर्शन-क्रियायां 'उदिते' चलिते गमन क्रियायां 'यत्' अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥२॥

হে কন্যে ! তোমার শরীরস্থ রন্ধ্রগত রেখা সমস্তের সন্ধি সকলে, চক্ষুরিন্দ্রিয়ের পরিরক্ষক পক্ষ্মসকলে, এবং নাভি কূপাদি প্রদেশে যে সকল অমঙ্গল চিহ্ন আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥ ১

হে কন্যে ! তোমার কেশ সমস্তে যে পাপ আছে এবং তোমার ঈক্ষণে, চলনে, যাহা কিছু পাপ আছে— আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥২

१—लिखित्यादीनां मन्त्राम्—अनुष्टुप् छन्दः । अभिधीयमाना देवता । पाणि-ग्रहस्याज्यहोमे विनियोगः ।

हसिते च यत् ॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥३॥ आरोकेषु च दन्तेषु हस्तयोः पादयोश्च यत्॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥४॥ ऊर्वोरुपस्थे जङ्घयोः सन्धानेषु च यानि ते॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥५॥यानि कानि च घोरा-

हे कन्ये ! 'ते' तव 'शीलेषु' व्यवहारेषु 'यत्' 'पापकं' यच्च 'भाषिते' कथन-क्रियायां 'च' अपिच 'हसिते' हसन-क्रियायां पापकम् अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ३ ॥

हे कन्ये ! 'ते' तव 'आरोकेषु' दन्तान्तरेषु (मेड़े इति प्रसिद्धेषु) 'च' अपिच 'दन्तेषु', 'हस्तयोः', 'पादयोः' 'यच्च' पापकम् अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ४ ॥

हे कन्ये ! 'ते' तव 'ऊर्वोः' ऊरु-द्वययोः 'उपस्थे' गोपनीये इन्द्रिये 'जङ्घयोः' 'च' अपिच 'सन्धानेषु' अन्यान्य-प्रदेशेषु 'यत्' पापकं अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ५ ॥

কন্যে! তোমার ব্যবহারে যে পাপ আছে, এবং তোমার কথনে, হসনে, যে পাপ প্রকাশ পায়—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৩

হে কন্যে ? তোমার দন্তের মেড়েগুলিতে এবং দন্তসকলে, হস্তদ্বয়ে, ও পাদদ্বয়ে যে পাপ আছে— আমি এই শেষ অহুতিদ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৪

হে কন্যে ! তোমার উরুদ্বয়ে, উপস্থেন্দ্রিয়ে, জঙ্ঘাদ্বয়ে এবং অন্যান্য সন্ধি প্রদেশে যে পাপ আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৫

णि सर्व्वाङ्गेषु तवाभवन् । पूर्णाहुतिभि राज्यस्य सर्व्वाणि तान्यशीशमम् ॥६॥ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्व मिदं जगत् ॥ ध्रुवासः पर्व्वता इमे ध्रुवा स्त्री पति-कुले इयम् ॥ ७ ॥ अन्नपाशेन मणिना प्राण-सूत्रेण

'च' अपिच हे कन्ये ! 'तव' सर्व्वाङ्गेषु' समस्त-शरीरांशेषु 'यानि कानि' 'घोराणि' पापानि 'अभवन्'—'अहं' 'तानि सर्व्वाणि' 'आज्यस्य' घृतस्य 'आहुतिभिः' 'अशीशमम्' शमित-वानिव ॥ ६ ॥

हे प्रार्थ्यमान-देव ! यथा इयं 'द्यौः' 'ध्रुवा' स्थिरा, इयं 'पृथिवी' 'ध्रुवा', 'इदं' दृश्यमानं विश्वम् सर्व्वं जगत् चरा-चरं समस्तं 'ध्रुवम्', 'इमे' दृश्यमानाः पर्व्वताः गिरयश्च 'ध्रुवासः' ध्रुवाः स्थिराः, 'इयं' 'स्त्री' 'पतिकुले' अत्र पतिगृहे, तथैव 'ध्रुवा' भवत्विति शेषः ॥ ७ ॥

এবং হে কন্যে ! তোমার সর্ব্বাঙ্গে যেসকল ঘোরতর পাপ হইয়াছে—আমি এই ঘৃতের পূর্ণাহুতি প্রদানে তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৬

হে প্রার্থ্যমান দেব ! যেমন এই দ্যুলোক চিরস্থায়ী, এই পৃথিবী চিরস্থায়িনী, এই পরিদৃশ্যমান সমস্ত চরাচর চিরস্থায়ী, এই অচলরাজিও চিরস্থায়ী—এই স্ত্রীও, এই পতিগৃহে সেই-রূপ চিরস্থায়িনী হউক ॥৭

৭—अनुष्टुप् छन्दः । अभिधीयमाना देवता । अनुमन्त्रणे विनियोगः ।

ণিনা॥ বধ্নামি সত্যগ্রন্থিনা মনশ্চ হৃদয়ঞ্চ তে॥৮॥ যদেতদ্ধৃদয়ং তব তদস্তু হৃদয়ং মম॥ যদিদꣳ হৃদয়ং মম তদস্তু হৃদয়ং তব॥ ৯॥ অন্নং প্রাণস্য পড্বিꣳ

হে বধু! 'তে' তব 'মনঃ' চিত্তং 'চ' অপিচ 'হৃদয়ং' ভাবং 'বধ্নামি' বন্ধনং করোমি স্ববশং নয়ামীত্যর্থঃ। কথম্? ইত্যাহ—'মণিনা' মণিতুল্যেন, রত্ন-সদৃশেন 'প্রাণ-সূত্রেণ' অপিচ 'সত্য-গ্রন্থিনা' সত্যরূপ-গ্রন্থিনা। অয়ং ভাবঃ—তুভ্যং মণিময়ং যদিদং অন্নম্ দদামি তব হৃদয়স্য মনসশ্চ বন্ধনায় তৎ পাশরূপং ভবতি, যদিদং রত্নতুল্যং মদীয়ং প্রাণসঙ্গং তৎ সমস্তমেব তুভ্য মুৎসৃজে, তৎসৃষ্টঞ্চৈতৎ তৎপাশ-বন্ধনায়োপযোগি সূত্রং ভবতি, তত্র চ গ্রন্থিঃ সত্য-বচনং প্রতিজ্ঞা-কথনমিতি ॥ ৮ ॥

হে বধু! 'যৎ এতৎ' অনুভূতং 'তব' সম্বন্ধি 'হৃদয়ং' 'তৎ' 'মম' সম্বন্ধি 'অস্তু' ভবতু—কিঞ্চ, 'মম' 'যৎ' 'হৃদয়ং' 'তৎ' 'তব' 'অস্তু' আবয়োরৈক্য-হৃদয়ং ভবতু ইত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥

হে বধু! তোমার মন ও হৃদয় মণিতুল্য অন্নদানরূপ পাশে এবং রত্ন সদৃশ প্রাণরূপ সূত্রে ও সত্যস্বরূপ গ্রন্থি দ্বারা বন্ধন করিতেছি ॥৮

হে বধু! এই যে ত্বদীয় হৃদয়—ইহা আমার হউক অর্থাৎ তুমি মর্ম্মবেদনা পাইলে সেই যাতনা আমার হউক এবং আমার এই হৃদয় তোমার হউক অর্থাৎ আমার মর্ম্মবেদনা তোমার মর্ম্মাঘাত-কর হউক। এইরূপ তোমার সুখে আমার সুখ এবং আমার সুখে তোমার সুখ হউক ॥৯

৮—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। অন্ন দেবতা। অন্ন-প্রাশনে বিনিয়োগঃ।
৯—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। প্রার্থ্যমানা দেবতা। হৃদয়ৈক্যে বিনিয়োগঃ।

ঘ স্তেন বধ্নামিত্বাসৌ ॥ ১০ ॥ সুল্মকিংশুকং শল্মলিং বিশ্বরূপং সুবর্ণবর্ণং সুকৃতং সুচক্রম্। আরোহ সূর্য্যে অমৃতস্য নাভিং স্যোনং পত্যে বহন্তু কৃণুষ্ব ॥১১॥

হে বধু! 'অন্ন' অদনীয়ং বস্তুজাতং 'প্রাণস্য' বায়োঃ 'পড়্বিংশঃ' বন্ধনং যতঃ, অতঃ 'তেন' অন্নেন 'ত্বা' ত্বাং 'বধ্নামি' বন্ধনং করোমি ॥ ১০ ॥

হে 'সূর্য্যে!' যথা সূর্য্যা তেজোরূপা তদ্বত্তেজস্বতি! ত্বং 'সুচক্র' সুন্দর-চক্রোপেতম্ ইমং রথম্ 'আরোহ' সুখেনারোহণং কুরু। কীদৃশং রথমিত্যাহ—'কিংসুকং' পলাশ-কুসুমমিব রক্তবর্ণং, 'শল্মলিং' শাল্মলি-কুসুমমিব আরাদিবিশিষ্টং 'বিশ্বরূপং' বিবিধং, 'সুবর্ণবর্ণং' রক্তপীতাভং, 'সুকৃতং' সুনির্ম্মিতং। ইমে রথাশ্বাঃ 'অমৃতস্য' কল্যাণস্য 'নাভিম্' উত্পত্তিস্থানং ত্বাং 'বহন্তু'। ত্বঞ্চ 'পত্যে' ভর্ত্রে 'স্যোনং' সুখং 'কৃণুষ্ব' কুরু ॥ ১১ ॥

হে বধূ! এই যে সমস্ত অদনীয় বস্তু—ইহাই প্রাণের রক্ষণোপায় বন্ধন স্বরূপ হইয়া থাকে, অতএব এই অন্নদানে তোমাকে আবদ্ধ করিতেছি ॥১০

হে সূর্য্যতুল্য তেজস্বতি! তুমি এই—পলাশ কুসুমের ন্যায় রক্তবর্ণ, শিমুল গুচ্ছের চিত্রে চিত্রিত, সুবর্ণ বর্ণ, বিবিধ চিত্রে সুশোভিত, সুন্দর চক্র-সমন্বিত, উৎকৃষ্ট কারুবর-বিনির্ম্মিত রথে আরোহণ কর। এই রথের অশ্বগণ কল্যাণের আকর তোমাকে ভালরূপে বহন করুক এবং তুমি সর্ব্বদা পতি যাহাতে সুখী হন তাহাই করিবা ॥১১

১০—দ্বিপাদ্ গায়ত্রীচ্ছন্দঃ। অন্ন দেবতা। অন্নস্তুতৌ বিনিয়োগঃ।
১১—ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। কন্যা দেবতা। রথারোহণে বিনিয়োগঃ।

মা বিদন্ পরিপন্থিনো য আসীদন্তি দম্পতী সুগেভি র্দুর্গমতীতা মপদ্রান্ত্বরাতয়ঃ॥১২॥ ইহ গাবঃ প্রজায়ধ্বমিহাশ্বা ইহ পূরুষাঃ। ইহো সহস্রদক্ষিণো পি পূষা নিষীদ তু॥১৩॥ ইহ ধৃতি রিহ স্বধৃতি রিহ রন্তি রি-

'যে' 'পরিপন্থিনঃ' দস্যবঃ 'আসীদন্তি' পথীতি শেষঃ, তে ইমৌ 'দম্পতী' জায়াপতী রথারূঢ়ৌ ইতি 'মা বিদন্' ন হি বিদিতা ভবেয়ুঃ। কিন্তু 'সুগেভিঃ' সুগমৈ র্মার্গৈঃ 'দুর্গম্' দুর্গমং পন্থানম্ 'অতীতাম্' ব্যতীতাম্। অন্যে পি 'অরাতয়ঃ' শত্রবঃ 'অপদ্রান্তু' অপগতা যথা স্যুস্তথা পলায়ন্তু॥ ১২ ॥

'ইহ' বধূবর সম্বন্ধিনি গৃহে 'গাবঃ' 'প্রজায়ধ্বম্' বহুলা ভবন্তু। 'ইহ' 'অশ্বাঃ' প্রজায়ধ্বম্। ইহ 'পূরুষাঃ' পুত্রাদয়ো বংশাঃ প্রজায়ধ্বম্। 'উ' অপিচ 'সহস্র-দক্ষিণোऽপি' যস্য দেবস্য প্রসাদাৎ গো-সহস্র-দক্ষিণা অপি ক্রতবঃ সম্পদ্যন্তে সোऽসৌ 'পূষা' আদিত্যো দেবঃ 'ইহ' 'নিষীদন্তু, প্রসীদন্তু॥১৩॥

এই দম্পতীতে রথারূঢ় হইলেন পথি মধ্যে বিঘ্নকারী যে সমস্ত দস্যুদল আছে, তাহারা যেন জানিতে না পারে! দুর্গম পথ সকল যেন সুগমরূপে অতীত হয়! শত্রুরা সকলেই যেন দূর হইয়া যায়! ॥১২

এই বধূ ও বরসম্বন্ধী গৃহে গোধন পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক এবং এই গৃহে অশ্বসম্পত্তি পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক। এই গৃহে

১২—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। আশাস্যমানা দেবতা। চতুষ্পথায়ামন্ত্রণে।

১৩—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। আশাস্যমানা দেবতা। গৃহ-প্রবেশে বিনিয়োগঃ।

ह रमस्व। मयि धृति मयि स्वधृति मयि रमो मयि रमस्व ॥१४॥

हे बधू 'इह' अस्मिन् गृहे तव 'धृतिः' धैर्य्यम् अस्तु। 'इह' तव 'स्वधृतिः' स्वैरात्मीयैः धृति धारणम् एकत्र मेलनम् अस्तु। इह तव 'रन्तिः' रमणम् अस्तु। 'इह' 'रमस्व' आमोदेन तिष्ठ। किञ्च 'मयि' भर्त्तरि तव धृत्यादिकं विशेषेणास्तु इत्याह—धृति रित्यादि ॥ १४ ॥

পুত্রাদি বংশবৃদ্ধি হউক। অপর যে দেবতার প্রসাদে সহস্র দক্ষিণার উপযুক্ত যজ্ঞ সকল হইতে পারে সেই পূষা (সূর্য্য) দেবতা এই গৃহে সর্ব্বদা প্রসন্ন থাকুন ॥১৩

হে বধু! এই গৃহে তোমার স্থির মতি হউক, এই গৃহে তুমি সানন্দে কাল যাপন কর। এবং আমাতে তোমার স্থির মতি হউক, আমার আত্মীয় গণের সহিত তোমার মিলন হউক, আমাতে তোমার আশক্তি হউক, আমার সহিত তুমি সানন্দে কাল যাপন কর ॥১৪

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य तृतीयः खण्डः ॥ ३ ॥

—:०:—

१४—बृहतीच्छन्दः। कन्या देवता। होमे विनियोगः।

अथ चतुर्थः खण्डः ।

अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्याः पापी लक्ष्मीस्तामस्या अपजहि ॥१॥ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्याः पतिघ्नी तनूस्तामस्या अपजहि ॥ २॥ चन्द्र प्रायश्चित्ते

'प्रायश्चित्ते' प्रायश्चित्त कार्य्ये आराध्यमान ! 'अग्ने!' 'त्वं' देवानाम् अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तिः' दोषस्य उपशमिता 'असि' भवसि, अतः 'नाथकामः' नाथः अधिनायकः मे भूयादिति कामनावान् 'अहं 'ब्राह्मणः' 'त्वाम्' 'उपधावामि' अभ्यर्च्चामि । त्वं हि 'अस्याः' 'पापी लक्ष्मी' अशुभसम्बन्धिनी शोभा 'या' स्यात्, 'अस्याः' वध्वः 'ताम्' दुष्ट शोभाम् 'अपजहि' अपगतां कुरु ॥ १

'प्रायश्चित्ते' कार्य्ये आराध्यमान ! 'वायो !' 'त्वं' 'देवानाम्' अस्मदादीनां प्रायश्चित्तिः' दोषस्य उपशमिता 'असि' भवसि, अतः 'नाथकाम': 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'त्वा' 'उपधावामि' ; 'अस्यां' 'पतिघ्नी

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান অগ্নে ! তুমি দেদীপ্যমান আমাদিগের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি (অর্থাৎ আমার কেহ নাথ [মুরুব্বী] হউক এরূপ অভিলাষী) ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর অমঙ্গল শোভা যাহা থাকে তাহা দূর করিয়া দাও ॥ ১

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান বায়ো ! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে পতিবিয়োগ-কারণ দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥২

---

१ —अग्न्यादय इमे पञ्च मन्त्रा निगदाः (यजुर्विशेषः) । अग्न्यादि दैवताकाः । चतुर्थीति प्रसिद्ध होम कर्म्मणि विनियुक्ताः ।

ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকাম উপধাবামি যাস্যা অপুত্র্যা তনূস্তামস্যা অপজহি॥৩॥ সূর্য্য প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথ কাম উপধাবামি যাস্যা অপশব্যা তনূস্তামস্যা অপ-

পতি-হনন-কারিণী 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাং' তদ্দূষণ-বিশিষ্টাং তনূম্ 'অপজহি' দূষণ-বিনির্মুক্তাং কুরু ইত্যর্থঃ॥২

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান 'চন্দ্র!' 'ত্বং' 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাং 'প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি', অতঃ 'নাথ-কামঃ' 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বাম্' 'উপাধাবামি', 'অস্যাঃ' 'অ-পুত্র্যা' পুত্রায় হিতা পুত্র্যা তদ্বিপরীতা বন্ধ্যাত্বাদি-দূষণ-দূষিতা 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাম্' 'অপজহি' ॥৩

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান 'সূর্য্য!' 'ত্বং' 'দেবানাম্'

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে চন্দ্র! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে বন্ধ্যা হইবার কারণ যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৩

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে সূর্য্য! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে অ-পশব্য* দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৪

जहि ॥ ४ ॥ अग्नि वायु चन्द्र सूर्य्याः प्रायश्चित्तयो यूयं देवानां प्रायश्चित्तयस्थ ब्राह्मणोवो नाथकाम उपधावामि यास्याः पापी लक्ष्मी र्या पतिघ्नी यापुत्र्या या पशव्या ता अस्या अपहत ॥५॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा

अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तिः' दोषस्य उपशमिता 'असि', अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'त्वाम्' 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'अ-पशव्या' पशवे हिता पशव्या तद्विपरीता पशु-नाश-दूषण-दूषिता 'तनूः' 'या' स्यात्, 'अस्याः' 'ताम्' 'अपजहि' ॥४

हे अग्नि-वायु-चन्द्र-सूर्य्याः ! 'यूयं' 'देवानाम्' अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तयः' दोषस्य उपशमितारः 'स्थः' अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'वः' युष्मान् 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'पापी लक्ष्मी' 'या' तनूः, 'पतिघ्नी' 'या' तनूः, अपुत्र्या' 'या' तनूः, अ-पशव्या' 'या' 'तनूः, 'अस्याः' 'ताः' तद्विधाः समस्ताः तन्वः 'अपहत' दूरं कुरुत दूषण-दूषिताः तन्वः दूरीकृत्य निर्दुष्टाः कुरुतेत्यर्थः ॥ ५

হে অগ্নি, বায়ু, চন্দ্র ও সূর্য্য ! তোমরা আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাদিগকে অর্চ্চনা করিতেছি, তোমরা এই বধূর শরীরে অমঙ্গল শোভা, পতি বিয়োগ-কারণ দোষ, বন্ধ্যা দোষ, অপশব্য দোষ প্রভৃতি যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৫

* যে দোষে গো-মহিষাদি গৃহপশুর হানি হয়।

रूपाणि पिंशतु ॥ आसिंचतु प्रजापति र्धाता गर्भ-न्दधातु ते॥६॥ गर्भन्धेहि सिनीवालि गर्भन्धेहि सरस्वति। गर्भन्ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ७ ॥

हे बधु ! 'विष्णुः' व्यापको देवः 'ते' तव 'योनिं' गर्भस्थानं 'कल्पयतु' गर्भग्रहणोपयुक्तां करोतु। 'त्वष्टा' स्रष्टा सएव देवः 'रूपाणि' गर्भाकारान् 'पिंशतु' प्रकाशयतु। तमेव गर्भं गर्भस्थानं योनिं वा सएव 'प्रजापतिः' प्रजानां पालको देवः 'आ सिञ्चतु' सिञ्चनं करोतु जीवनीनामशक्तिविशेषः। 'धाता' धारयिता सएव देवः तं 'दधातु' धारयतु ॥ ६

हे 'सिनीवालि' चन्द्र-शक्ते ! अस्यां 'गर्भं' 'धेहि' धारय पोषय वा। हे 'सरस्वति' अस्मद्वाणि ! अस्यां 'गर्भं धेहि' अस्मत्कथनादेवास्यां गर्भमस्तु इतिभावः। हे बधु ! 'अश्विनौ देवौ' द्यावापृथिव्यौ ! ते तव 'गर्भम्' 'आधत्ताम्' धारयताम् कीदृशौ तावित्याह—'पुष्करस्रजौ' पुष्करमम्बरमेव स्रगिव स्रग् ययोः तौ अम्बरेण व्यापितावित्यर्थः ॥ ७

হে বধু ! বিষ্ণু (ব্যাপক দেব) তোমার যোনি প্রদেশকে গর্ভ গ্রহণোপযুক্ত করুন। স্রষ্টৃরূপী সেই দেব তাহাতে গর্ভাকার প্রকাশ করুন। প্রজাগণের পালক সেই দেবতা জীবনী শক্তিতে সেই গর্ভ সিঞ্চন করুন। ধারয়িতা রূপী সেই দেব তাহাকে ধারণ করুন, যাহাতে গর্ভ নষ্ট না হয়। ॥৬

হে চন্দ্রমার অমৃতময় শক্তে ! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে অস্মদ্ বাক্যামৃত ! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে বধু !

পুমাংসৌ মিত্রাবরুণৌ পুমাংসা বশ্বিনা বুভৌ ॥ পুমানগ্নিশ্চ বায়ুশ্চ পুমান্ গর্ভ স্তবোদরে ॥ ৮ ॥ পুমা-

হে বধু! যথা 'মিত্রাবরুণৌ' অহোরাত্রৌ কালৌ 'পুমাংসৌ' প্রজননশক্তিমন্তৌ, তত্রৈবৈতৎসমস্তস্য জায়মানত্বাৎ; 'উভৌ' দ্যাবাপৃথিবী 'অশ্বিনৌ' অশ্বাবিব বেগগামিনী 'পুংমাসৌ' পূর্ব্ববৎ; 'অগ্নিঃ' পার্থিবো দেবঃ 'চ' অপিচ 'বায়ুশ্চ' অন্তরীক্ষস্থো দেবশ্চ 'পুমান্'—'তব উদরে' অপি এবমেব 'পুমান্ গর্ভঃ' ভবতু ॥ ৮

হে বধু! যথা 'অগ্নিঃ' পার্থিবো দেবঃ 'পুমান্', যথা 'ইন্দ্রঃ' অন্তরীক্ষস্থো দেবো 'পুমান্', যথা 'বৃহস্পতিঃ' বৃহতাং বিপুলানাং রাশিচক্রাণাং পতিঃ পালকঃ সূর্য্যঃ দ্যুস্থোদেবঃ 'পুমান্'—এবমেব ত্বমপি 'পুমাংসং' প্রজনন-শক্তিমন্তং পুত্রং 'বিন্দস্ব' লভস্ব। কিঞ্চ তং লব্ধপুত্রম্ 'অনু' অন্যোঽপি 'পুমান্' পুমাংসঃ পুত্রাঃ 'জায়তাম্' তবোদরে ইতি শেষঃ ॥ ৯

এই অম্বর-মাল্য-ধারী দ্যব্যাপৃথিবী তোমার গর্ভ ধারণ করুন ॥৭

হে বধু! এই অহোরাত্রকালেই সমস্ত প্রজা উৎপন্ন হইতেছে অতএব ইহা যেরূপ পুরুষ (প্রজনন ক্রিয়াক্ষম) এই অশ্বের ন্যায় বেগগামী এই দ্যাবাপৃথিবী যেরূপ পুরুষ এবং এই পৃথিবীর দেবতা অগ্নি ও অন্তরীক্ষের দেবতা বায়ু যেরূপ পুরুষ—তোমার উদরেও সেইরূপ পুরুষ অর্থাৎ প্রজননক্ষম গর্ভ উৎপন্ন হউক ॥৮

হে বধু! এই পৃথিবীর দেবতা যেরূপ পুরুষ, অন্তরীক্ষের

नग्निः पुमानिन्द्रः पुमान्देवो बृहस्पतिः॥ पुमाꣳ सं पुत्रं विन्दस्व तं पुमाननु जायताम्॥ ८॥

দেবতা ইন্দ্র (আকাশ) যেরূপ পুরুষ, এই অতিবিপুল রাশিচক্রের পালন কর্ত্তা সূর্য্য যেরূপ পুরুষ—তুমিও সেইরূপ পুরুষ সন্তান লাভ কর। অপিচ সেই সন্তানের পরে তোমার উদরে আরও প্রজননশালী সন্তানগণ উৎপন্ন হউক॥৯

इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य चतुर्थः खण्डः॥ ४॥

——:०-:——

॥ अथ पञ्चमः खण्डः॥

अयमूर्ज्जावतो वृक्ष ऊर्ज्जीव फलिनी भव॥ पर्णं वनस्पते नुत्वा नुत्वा सूयताꣳ रयिः॥१॥ येनादितेः सोमानं

'अयम्' 'उर्ज्जावतः' उडुम्बरः वृक्षः 'उर्ज्जी' बहुतेजःसम्पन्नः 'इव' अयमिव त्वमपि 'फलिनी' बहुतरफलशालिनी बहुपुत्रवती भव। हे 'वनस्पते'! 'पर्णं' स्वकीयच्छदनं 'नुत्वा नुत्वा' भूयः प्रेरयित्वा तथासंख्यो वेतिभावः 'रयिः' धनं 'सूयताम्' प्रसूयताम् अस्यै इत्यर्थः॥ १

এই বহু-ফল-শালী তেজস্বী উড়ুম্বর বৃক্ষের ন্যায় তুমি পুত্ররূপ বহু-ফল-শালিনী হও। হে উড়ুম্বর বৃক্ষ! তোমার পত্র পত্র গণনা করিয়া তৎপরিমিত ধন ইহার জন্য প্রসব কর॥১

নয়তি প্রজাপতি র্মহতে সৌভগায়॥ তেনাহ মস্যৈ সীমানং নয়ামি প্রজা মস্যৈ জরদষ্টিং কৃণোমি॥২॥ রাকা মহং সুহবাং সুষ্টুতী হুবে শৃণোতু নঃ সুভগা বোধতু

'প্রজাপতিঃ' জগৎস্রষ্টা দেবঃ 'যেন' হেতুনা প্রজোৎপত্তি কামনাস্য 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাম্ মাতৃভূতস্য অণ্ডস্য 'সীমানং' অবধিম্ নয়তি নীতবান্—(দ্বিধাকরণেনেতি যাবৎ) 'তেন' এব হেতুনা 'অহম্' ভর্ত্তা অপি 'অস্যৈ' অস্যাঃ 'সীমানং' 'নয়ামি' উন্নয়নং উন্নতিশীলং করোমি। কিন্তু প্রজাপতেস্তথা নয়নে কিং নিমিত্তম্? উচ্যতে—'মহতে সৌভগত্বায়' অতিবিপুল-সৌভাগ্যায় তস্যাণ্ডস্যেতি শেষঃ, জগৎ-প্রকাশায়েতি যাবৎ—তথৈবাহমপি 'অস্যৈ' অস্যাঃ 'জরদষ্টি' জরাবস্থা পর্য্যন্ত-জীবিনীং 'প্রজাম্' 'কৃণোমি' করোমি; এতয়ৈব ক্রিয়য়েতি ভাবঃ অস্যা এতদেব মহৎ সৌভাগ্যম্, এতদর্থমেব সীমন্তোন্নয়নম্॥ ২

প্রজাপতি যে হেতুতে (প্রজোৎপত্তি কামনায়) চরাচর সমস্তের মাতা স্বরূপ অখণ্ড অণ্ডের দ্বিধাভাগ করত সীমার উন্নতি করিয়াছেন—আমিও (ভর্ত্তা) সেই হেতুতেই এই বধূর সীমন্তের উন্নতি করিতেছি। তাঁহার সেই সীমার উন্নয়ন ক্রিয়াতে সেই অণ্ডের বিপুল সৌভাগ্য প্রকাশ পাইয়াছে অর্থাৎ তাহাতেই এই সমস্ত আবির্ভূত হইয়াছে—আমিও এই সীমন্তোন্নয়ন ক্রিয়ার প্রভাবে ইহাকে মহৎ সৌভাগ্যবতী করিতেছি—ইহার প্রজা জরাবস্থ হইয়া বিনষ্ট হইবে, তাহাদের অকাল-মৃত্যু হইবে না সুতরাং ইহাকে শোকাতুরা হইতে হইবে না॥২

उपागहि सहस्र पोषं सुभगे रराणा ॥ ३ ॥ किं पत्मना ॥ सोव्यत्वपः सूच्या छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायुमुख्यम् ॥ ४ ॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभि र्द्ददासि दाशुषे वसूनि ॥ ताभि र्नो अद्य सुमना

'अहं' भर्त्ता सुष्टुनो 'सुस्तुतया' 'सुहवां' शोभनाह्वानां 'राकां' अमावास्यां तिथि-कालं 'हुवे' आह्वयामि। 'सुभगा' सौभाग्यवती सा देवी 'नः' अस्माकं एतत् आह्वानं 'शृणोतु;' किञ्च 'त्मना' आत्मना स्वयमेव 'बोधतु' बुध्यतु। अपिच सैवदेवी 'अपः' भविष्यमाणान् कर्मरूपान् पुत्रादीन् 'अच्छिद्यमानया' अभज्यमानया 'सूच्या' वेधनयन्त्रेण 'सीवातु'। अपरञ्च 'शतदायुमुख्यम्' शतदायुषु बहु-दानक्षमेषु मुख्यम् एवं 'वीरं' पुत्रं 'ददातु' ॥ ३

हे 'सुभगे' सौभाग्यवति ! 'ते' तव 'या' 'सुपेशसः' सुरूपाः 'सुमतयः' 'याभिः' सुरूप-सुमतिभिः 'दाशुषे' यजमानाय 'वसूनि' धनानि 'ददासि', 'ताभिः' मतिभिः सार्कं 'सुमनाः' प्रसन्नचित्तस्त्वं 'नः' अस्मभ्यम् 'सहस्रपोषं' बहु-प्रतिपालकं पुत्रं 'रराणा' ददाना सती 'अद्य' 'उपागहि' समागच्छ ॥४

সুন্দর স্তবে আহ্বানের উপযুক্ত অমাবশ্যা তিথিরূপ দেবতাকে আমি (ভর্ত্তা) আহ্বান করিতেছি। সৌভাগ্যবতী সেই দেবী আমাদের এই আহ্বান শ্রবণ করুন এবং আহ্বানের অভিপ্রায় আপনা হইতেই বুঝিয়া লউন। অপরঞ্চ ভবিষ্যমাণ পুত্রাদিকে যাহা ভাঙ্গিবার নহে এরূপ সূচি দ্বারা সীবন (সেলাই) করুন এবং বদান্যাগ্র-গণ্য প্রপুত্র দান করুন॥৩

অসি প্রজাং পশূন্ত্সৌভাগ্যং মহ্যং দীর্ঘায়ুষ্ট্বং পত্যুঃ ॥৫॥
যাতিরশ্চী নিপদ্যতে অহং বিধরণী ইতি। তাং ত্বা

ভর্ত্তা পৃচ্ছেৎ—হে বধু ! অত্র স্থাল্যাং 'প্রজাং' 'পশূন্', 'মহ্যং সৌভাগম্' 'পত্যুঃ' মম 'দীর্ঘায়ুষ্ট্বং' 'পশ্যসি' 'কিম্ ?' ॥ ৫ ॥

'যা' দেবতা অত্র শুভে কর্ম্মণি "তিরশ্চী" ন বাঞ্ছিতফল-বিঘ্নকর্ত্রী "নিপদ্যতে" ভবতি, "অহং" ভর্ত্তা তাং দেবতাং "বিধরণী" শুভদায়িনী 'ইতি' মত্বেতি শেষঃ 'তাং" "ত্বা" ত্বাং "সংরাধনীং" কার্য্যসাধিনীং দেবীং "অহং" ভর্ত্তা "ঘৃতস্যধারা" আহুত্যা 'যজে' অর্চ্চয়ামি ॥ তথাচার্চ্চন-মন্ত্রঃ——"সংরাধন্যৈ" কার্য্যসাধিন্যৈ "দেব্যৈ" ইষ্টফলদাত্র্যৈ—'দেব্যৈ' স্বাহেতি মন্ত্র-শেষঃ ॥ ৬ ॥

হে সৌভাগ্যবতি ! রাকে ! তোমার যে সুন্দর মতি সমস্ত আছে, যে মতি সমস্তে যজমানদিগকে বিবিধ ধনদান করিয়া থাক, সেই সমস্ত মতির সহিত প্রসন্ন মনে আমা-দিগকে বহুপোষী পুত্র প্রদানাশয়ে অদ্য আগমন কর ॥ ৪

ভর্ত্তা জিজ্ঞাসা করিবেন—

হে বধূ ! এই স্থালীতে পুত্র পৌত্রাদি প্রজা, গো মহি-ষীপ্রভৃতি গৃহপশু, মদীয় সৌভাগ্য, তোমার পতির অর্থাৎ আমার দীর্ঘায়ু দেখিতে পাইতেছ কি ? ৫

যে দেবতা এই শুভ কর্ম্মে বাঞ্ছিত ফলের বিঘ্নকারিণী হইতেছেন, আমি (ভর্ত্তা) তাঁহাকে শুভ-ফল-দায়িনী বিবেচনা করিয়া, কার্য্যসাধিনী সেই দেবতাকে ঘৃতের ধারা প্রদান পুরঃসর অর্চ্চনা করিতেছি ॥ যথা মন্ত্র—" কার্য্যসাধিনী, ইষ্টফলদায়িনী, দেবীকে এই ঘৃতাহুতি প্রদান করি" ॥ ৬

ष्टतस्य धाय्या यजे सर्व्वराधनीमहं ॥ सर्व्वराधन्यै देव्यै देष्ट्रौ ॥ ६ ॥ विपश्चित्पुच्छम भरत्तद्धातापुनराहरत् ॥ परे हि त्वं विपश्चित् पुमानयं जनिष्यतेऽसौ नाम ॥७॥ इय माज्ञे दमन्न मिद माय ि.दममृतम् ॥ ८ ॥ मेधां ते मित्रावरुणौ मेधामग्निर्दधातु ते ॥ मेधां ते अ-

एवं हि श्रुतम्—"विपश्चित्" देवः 'पुच्छं' पुत्रस्य प्रतिष्ठा-स्थानम् 'अभरत्' अहरत् 'तत्' तदेव प्रतिष्ठा स्थानम् 'धाता' देवः 'पुनराहरत्' आहरणं करोति। 'हि' यतः, अतः हे 'विपश्चित्' देव! 'त्वं' 'परेहि' आगच्छ प्रसन्नोभव, 'अयं' पुरुषः 'असौ नाम' एतन्नामकं पुत्रं 'जनिष्यति' उत्पा-दयतु ॥ ७ ॥

हे बालक! 'इयम्' 'आज्ञा' प्रज्ञा प्रज्ञावर्द्धकत्वात् प्रज्ञारूप-मेव 'इदम्' 'अन्नम्' 'आयुः' आयुष्कारत्वात्, 'इदम्' 'अमृतम्' प्राणाधारत्वात्, ॥ ८ ॥

हे 'कुमार!' 'ते' तव 'मेधां' पठित-श्रुत-धारणविषयां शक्तिं

এইরূপ শ্রুত আছে—যে, বিপশ্চিৎ দেবতা পুত্রের স্থান আহরণ করেন, বিধাতা তাহাই ধারণ করেন। অতএব বিপশ্চিৎ দেবতা তুমি প্রসন্ন হও এই পুরুষ আপনাকে দেখা-ইয়া) এই নামক পুত্রের উৎপাদক হউক।৭

হে বালক! এই প্রজ্ঞাবর্দ্ধক সুতরাং প্রজ্ঞাস্বরূপ অন্ন,আয়ু-র্ব্বদ্ধিকারক অতএব আয়ুঃস্বরূপ ও ইহা অমৃতস্বরূপ।৮

७—विपश्चिद्देवता। यजुः। गर्भाधानाङ्गकर्मणि विनियोगः।

८—बालक देवता। यजुः। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बालकस्य व्रीहियवचूर्णप्राशने विनियोगः।

শ্বিনৌ দেবা বাধত্তাং পুষ্করস্রজৌ ॥ ৯ ॥ যত্তেসুসীমে হৃদয়ং হিতমন্তঃ প্রজাপতৌ ॥ বেদাহং মন্যে তদ্ ব্রহ্মমাহং পৌত্রমঘং নি গাম্॥১০॥যৎপৃথিব্যা অনামৃতং দিবি

‘মিত্রাবরুণৌ’ অহোরাত্ররূপৌ দেবৌ ‘আধত্তাম্’ স্থাপয়তাম্। যথা ‘তে’ ‘মেধাম্’ ‘অগ্নিঃ’ দেবঃ ‘দধাতু’ স্থাপয়তু। তথা ‘তে’ ‘মেধাং’ ‘পুষ্করস্রজৌ’ অম্বরমালা-ধারিণৌ ‘অশ্বিনৌ’ সূর্য্যচন্দ্রমসৌ ‘দেবৌ’ প্রদীপ্তৌ “আধত্তাম্ স্থাপয়তাম্ ॥ ৯ ॥

হে চন্দ্র! ‘যৎ’ ‘তে’ তব ‘প্রজাপতৌ’ প্রজাপালকে ‘সুসীমে’ জ্যোৎস্নারূপ-শীতল-দ্রব্যে ‘অন্তঃ’ প্রবিষ্টতয়া “হৃদয়” সারভাগঃ ‘নি’ ‘হিতং’ স্থাপিতমস্তি, ‘অহং’ ‘তৎ’ ‘বেদ’ জানামি, ‘ব্রহ্ম’ সর্ব্বব্যাপকম্ ইতি ‘মন্যে’, ততশ্চাস্তি বালকান্তরেপি, অতঃ সম্ভাবয়ে—‘পৌত্রং’ পুত্রসম্বন্ধি ‘অঘং’ পাপফলং শোকাদিকং ‘মা গাম্’ নাপ্নুয়াম্ ॥ ১০ ॥

হে বালক! এই আহোরাত্র দেবতারা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন, এই অগ্নি দেবতা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন, অম্বরমালাধারী এই প্রদীপ্ত চন্দ্র সূর্য্য দেবতারা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন। ৯

হে চন্দ্র! প্রজাগণের পোষক ত্বদীয় শীতল জ্যোৎস্নার অন্তর্গত যে সার পদার্থ আছে, আমি তাহাকে সর্ব্বব্যাপী বলিয়া জানি, সুতরাং মদীয় বালকান্তরেও অবশ্য আছে; অতএব ভরসা করি—আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল (শোকাদি) প্রাপ্ত হইব না!।১০

৯—মিত্রাবরুণাদয়ো দেবতাঃ। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। সর্পিঃপ্রাশনে বিনিয়োগঃ।

১০—এষাং চতুর্ণাং চন্দ্রো দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। শিশোঃ প্রসবদিন-তৃতীয়স্যাং জ্যোৎস্নায়াং চন্দ্রদর্শনে বিনিয়োগঃ।

चन्द्रमसि श्रितं। वेदाम्हतस्याहं नाम माहं पौत्रमघ-
ंरिषम्॥११॥ इन्द्राग्नी शर्म यच्छतं प्रजापती। यथा
यन्न-प्रमीयेत पुत्रो जनित्र्या अधि॥ १२॥ यददश्च

'यत्' 'अमृतं' 'पृथिव्याः,' 'न' 'दिवि' द्युलोके 'चन्द्रमसि' त्वयि 'श्रितम्' आश्रितम्, 'तत्' 'अमृतस्य' गुणम् 'अहं' 'वेद' जानामि ; अतः सम्भावये—'पौत्रम्' पुत्र-सम्बन्धि 'अघम्' पाप-फलं शोकादिकं 'मा रिषम्' नाप्नुयाम् ॥ ११ ॥

'मे' मम 'प्रजायै' पुत्राय 'इन्द्राग्नी' देवते 'शर्म' कल्याणं 'यच्छतम्' ददताम्, 'प्रजापती' प्रजापतिः प्रजानां पालको देवः तथा कुरुतात् 'यथा' असौ 'पुत्रः' 'जनित्र्याः' जनन्या, 'अधि' उत्सङ्गे (जीवितायां मातरीति भावः)'न प्रमीयेत' न म्रियात् ॥ १२ ॥

যে অমৃত পৃথিবীতে নাই=দ্যুলোকে চন্দ্রমাকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে, সেই অমৃতের গুণ আমি অবগত আছি ; অতএব ভরসাকরি আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপফল) শোকাদি প্রাপ্ত হইব না!। ১১

ইন্দ্রাগ্নী দেবতারা আমার এই পুত্রকে কল্যাণ প্রদান করুন, প্রজাগণের পালক দেবতাও সেইরূপ করুন—যাহাতে জননীর ক্রোড়ে (অর্থাৎ জননী জীবিতা থাকিতে) এই পুত্রের মৃত্যু না হয় ॥১২

ন্দ্রমসি কৃষ্ণং পৃথিব্যা হৃদয়ঁ শ্রিতং। তদহং বিদ্বাঁস্তৎপশ্যন্ মাহং পৌত্র মঘঁরুদম্॥ ১৩॥ কোসি কতমোস্যেষোস্যমৃতোসি॥ আহস্পত্যং মাসং প্রবিশাসৌ॥১৪॥

‘চন্দ্রমসি’ ত্বয়ি ‘পৃথিব্যাঃ’ ‘হৃদয়ং’ ছায়ারূপম্ ‘কৃষ্ণং’ কৃষ্ণবর্ণং লাঞ্ছনং ‘শ্রিতম্’ ‘আশ্রিতম্ ‘অহং’ ‘বিদ্বান্’ পদার্থবিৎ ‘তৎ’ লাঞ্ছনং ‘পশ্যন্’ তত্বতো জানন্ আশাসে—‘পৌত্রম্’ পুত্রসম্বন্ধি ‘অঘ’ পাপফলং শোকাদিকম্ উপভুজ্য ‘মা রুদম্’ ন রুদ্যামিত্যর্থঃ ॥ ১৩ ॥

হে বালক ! ত্বং ‘কোসি’ কিন্নামধেয়োসি ? ‘কতমোসি’ অকালমরণধর্মাসি ? আহোস্বিৎ পূর্ণায়ুর্ভাগসি ? ন জানাসি চেচ্ছৃণু—“এষোঽসি” এতন্নামকঃ ভবসি কিন্তু “অমৃতোঽসি” অমরণধর্মা ভবসি। অতঃ ‘অসৌ’ এতন্নামকঃ ত্বং ‘আহস্পত্যং’ অহস্পতেঃ সূর্য্যস্য ইদং সংক্রান্তি-কৃতং সৌরং ‘মাসং’ কালং “প্রবিশ” উপভুঙ্ক্ষ ॥ ১৪ ॥

হে চন্দ্র! তোমাতে আশ্রিত পৃথিবীর ছায়াস্বরূপ যে কৃষ্ণবর্ণ লাঞ্ছন তাহার প্রকৃত তত্ব আমি অবগত আছি; ভরসা করি—তোমাকে পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল শোকাদি ভোগ করত ক্রন্দন করিতে হইবে না ॥ ১৩

হে বালক! তোমার কি নাম? তুমি কে? (অর্থাৎ অকাল-মৃত্যুর পথিক অথবা দীর্ঘায়ু)। যদি অবগত নহ, তবে শ্রবণ কর—তোমার এই নাম, তুমি পূর্ণায়ু হইবে; দিবাকরের কৃত (সৌর) এই মাসক্রমে কালাতিপাত কর ॥ ১৪

১৪—আদিত্য দেবতা। যজুঃ। নাম করণে বিনিয়োগঃ।

स त्वाह्ने परिददात्वहस्त्वा रात्र्यै परिददातु रात्रि-स्त्वाहोरात्राभ्यां परिददात्वहोरात्रौ त्वार्द्धमासेभ्यः परिदत्ता मर्द्धमासास्त्वा मासेभ्यः परिददतु मासा-स्त्वर्त्तुभ्यः परिददत्वृतवस्त्वा संवत्सराय परिददतु सं वत्सरस्त्वायुषे जरायै परिददात्वसौ॥ १५॥ अङ्गा

'सः' अहस्पतिः देवः 'त्वा' त्वां 'अह्ने' दिवसाय 'आ-युषे' आयुर्वर्द्धनार्थं 'परिददातु'; 'अहः' सच स्वकालेन संवर्द्ध्य 'त्वा' त्वां 'रात्र्यै' संवर्द्धनाय 'परिददातु'; 'रात्रिः' 'त्वा' त्वां 'अहोरात्राभ्यां' 'परिददातु'; 'अहोरात्रौ' 'त्वा' त्वां 'अर्द्ध-मासेभ्यः' पक्षेभ्यः 'परिदत्ताम्'; 'अर्द्धमासाः' पक्षसङ्घाः 'त्वा' त्वां 'मासेभ्यः' 'परिददतु'; 'मासाः' 'त्वा' त्वां 'ऋतुभ्यः' 'परि-ददतु'; 'ऋतवः' 'त्वा' त्वां 'संवत्सराय' 'परिददतु'; 'संवत्-सरः' 'त्वा' त्वां 'जरायै' आजराजीवनाय 'परिददातु'; 'असौ' त्वञ्च एतन्नाम्ना प्रसिद्धो भव॥ १५॥

হে বালক! এই দিবাপতি তোমার পরমায়ু বৃদ্ধির জন্য তোমাকে দিবাকালের করে সমর্পণ করুন; দিবা ঐ রূপে রাত্রির করে সমর্পণ করুন; অহোরাত্র উভয়ে এক-ত্রিত হইয়া মাসার্দ্ধের অর্থাৎ পক্ষ কালের হস্তে সমর্পণ করুন; মাসার্দ্ধগণ মাসসংঘের হস্তে সমর্পণ করুন; মাস সকল ঋতু-গণের হস্তে সমর্পণ করুন; ঋতুগণ সংবৎসর কালের হস্তে সমর্পণ করুন এইরূপে এক সংবৎসর দ্বিতীয় সংবৎসরের হস্তে দ্বিতীয় তৃতীয়ের হস্তে, তৃতীয় চতুর্থের হস্তে, এইরূপ ক্রমে জরা

১৫—আদিত্য দেবতা। নিগদঃ। নামকরণে বিনিয়োগঃ।

দঙ্গাত্ সংস্রবসি হৃদয়া দধিজায়সে ॥ প্রাণং তে প্রাণেন সন্দধামি জীব মে যাব দায়ুষম্ ॥ ১৬ । অঙ্গাদঙ্গাত্ সম্ভবসি হৃদয়া দধিজায়সে ॥ বেদো বৈ পুত্র

হে পুত্র ! ত্বং 'মে' মম 'অঙ্গাত্ অঙ্গাত্' মদীয়-সমস্তাবয়বাত্ সংস্রবসি' সংস্রুতো ভূনঃ ; কিঞ্চ 'হৃদয়াত্' মদীয়াত্ 'অধিজায়সে' উত্পন্নঃ ; অতঃ 'তে' তব 'প্রাণং' 'প্রাণেন' মদীয়েন আত্ম-প্রাণবিসর্জ্জনেনাপি -'সংদধামি' পোষয়ামি – পুত্র ! 'যাবদায়ুষং যাবত্ আয়ুষঃ অবধিঃ শ্রুত্যুক্তঃ তাবত্, শতবর্ষং 'জীব' ॥ ১৬ ॥

হে 'পুত্র !' যঃ ত্বং 'অঙ্গাত্ অঙ্গাত্' মদীয়াত্ প্রত্যবয়বাত্ 'সম্ভবসি' সমুত্পন্নোঽসি, 'হৃদয়াত্' মদীয়াত্ 'অধিজায়সে' অতঃ ত্বং 'বৈ' নিশ্চয়ং 'বেদঃ' বেদপাঠী 'নাম' প্রসিদ্ধঃ 'অসি' ভবসি লোকে (মম বৈদিকত্ব-প্রসিদ্ধেরিতি ভাবঃ) ; 'সঃ' ত্বং 'শরদঃ শতং' শতসংখ্যাকং শরত্ কালং 'জীব' ॥ ১৭ ॥

কাল পর্য্যন্ত ইহারা তোমাকে পরিবর্দ্ধন করুন এবং তুমি এই নামে প্রসিদ্ধ হও ॥ ১৫

হে পুত্র ! তুমি আমার প্রত্যেক অঙ্গ হইতে সংশ্রুত হইয়াছ অর্থাৎ আমার হস্ত হইতে তোমার হস্ত হইয়াছে, আমার পাদ হইতে পাদ, মুখ হইতে মুখ, নাসিকা হইতে নাসিকা ইত্যাদি ক্রমে আমার অঙ্গ সমস্ত হইতেই ত্বদীয় সমস্ত অঙ্গ হইয়াছে। তুমি আমার আত্মা স্বরূপ হৃদয়ের ধন। অতএব আমার স্বীয় প্রাণ বিসর্জ্জনেও ত্বদীয় প্রাণ পোষণীয়—পুত্র ! যাবৎকাল মনুষ্যের আয়ু হইতে পারে (অর্থাৎ শত বর্ষ) তাবৎ জীবিত হও ॥ ১৬

১৬—অস্য, পরস্য, তত্পরস্য চ—প্রজাপতিঃ দেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। মূর্দ্ধ্ন্যাঘ্রাণে বিনিয়োগঃ।

নামাসি স জীব শরদঃ শতম্॥ ১৭॥ অশ্মা ভব পরশুর্ভব হিরণ্যমস্তৃতং ভব॥ আত্মাসি পুত্র মা মৃথাঃ স জীব শরদঃ শতম্॥ ১৮॥ পশূনাং ত্বা হিঙ্কারেণাভিজিঘ্রাম্যসৌ॥ ১৯॥

হে 'পুত্র!' 'অশ্মা ভব' প্রস্তরবৎ দৃঢ়ীভব, 'পরশুর্ভব' পরশুবৎ স্বয়মচ্ছেদ্যঃ শত্রূণাং ছেদকশ্চ ভব, 'হিরণ্যং' সুবর্ণমিব 'অস্তৃতং' যত্নেন রক্ষণীয়ং 'ভব'; ত্বম্ 'আত্মাসি' 'মা মৃথাঃ' মৃত্যুং ন গচ্ছ, অপিতু 'সঃ' ত্বং 'শরদঃ শতং' কালং 'জীব'॥ ১৮

হে পুত্র! 'অসৌ' অহং 'ত্বা' ত্বাং 'পশূনাম্' গবাদীনাম্ ইব 'হিংকারেণ' অব্যক্ত-শব্দ-পূর্বকং 'অভিজিঘ্রামি' ত্বদীয়ং মস্তকমিতি যাবৎ॥ ১৯॥

হে পুত্র! যে হেতুক মদীয় প্রত্যেক অঙ্গ হইতে ত্বদীয় প্রত্যেক অঙ্গ গঠিত হইয়াছে এবং তুমি আমার হৃদয় হইতে উৎপন্ন হইয়াছ অতএব তুমি প্রসিদ্ধ বেদাধ্যায়ী হইবা, অতএব প্রার্থনা করি—তুমি শত শরৎ* আয়ু লাভ কর॥ ১৭

হে পুত্র! প্রস্তরের ন্যায় দৃঢকায় হও, পরশুর ন্যায় স্বয়ং অচ্ছেদ্য ও শত্রুর ছেদক হও, সুবর্ণের ন্যায় যত্নে রক্ষণীয় (অর্থাৎ গুণবান্) হও, তুমি আমার আত্মা হইতেছ—অকালে মৃত হইও না প্রত্যুত শত শরৎ জীবিত থাক॥ ১৮

হে পুত্র! এই আমি গোপ্রভৃতি পশুগণের ন্যায় অস্ফুট শব্দ পুরঃসর ত্বদীয় মস্তক আঘ্রাণ করি॥ ১৯

ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে প্রথম প্রপাঠকস্য পঞ্চমঃ খণ্ডঃ॥ ৫॥

১৭—প্রজাপতিঃ দেবতা। যজুঃ। শিরআঘ্রাণে বিনিয়োগঃ।

* সেকালে শরৎকালই বৎসরের প্রথম ঋতু বলিয়া স্বীকৃত হইত।

॥ अथ षष्ठः खण्डः ॥

आय मगात् सविता क्षुरेण ॥ १ ॥ उष्णेन वाय उदकेनैधि ॥ २ ॥ आपउन्दन्तु जीवसे ॥ ३ ॥ विष्णोर्द्दंष्ट्रोसि ॥ ४ ॥ ओषधे त्रायस्वैनम् ॥ ५ ॥ स्वधिते मैनं

हे कुमार ! "सविता" सवितृस्वरूपः 'अयं' नापितः 'क्षुरेण' वपनास्त्रेण सह क्षुरंगृहीत्वेति यावत् 'आ अगात्' आभिमुख्येन सयत्नः आगतः ॥ १ ॥

हे 'वायो' देव ! अत्रैव समये 'उष्णेन' 'उदकेन' सह 'एधि' एहि ॥ २ ॥

'आपः' जलदेवता कुमारस्यास्य 'जीवसे' निरुपद्रव-जीवनाय इमम् 'उन्दन्तु' क्लेदयन्तु ॥ ३ ॥

हे क्षुर ! त्वं 'विष्णोः' देवस्य 'दंष्ट्रोसि' दन्तो भवसि ॥ ४ ॥

हे 'ओषधे !' लाजारूप ! भक्ष्यद्रव्य ! 'एनं' बालकं 'त्रायस्व' निर्भयं कुरु ॥ ५ ॥

হে কুমার ! সবিতৃ-স্বরূপ এই নাপিত ক্ষুর লইয়া আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে ॥ ১

হে বায়ুরূপী নাপিত ! উষ্ণোদক গ্রহণ পুরঃসর আগমন কর ॥ ২

হে জলদেব ! এই কুমারের নিরুপদ্রব জীবিতার্থ এই মস্তক সিক্ত কর ॥ ৩

হে ক্ষুরদেবতা ! তুমি বিষ্ণুদেবতার দ্রংষ্টা স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

१—६ एषां षण्णां प्रजापतिः देवता । निगदाः । चूड़ाकरणाङ्गकार्य्ये विनियोगः ।

हिꣳसीः॥६॥ येन पूषा बृहस्पते र्वायोरिन्द्रस्य चावपत्॥ तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे ॥७॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुष मग-

हे 'स्वधिते !' 'एनं' कुमारं' 'मा हिंसीः' हिंसां मा कुरु अस्य रक्तपातो यथा न स्यादिति भावः ॥ ६ ॥

'येन' अस्त्रेण 'पूषा' देवः 'बृहस्पतेः' देवस्य किञ्च 'वायोः' देवस्य 'च' अपिच 'इन्द्रस्य' देवस्य 'अवपत्' वपनं केशस्य कृतवान्, 'तेन' एव 'ब्रह्मणा' ब्रह्मभूतेन अस्त्रेण 'ते' तव 'जीवातवे' अरोग-जीवनाय 'दीर्घायुष्ट्वाय' बहुतरायुषे, 'वर्चसे' तेजो विवृद्ध्यर्थञ्च वपामि केशानिति शेषः ॥ ७ ॥

त्रीणि वाल-युव-स्थविरत्वानि आयूंषि त्र्यायुषं। 'जमदग्नेः' 'यत्' 'त्र्यायुषं'—'काश्यपस्य' यत् 'त्र्यायुषं'—'अगस्त्यस्य' यत् 'त्र्यायुषं' 'देवानां' यत् 'त्र्यायुषं' 'तत्' 'त्र्यायुषं 'ते' 'अस्तु' भवतु ॥ ८ ॥

হে অন্ন ! (লাজা, খৈ) এই বালকের ভয় অপনোদন কর ॥ ৫

হে সবিতঃ ! এই কুমারের মস্তকে যেন রক্তপাত না হয় ! ॥ ৬

পূষা দেবতা যে অস্ত্রে বৃহস্পতির, যে অস্ত্রে বায়ুর, যে অস্ত্রে ইন্দ্রের কেশ বপন করিয়াছেন—ব্রহ্মস্বরূপ সেই অস্ত্রে তোমার কেশ বপন করিতেছি—এই কার্য্যফলে তুমি দীর্ঘায়ু, নীরোগ ও তেজস্বী হইবা ॥ ৭

७—प्रजापतिः देवता। उष्णिक् छन्दः। केश-वपने विनियोगः।

त्र्यम्बकस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं तत्ते अस्तु त्र्यायुषम्॥८॥
अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमन्तात् सत्य मुपैमि स्वाहा॥ ९ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्याधिपते! 'अग्ने!' 'अहम्' 'इदं' 'व्रतं' ब्रह्मचर्य्यं 'चरिष्यामि' आचरिष्यामि, 'तत्' तस्मात् 'ते' तुभ्यं 'प्रब्रवीमि' आवेदयामि त्वत्प्रसादेन 'तत्' 'शकेयं' चरितुमिति यावत् किञ्च 'तेन' तत्फलेन 'ऋध्यासं' समृद्धियुक्तो भवेयम्—इत्यञ्च 'अनृतात्' अलीकावस्थातो निर्गतः 'सत्यं' ब्रह्म तत्प्राप्तये धृत मेतद् व्रतम् 'उपैमि' उपगच्छामि प्राप्नोमि ॥ ९ ॥

জমদগ্নির যে অবস্থাত্রয়*—কশ্যপের যে অবস্থাত্রয়—অগস্ত্যের যে অবস্থাত্রয়—দেবগণের যে অবস্থাত্রয়, তাহা তুমি লাভ কর ॥ ৮

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে অগ্নে! আমি এই ব্রহ্মচর্য্য ব্রত আচরণ করিব, সেই জন্য প্রার্থনা করি—তৎপ্রসাদে যেন উহা নির্ব্বাহ করিতে পারি! এবং ঐ ব্রত ফলে যেন ব্রহ্মবর্চ্চস লাভ করিতে পারি!—এই সমস্ত অভিপ্রায়ে বিদ্যমান অবস্থা হইতে নির্গত হইয়া সত্যস্বরূপ প্রাপ্তির জন্য এই ব্রত অবলম্বন করিতেছি ॥ ৯

८—प्रजापतिः देवता । यजुः । आशीःकरणे विनियोगः ।

९—अग्नि र्देवता । निगदः । उपनयन-होमे विनियोगः ।

* বাল্য, যুবা, বৃদ্ধ ।

वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्या समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥१० ॥
सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेय तेनर्ध्या समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥ ११ ॥
चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तनर्ध्या समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥१२ ॥
व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'वायो' ! अहमितयादि पूर्ववत् ॥ १० ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'सूर्य्य !' अहमितयादि पूर्ववत् ॥ ११ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'चन्द्र !' अहमित्यादि पुर्ववत् ॥ १२ ॥

हे 'व्रतानाम्' उपनयनादीनां कार्य्याणां 'व्रतपते !' इन्द्र ! अहमितयादि पुर्ववत् ॥ १३ ॥

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে বায়ো ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১০

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে সূর্য্য ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১১

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে চন্দ্র ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১২

१०—वायु र्देवता। निगदः। उपनयन-होमे विनियोगः।

११—सूर्य्यो देवता। निगदः। उप न-होमे विनियोगः।

१२—चन्द्रो देवता। निगदः। उपनयन होमे विनियोगः।

তচ্ছকেয়ং তেনর্দ্ধ্যাং সমিদমহ মনৃতাৎ সত্য মুপৈমি স্বাহা ॥ ১৩ ॥ আগন্ত্রা সমগন্মহি প্রসুমর্ত্তং যুযোতন॥ অরিষ্টাঃ সঞ্চরেমহি স্বস্তি চরতাদয়ম্ ॥১৪॥ অগ্নিষ্টে হস্ত মগ্রহীদর্য্যমা হস্তমগ্রহীন্মিত্র স্ত্বমসি

হে অগ্নে! ‘আগন্ত্রা’ ব্রহ্মচর্য্যে আগমনশীলেন অনেন বটুনা সহ বয়ম্ আচার্য্যাদয়ঃ ত্বাং ‘সমগন্মহি’ উপাস্মহে। ত্বং হি এনং বালকং ‘সুমর্ত্তং’ শোভনমনুষ্যং ‘যুযোতন’ ব্রহ্মচর্য্যে নিযুক্তং কুরু। ‘অরিষ্টাঃ’ বিঘ্নাঃ অস্য বয়মেব ‘সঞ্চরেমহি’ উপভুঞ্জামঃ ‘অয়ং’ বালকঃ ”স্বস্তি” সুখং ‘চরতাৎ’ ভুঞ্জতাৎ ॥১৪॥

হে বালক! ‘তে’ তব ‘হস্তম্’ ইদম্ ময়া গৃহীতম্ ‘অগ্নিঃ’ দেবঃ ‘অগ্রহীৎ’ গৃহীতবান্, শরণং দত্তবানিত্যর্থঃ মদ্‌গ্রহণেন তস্যৈব গ্রহণং সিদ্ধমিতি চাশয়ঃ, যথা সবিতা দেবঃ ‘হস্তম্’ ‘অগ্রহীৎ’; তথৈব অর্য্যমা দেবশ্চ “হস্তম্” ‘অগ্রহীৎ’। বালক! ব্রহ্মচর্য্যা বস্থঃ ‘ত্ব’ ‘কর্ম্মণা’ অহিংসাদি-

সমস্ত ব্রতের শ্রেষ্ঠ-উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে ইন্দ্র! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১৩

হে অগ্নে! ব্রহ্মচর্য্য ব্রতে প্রবৃত্ত এই বালকের সহিত আমরা (আচার্য্য প্রভৃতি) তোমার উপাসনা করিতেছি, তুমি এই বালককে এই ব্রত নির্ব্বাহে উপযুক্ত কর; এই বালকের বিঘ্ন সকল আমরাই ভোগ করিতে স্বীকৃত আছি, এ বালক সুখে কালযাপন করুক ॥ ১৪ ॥

১৩—ইন্দ্রো দেবতা। নিগদঃ উপনয়ন-হোমে বিনিয়োগঃ।

১৪—অগ্নি দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। আচর্য্য পঠনে বিনিয়োগঃ।

কর্ম্মণাগ্নি রাচার্য্যস্তব ॥ ।১৫ ॥ ব্রহ্মচর্য্য মাগা মুপমানয়স্ব ॥ ১৬ ॥ কো নামাস্যসৌ নামাস্মি ॥১৭ দেবস্য তে সবিতুঃ প্রসবেঽশ্বিনোর্বাহুভ্যাং পূষ্ণোহস্তা-

ব্যবহারেণ 'মিত্রঃ' সর্ব্বেষাং মিত্রভূতঃ 'অসি' 'অগ্নিঃ', দেবঃ অয়ম্ 'তব' 'আচার্য্যঃ' বেদোপদেশকঃ ইতি জানীহি, মামগ্নি-তুল্যমব গচ্ছেতি বা ভাবঃ ॥ ১৫ ॥

হে গুরো ! অহম্ ইদানীম্ 'ব্রহ্মচর্য্যম্' ব্রতম্ 'আগাম্' স্বীকৃতবান্, অথ 'মা' মাম্ 'উপনয়স্ব' আত্ম-সমীপং প্রাপয় ॥১৬ ॥

হে কুমার ! 'কঃ নাম' কিন্নামধেয়ঃ ত্বম্ 'অসি' ভবসি ?

হে বালক ! এই আমি তোমার হস্ত গ্রহণ করিলাম (অর্থাৎ শরণ দান দিলাম) ; আমার এই হস্ত গ্রহণেই তোমার অগ্নি দেবতা-কর্তৃক হস্ত-গ্রহণ সিদ্ধ হইল এবং ইহাতেই সবিতৃ-দেব-কর্তৃকও হস্ত গ্রহণ সম্পন্ন হইল ও অর্য্যমা দেবতা-কর্তৃকও হস্ত গৃহীত হইল। হে বালক ! এই ব্রহ্মচর্য্য অবস্থাতে সমস্ত জীবের প্রতি অহিংসা ভাব ধারণ করিবা, সকল জীবই তোমার মিত্র জানিবা এবং আমাকে (আচার্য্যকে) অগ্নি তুল্য সম্মানাস্পদ জ্ঞান করিবা। (অথবা এই অগ্নিকেই আচার্য্য বলিয়া জানিবা)।১৫

হে গুরো ! আমি সম্প্রতি ব্রহ্মচর্য্য ব্রত গ্রহণ করিলাম, অতঃপর আপনি আমাকে উপনয়ন (আত্ম সমীপে নয়ন) করুন।১৬

হে কুমার ! তুমি কিন্নামধেয় ? অর্থাৎ তোমার নাম কি ?—হে গুরো ! আমার এই নাম।১৭

১৫—অগ্নি র্দেবতা। যজুঃ। হস্ত-গ্রহণে বিনিয়োগঃ।

১৬—অগ্নির্দেবতা। যজুঃ। ব্রহ্মচারি-প্রার্থনে বিনিয়োগঃ।

भ्याᳪ हस्तं गृह्णाम्यसौ ॥ १८ ॥ सूर्य्यस्यावृत मन्वावर्त्त-स्वासौ॥१९॥ प्राणानां ग्रन्थि रसि मा विस्रसोन्तक इदं ते परिददाम्यमुम्॥२०॥ अहुर इदं ते परिददाम्यमुम्॥२१

हे गुरो ! अहं 'असौ नाम' एतन्नामकः 'अस्मि' भवामि ॥ १७॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'ते' तव 'हस्तं' 'सवितुर्देवस्य' 'प्रसवे' अनुज्ञाते सति 'अश्विनोः' देवयोः 'बाहुभ्यां' 'पूष्णः' पूष-देवस्य 'हस्ताभ्यां' 'अहं' 'गृह्णामि' ॥ १८ ॥

असौ' हे देवशर्मन् ! त्वं 'सूर्य्यस्य' 'आवृतम्' प्रदक्षिणम् 'आ' आभिमुख्येन 'वर्त्तस्व' कुरु ॥ १९ ॥

हे 'नाभे' ! त्वं 'प्राणानां' प्राणवाय्वादि-वाहि-नाड़ीनां 'ग्रन्थिः' मिलनस्थानं 'असि' ; हे 'अन्तक !' 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमीति भावः ॥ २० ॥

हे 'अहुरे !' वायो ! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि ॥ २१ ॥

হে দেব শর্ম্মন্ ! আমি সবিতা দেবতার অভিপ্রায়ানুসারে অশ্বি নামক দেব দ্বয়ের সাহায্যে, পূষা দেবতার হস্ত দ্বারা তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ।১৮

হে দেব শর্ম্মন্ ! ভালরূপে সূর্য্যকে প্রদক্ষিণ কর ।১৯

হে নাভে ! তুমি প্রাণ বায়ু প্রভৃতি বায়ু সমস্তের গ্রন্থি

१७—अग्नि र्देवता । यजुः । प्रश्न-प्रतिवचने विनियोगः ।

१८—अग्नि र्देवता । यजुः । पाणि-स्वीकरणे विनियोगः ।

१९—सूर्य्यो देवता । यजुः । सूर्य्य-प्रदक्षिणे विनियोगः ।

२०—यमो देवता । यजुः । नाभि-स्पर्शने विनियोगः ।

२१—वायुर्देवता । यजुः । नाभ्युत्सर्पणे विनियोगः ।

कृशन इदं ते परिददाम्यमुम्॥२२॥ प्रजापतये त्वा परिददाम्यसौ॥ २३॥ देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्यसौ॥२४॥ ब्रह्मचार्यस्यसौ॥ २५॥ समिधमाधेह्य-

हे 'कृशन !' कृशानो ! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि॥ २२॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'त्वा' त्वां 'प्रजापतये' देवाय 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि॥ २३॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'त्वा' त्वां 'सवित्रे' 'देवाय' 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि॥ २४॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'ब्रह्मचारी' 'असि' भवसि—इति मनसि स्वीकुरु इति प्रैषणम्॥ २५॥

স্বরূপ, মিলন স্থান হইতেছ—হে অন্তকারিন্ ! এই বালক-শরীর তোমার করে সর্ব্বপ্রকারে সমর্পণ করিতেছি, রক্ষাকর।২০

হে বায়ো ! এই বালককে সর্ব্বপ্রকারে তোমার শরণাপন্ন করিতেছি।২১

হে কৃশানো ! এই বালককে সর্ব্ব প্রকারে তোমার শরণাপন্ন করিতেছি।২২

হে দেবশর্ম্মন্ ! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে প্রজাপতি দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি।২৩

হে দেবশর্ম্মন্ ! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে সবিতা দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি।২৪

হে দেবশর্ম্মন্ ! তুমি ব্রহ্মচারী হইতেছ—ইহা তুমি অবগত হও।২৫

२२—अग्नि र्देवता। यजुः। हृदय-स्पर्शने विनियोगः।
२३—प्रजापति र्देवता। यजुः। दक्षिणांश-स्पर्शने विनियोगः।
२४—सविता देवता। यजुः। वामांश-स्पर्शने विनियोगः।
२५—अग्नि र्देवता। यजुः। आचार्य्य-कथने विनियोगः।

পোঽশান কর্ম্ম কুরু মা দিবা স্বাপ্সীঃ ॥ ২৬ ॥ ইয়ং দুরু-ক্তাত্পরিবাধমানা বর্ণং পবিত্রং পুনতী ম আগাৎ ॥ প্রাণাপানাভ্যাং বলমাহরন্তী স্বসা দেবী সুভগা মে-খলেয়ম্ ॥২৭॥ ঋতস্য গোপ্ত্রী তপসঃ পরস্বী ঘ্নতী রক্ষঃ

হে আয়ুষ্মন্ ! 'সমিধম্' সমিৎ কাষ্ঠম্ 'আধেহি' আধানং কুরু অগ্নাবিতি শেষঃ, প্রত্যহ মিতি বিবেকঃ । 'অপঃ' 'অশান' আচমনোদকং প্রতিকর্ম্ম প্রাশয় । 'কর্ম্ম' গুরু-সেবাং 'কুরু' নিত্য মিতি ভাবঃ । 'দিবা' অহনি 'মা স্বাপ্সীঃ' শয়নং মা কার্ষীঃ ॥ ২৬ ॥

'ইয়ং' 'মেখলা' 'দুরুক্তাৎ' ব্রাত্য-নাম-দুরপবাদ বচনাৎ 'পরিবাধমানা' অপসারয়ন্তী 'বর্ণং' ব্রাহ্মণাখ্যং 'পবিত্রং' দ্বিজত্বেন বিশুদ্ধং 'পুনতী' কৃতবতী সতী 'মে' মমান্তিকে 'আ অগাৎ' আগতবতী ; 'ইয়ং' মেখলা 'প্রাণাপানাভ্যাং' শরীরস্থ-বায়ুভ্যাং 'বলম্' 'আহরন্তী' সম্পাদয়ন্তী সতী 'সুভগা' কল্যাণী 'স্বসা দেবী' ভগিনী ইব ভবতি ॥ ২৭ ॥

হে আয়ুষ্মন্ ! প্রতি দিন তুমি অগ্নিতে সমিৎ প্রক্ষেপ করিবা অর্থাৎ নিত্য হোম করিবা । সতত আচমন করিবা অর্থাৎ শুচি থাকিবা । গুরুর সেবায় রত থাকিবা । কদাপি দিবসে নিদ্রিত হইবা না ।২৬

ব্রাত্য রূপ দুরপবাদের বাধক রূপী এই মেখলা বিপ্র-

২৬—অগ্নি দেবতা । যজুঃ । উপদেশ-কর্ম্মণি বিনিয়োগঃ ।

২৭—অগ্নি দেবতা । উষ্ণিক্ ছন্দঃ । মেখলা পরিধাপনে বিনিয়োগঃ ।

सहमाना अरातीः॥ सा मासमन्त मभि पर्य्येहि भद्रे धर्त्तारस्ते मेखले मा रिषाम॥ २८॥ तत्सवितुर्वरे-

हे 'मेखले!' त्वं 'ऋतस्य' ब्रह्मचर्य्य-लक्षणस्य सत्यस्य धर्मणः 'गोप्त्री' रक्षयित्री असि। 'तपसः' वेदाध्ययनस्य 'परस्त्री' सर्व्वस्वभूता असि। 'रक्षः' रक्षसः विघ्नकारिणः 'घ्नती' विनाशयित्री असि। 'अरातीः' अरातीन् शत्रून् सहमाना अभिभवन्ती। 'सा' त्वं 'समन्त' समन्तात् 'मा' माम् 'अभि' लक्ष्य 'पर्य्येहि' आगच्छ। हे 'भद्रे! कल्याणि! 'ते' तव 'धर्त्तारः' धारणकारिणः वयं 'मा रिषाम' केनापि मा हिंसिष्म॥२८

'सवितुः' जगत्-प्रसवितुः 'देवस्य' सर्व्वत्र द्योतमानस्य 'तत्' 'भर्गः' तेजः 'धीमहि' ध्यायामः चिन्तयामः। कस्य देवस्य?

কুলোদ্ভব বালকদিগকে দ্বিজরূপে পবিত্র করিতে সকলের নিকটে আগমন করিয়া থাকেন। এই মেখলা প্রাণাপান নামক শরীরস্থ বায়ু দ্বারা বল আহরণ করত কল্যাণা ভগিনীর ন্যায় উপকারিণী হইয়া থাকেন।২৭

হে মেখলে! তুমি ব্রহ্মচর্য্য রূপ সত্য ধর্ম্মের রক্ষয়িত্রী হইতেছ, বেদাধ্যয়ন রূপ তপস্যার প্রধান উপকরণ হইতেছ, বিঘ্নকারিগণের বিনাশ কারিণা হইতেছ। শত্রু বর্গের অভিভব কারিণী হইতেছ। তুমি সর্ব্ব প্রকারে আমার মঙ্গল লক্ষ্য করত আগমন কর। হে কল্যাণি! তোমার ধারণকারী আমি যেন কোন রূপ ক্লেশ না পাই।২৮

সেই জগৎ-প্রসবিতা, সর্ব্বত্র দ্যোতমান বস্তুর (গুরু

२८—मेखला देवता। उष्णिक् छन्दः। मेखला-परिधापने विनियोगः।

एयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥२६
भूर्भुवस्वरोꣳ ॥ ३० ॥ सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु
यथा त्वꣳ सुश्रवः सुश्रवा देवेष्वेव मह्ꣳ सुश्रवः सुश्रवा
इत्याह—'यः' देवः 'नः' अस्माकं 'धियः' बुद्धीः 'प्रचोदयात्' प्रकृष्टं यथा स्यात् तथा चोदयति प्रेरयति ॥२९॥

'भूः' भूलोकः। 'भुवः' अन्तरीक्षलोकः। 'स्वः' द्युलोकः। एषु त्रिषु लोकेष्वेव 'ओं' आत्मा व्यापकः॥३०॥

हे 'सुश्रवः' सुष्टु श्रवो यशः यस्य तथाविध ! दण्ड ! 'मा' 'मां' सुश्रवसं 'कुरु'। हे 'सुश्रवः ! त्वं यथा 'देवेषु' दीप्यमानेषु पदार्थसमूहेषु 'सुश्रवाः' सुविख्यातः, हे 'सुश्रवः !' 'ब्राह्मणेषु' मध्ये 'अहम्' अपि 'एवं' 'सुश्रवाः' 'भूयासम्' ॥ ३१
কর্ত্তৃক উপদিষ্ট) তেজের চিন্তা করি। যে দ্যোতমান আমাদের বুদ্ধি বৃত্তিকে উৎকৃষ্ট পথে প্রেরণ করেন।২৯

এই ভূলোক। এই ভুব (অন্তরীক্ষ) লোক। এই স্বঃ (স্বর্গ অথবা দ্যু) লোক।—এই লোকত্রয়েতেই ওঁ (আত্মা) সর্ব্বব্যাপক রূপে ভাসমান রহিয়াছেন।৩০

হে প্রথিত-কীর্ত্তে দণ্ড! আমাকে প্রথিত-কীর্ত্তি কর। হে প্রথিত-কীর্ত্তে! দীপ্যমান পদার্থ সমস্তের মধ্যে তুমি যেরূপ সুবিখ্যাত, হে সুবিখ্যাত! আমিহ যেন ব্রাহ্মণগণের মধ্যে সেইরূপ সুবিখ্যাত হই।৩১

२९—अग्नि र्देवता। गायत्रीच्छन्दः। उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः।

३०—अग्नि र्देवता। यजुः। उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः।

ব্রাহ্মণেষু ভূয়াসম্॥৩১॥ অগ্নয়ে সমিধ মাহার্ষং বৃহতে জাতবেদসে ॥ যথাত্ব মগ্নে সমিধা সমিধ্যস্যেব মহমায়ুষা মেধয়া বর্চ্চসা প্রজয়া পশুভি র্ব্রহ্মবর্চসেন ধনেনান্নাদ্যেন সমেধিষীয় স্বাহা॥৩২॥ পুনর্মামৈ-ত্বিন্দ্রিয়ং পুনরায়ুঃ পুনর্ভগঃ॥ পুনর্দ্রবিণ মৈতু মা পুন

'বৃহতে' মহতে 'জাতবেদসে' জাতপ্রজ্ঞায় 'অগ্নয়ে' 'সমিধম্' 'আহার্ষম্' আহৃতবান্। হে 'অগ্নে'! 'ত্বং' 'যথা' 'সমিধা' অনয়া 'সমিধ্যসি' 'এবং' 'অহম্' 'আয়ুষা' 'মেধয়া' 'বর্চ্চসা' তেজসা, 'প্রজয়া' পুত্রাদিলক্ষণেন, 'পশুভিঃ' গবাদিভিঃ 'ব্রহ্ম বর্চ্চসেন', 'ধনেন', 'অন্নাদ্যেন' অন্ন-প্রভৃতি-ভোগ্য-বস্তু-সমস্তেন 'সম্' সম্যক্ 'এধিষীয়' বৃদ্ধিযুক্তঃ স্যাম্॥৩২॥

রেতঃস্কন্দনাদি-দোষেণ যত্ 'ইন্দ্রিয়ম্' অপচিতম্ 'তত্' 'পুনঃ' 'মাম্' 'ঐতু' সম্যক্ আগচ্ছতু। তথাচ যত্ 'আয়ুঃ' ক্ষীণম্, তত্ 'পুনঃ' ঐতু। কিঞ্চ তেনৈব কর্ম্মণা যঃ 'ভগঃ' ঐশ্বর্য্যং

জাত-প্রজ্ঞ, অতি প্রবৃদ্ধ, অগ্নির উদ্দেশে সমিৎ আহরণ করা হইয়াছে। হে অগ্নে! তুমি যেরূপ এই সমিৎ প্রদানে সমৃদ্ধ হইয়াছ আমিও সেইরূপ আয়ু, মেধা, বর্চ্চ, তেজ, প্রজা, পশু, ব্রহ্মবর্চ্চস, ধন, অন্নপ্রভৃতি সর্ব্বপ্রকারে বৃদ্ধিযুক্ত হই।৩২

রেতঃ-স্কন্দনাদি দোষে যে ইন্দ্রিয় অপচিত হইয়াছে, তাহা আমার প্রত্যাবৃত্ত হউক। আমার যাবৎ আয়ু ক্ষীণ হইয়াছে, তৎ সমস্ত প্রত্যাবৃত্ত হউক। যাহা কিছু মানাদি নষ্ট হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। যে সমস্ত দ্রব্যাদি অপব্যয়িত হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। অধিক কি,

৩১—দণ্ডী দেবতা। পঙ্‌ক্তিশ্ছন্দঃ। দণ্ড গ্রহণে বিনিয়োগঃ।

৩২—অগ্নি দেবতা। যজুঃ। সমিত্-প্রক্ষেপে বিনিয়োগঃ।

ব্রাহ্মণ মৈতু মা ॥৩৩॥ পুনর্মনঃ পুনরাত্মা ম আগাত্ পুনশ্চক্ষুঃ পুনঃ শ্রোত্রং ম আগাত্ ॥ বৈশ্বানরো অদব্ধঃ স্তনূপা অন্ত স্তিষ্ঠতু মে মনোঽমৃতস্য কেতুঃ স্বাহা ॥ ৩৪ ॥

মানাদিলক্ষণং নষ্টং, স চ 'পুনঃ' ঐতু। অপি হি তথা দুরাচারে প্রবৃত্তে যত্ 'দ্রবিণম্' ব্যয়িতং, তচ্চ 'পুনঃ' 'মা' মাম্ 'ঐতু' আগচ্ছতু। কিমধিকেন যদি কথমপি 'ব্রাহ্মণম্' ব্রাহ্মণ্য মপি ক্ষয়িতং স্যাত্, তদপি 'মা' মাম্ 'পুনঃ' 'ঐতু' আগচ্ছতু ॥ ৩৩ ॥

'মে' মমঃ 'মনঃ' 'পুনঃ' আগাত্' অসত্পথাত্ প্রত্যাগতং স্বস্থ' ভূতম্। 'চক্ষুঃ' অপি 'পুনঃ' আগাত্। 'মে' মম 'শ্রোত্রম্' অপি 'পুনঃ' আগাত্। শরীরস্থানা মিন্দ্রিয়াদীনাং 'অদব্ধঃ' অহিংসিতা, 'তনূপাঃ' শরীর-রক্ষকঃ, 'বৈশ্বানরঃ' আভ্যন্তরিকোঽগ্নিঃ 'অন্তঃ' যথাস্থানং তিষ্ঠতু। 'মে' মম 'মনঃ' 'অমৃতস্য' আত্মনঃ 'কেতুঃ' প্রজ্ঞারূপঃ স্যাত্ ॥ ৩৪ ॥

ঐ অপকার্য্যে যদি কোন প্রকারে আমার ব্রাহ্মণ্যও ক্ষয়িত হইয়াথাকে তাহাও আমার নিকটে পুনরাগমন করুক।৩৩

আমার মন অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া স্বস্থ ভাব অবলম্বন করুক, চক্ষুরিন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক, শ্রবণেন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক। শরীরস্থ ইন্দ্রিয় সমস্তের সহায়কারী, শরীর-রক্ষক, বৈশ্বানর অগ্নিও যথাস্থানে স্থিত হউন। আমার মন, অমৃত পুরুষ সেই পরমাত্মার পতাকা স্বরূপ হউক অর্থাৎ প্রজ্ঞারূপে পরিণত হউক।৩৪

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে প্রথম প্রপাঠকস্য ষষ্ঠঃ খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

৩৩, ৩৪—অগ্নির্দেবতা। নিগদৌ। ইন্দ্রিয়াপচারে প্রায়শ্চিত্ত-কর্ম্মণি সমিত্ প্রক্ষেপে।

॥ अथ सप्तमः खण्डः ॥

ये अप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मरूको मनोहाः ॥ खलो विरुजस्तनूदूषिरिन्द्रियहा अति तान्सृजामि ॥१॥ यदपां घोरं यदपां क्रूरं यदपामशान्तमति तत्सृजामि ॥२॥ यो रोचनस्तमिह गृह्णामि तेनाहं

'अप्सु अन्तः' इह जलमध्ये 'गोह्यः' १ 'उपगोह्यः' मरूकः, ३ 'मनोहाः' ४ 'खलः' ५ 'विरुजः' ६ 'तनूदूषिः' ७ 'इन्द्रियहाः', ८ इति 'ये' अष्टविधाः 'अग्नयः' शरीर-नष्ट-कारिणस्तेजसः 'प्रविष्टाः' स्थिताः, 'तान्' अग्नीन् 'अतिसृजामि' अतिशयेन वर्जयामि ॥ १ ॥

किञ्च 'अपाम्' उदक-जातीनां 'यत्' 'घोरं', 'अपां' 'यत्' 'क्रूरं', 'अपां' 'यत्' 'अशान्तम्'—एतत् त्रिविधम् अहितकरं गुणं 'तत्' तदपि 'अति सृजामि' अतिशयेन वर्जतायि ॥ २ ॥

'यः' अग्निः 'रोचनः' शरीर-दीप्तिकरः 'इह' जले 'तम्

এই জলের মধ্যে যে গোহ্য১ উপগোহ্য২, মরূক৩, মনোহা৪, খল৫, বিরুজ৬, তনূদূষি৭, ইন্দ্রিয়হা৮—নামক শরীর-হানি-কারক অষ্ট প্রকার অগ্নি থাকে ; তৎ সমস্তকে আমি বিদূরিত করিতেছি ।১———এবং জলের ঘোর নামক যে দোষ, ক্রূর নামক যে দোষ, অশান্ত নামক যে দোষ তাহাও বিদূরিত করিতেছি ।২

১, ২—अनयोः अग्निर्देवता । त्रिपदी । सप्त ।वर्त्तनजलाभिमन्त्रणे विनियोगः ।

মামভিষিঞ্চামি ॥ ৩ ॥ যশসে তেজসে ব্রহ্মবর্চসায বলায়েন্দ্রিয়ায় বীর্য্যায়ান্নাদ্যায় রায়স্পোষায় ত্বিষ্যা অপচিত্যৈ ॥ ৪ ॥ যেন স্ত্রিয় মকৃণুতং যেনাপা মৃষতং সুরাং ॥ যেনাঽক্ষানভ্যষিঞ্চতং যেনেমাং পৃথিবীং মহীং । যদ্বান্তদশ্বিনা যশস্তেনামা মভিষিঞ্চতম্॥৫॥ উদ্যন্

এত্র 'স্নহামি' অনন্তরঞ্চ 'অহম্' ব্রহ্মচারী 'তেন' এব জলেন 'মাম্' আত্মানং অভিষিঞ্চামি ॥ ৩ ॥

কিমর্থং মিত্যাচষ্টে— 'যশসে', 'তেজসে', ব্রহ্মবর্চসায,' 'বলায', 'ইন্দ্রিয়ায', 'বীর্য্যায', 'অন্নাদ্যায' অন্নাদি-লাভায, রায়স্পোষায' ধনস্য পোষণায, 'ত্বিষে' কান্ত্যৈ, 'অপচিত্যৈ' সম্মান-প্রাপ্তয়ে চ (পূর্ব্বেণ সম্বন্ধঃ) ॥ ৪ ॥

হে 'অশ্বিনৌ' অশ্বাবিব বেগগমনশালিনৌ ! 'যেন' কর্ম্মণা 'স্ত্রিয়ং' স্ত্রীজাতিং 'অকৃণুতম্' ভোগ্যত্বেন নিরূপিতবন্তৌ— 'যেন' কর্ম্মণা 'অপাম্' 'সুরাম্' 'ঋষতম্' গময়িতবন্তৌ, অপঃ সুরাত্বেন ভোগ্যান্ কৃতবন্তৌ—'যেন' কর্ম্মণা 'অক্ষান্' দেবনান্ ভোগ্যান্ কৃতবন্তৌ—কিমধিকেন, 'যেন' 'ইমাং' 'মহীং' মহতীং

যে অগ্নি, শরীরের দীপ্তিকারী—তাহাই এই জলে গ্রহণ করিতেছি এবং আমি (ব্রহ্মচারী) সেই নির্দোষ জলে আপনাকে সিঞ্চন করিতেছি।৩——ইহা দ্বারা আমার যশ, তেজ, ব্রহ্মবর্চ্চস, বল, ইন্দ্রিয়-সামর্থ্য, বীর্য্য, অন্নাদি, ধন-সঞ্চয়, কান্তি ও সম্মান লাভ হইবে।৪

অশ্বের ন্যায় বেগ-গমনশীল হে সূর্য্য ও চন্দ্র ! তোমরা

৩,-৪ – অনয়োঃ অগ্নির্দেবতা । যজুঃ । সমাবর্ত্তনাভিষেকে বিনিয়োগঃ ।

৫—অশ্বিনৌ দেবতে । ষড়ষ্টকা-মহাপঙ্‌ক্তিশ্ছন্দঃ । সমাবর্ত্তনাভিষেকে বিনিয়োগঃ ।

ভ্রাজদৃষ্টিভি রিন্দ্রো মরুদ্ভিরস্মাত্ প্রাতর্যাবভির-স্মাত্॥ দশসনিরসি দশসনিং মা কুর্ব্বা ত্বা বি-শাম্যা মাবিশ॥ ৬॥ উগ্রন্ ভ্রাজদৃষ্টিভি রিন্দ্রো

সুবিপুলাং 'পৃথিবীং' সমস্তামেব 'অভি অভিষ্ণতম্' তর্পিতবন্তৌ। 'বাং' যুবয়োঃ তাদৃশং 'যত্' কর্ম্ম 'তত্' 'যশঃ' ইত্যাচক্ষতে। 'তেন' 'যশসা' 'মাম্' 'অভিষিঞ্চতম্' মাং যশস্বিনং কুরুতম্-ইতি প্রার্থয়ে॥ ৫॥

'ইন্দ্রঃ' (ইদি পরমৈশ্বর্য্যে তেজোরূপ-পরমৈশ্বর্য্য-যোগাদিন্দ্র আদিত্য উচ্যতে) আদিত্যঃ 'উদ্যন্' উদীয়মানঃ ত্বং 'ভ্রাজদৃ-ষ্টিভিঃ' দীপ্তদৃষ্টিভিঃ 'মরুদ্ভিঃ' দেবৈঃ সহ 'অস্মাত্' কিঞ্চ 'প্রাতর্যাবভিঃ' প্রাতরাশভোক্তৃভিঃ অন্যান্যৈশ্চ দেবৈঃ সহ 'অস্মাত্'। ত্বং 'দশসনিঃ' দশানাং সনিঃ সম্ভজনীয়ঃ 'অসি' ভবসি, 'মা' মামপি তথৈব 'দশসনিং' দশজনানাং ভজনীয়ং কুরু; অহম্ 'আবিশামি' উপগচ্ছামি অর্থিত্বেন ত্বামিতি শেষঃ, ত্বঞ্চ 'মা' মাম্ 'আবিশ' ফলদাতৃত্বেনেতি ভাবঃ॥ ৬॥

যে প্রকারে স্ত্রীজাতিকে পুরুষজাতির ভোগ্য বলিয়া স্থির করি-য়া দিয়াছ, যে প্রকারে জলকেও সুরারূপে ভোগ্য করিয়াছ, পাশক (পাশা) গুলিকে যে প্রকারে ভোগ্য করিয়াছ, অধিক কি—এই সুবিপুল সমস্ত মহীমণ্ডলই যে প্রকারে পরিতৃপ্ত করিতেছ—তোমাদের সেই ক্রিয়াকে যশ বলা যায়, আমাকে সেইরূপ যশ প্রদান করিয়া যশস্বী কর।৫

হে আদিত্য! তুমি দীপ্ত-দৃষ্টি মরুদ্গণের সহিত এবং

৬—৮ ত্রয়াণাং সূর্য্যো দেবতা। নিগদঃ। সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ।

মহদ্ভি রস্যাত্ সা নপগেভি রস্যাত্ শতসনি রসি শতসনিং কুর্ব্বা ত্বাবিশ্যাস্বা মাবিশ॥ ৭ ॥ উদ্যন্ ভ্রাজভৃষ্টিভি রিন্দ্রো মরুদ্ভি রস্থা ত্সায়ংযাবভি রস্যাত্॥ সহস্রসনি রসি সহস্রসনিং মা কুর্ব্বা ত্বা বিশ্যাস্বা মাবিশ॥ ৮॥ চক্ষুরসি চক্ষু-ষ্ট্বমস্যব

হে ইন্দ্র ইত্যাদি পূর্ব্ববত্। ত্বং ‘শতসনিঃ’ শতানাং সনিঃ সম্ভজনীয়ঃ ‘অসি’ ভবসি, ‘মা’ মামপি তথৈব “শতসনিং” শতজনানাং ভজনীয়ং কুরু। অহমিত্যাদি পূর্ব্ববত্॥ ৭॥

পুনরিন্দ্র ইত্যাদি পূর্ব্ববত্। ‘সহস্রসনিঃ’ সহস্রাণাং বহূনাম্ অনন্তানাং বা সনিঃ সম্ভজনীয়ঃ ‘অসি’ ‘মা’ মামপি তথৈব ‘সহস্রসনিং’ বহুনাং ভজনীয়ং কুরু। অহমিত্যাদি পূর্ব্ববত্॥ ৮॥

প্রাতরাশ-ভোজী অন্যান্য দেবগণেরও সহিত উদিত হইয়া দেদীপ্যমান রহিয়াছ। তুমি যেরূপ দশজনের পূজনীয়, আমাকেও সেইরূপ দশজনের পূজনীয় কর। আমি যাচক রূপে তোমার নিকটে উপস্থিত হইয়াছি, তুমি দাতৃরূপে আমার নিকটে উপস্থিত হও। ৬

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ শত শত জনের পূজনীয় আমাকেও সেইরূপ শত শত জনের পূজনীয় কর। আমি যাচক ইত্যাদি।৭

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ সহস্র জনের পূজনীয়, আমাকে ও সেইরূপ সহস্র সহস্র জনের পূজনীয় কর আমি যাচক ইত্যাদি। ৮

मे पाप्मानं जहि सोम स्त्वा राजाऽवतु नमस्ते स्तु मा-माहिंसीः ॥ ९ ॥ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मद् वाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथादित्य व्रते वयन्तवानागसो

हे सूर्य्य! त्वं "चक्षुः" जगतां चक्षुभूतः 'असि' भवसि, किञ्च 'चक्षुष्ट' यत् चक्षुधर्म्म तदपि त्वमेवासि। 'मे' मम 'पाप्मानम्, 'अवजहि' नाशय। 'सोमः' चन्द्रः देवः 'राजा' ब्राह्मणानाम् ओषधीनाञ्च 'अवतु' आप्यायनं करोतु। 'ते' तुभ्यं 'नमः' 'अस्तु'। 'मा' मां 'मा हिंसीः' नष्टं मा कुरु ॥ ९ ॥

हे 'वरुण'! 'अस्मत्' अस्माकं 'उत्तमं' उत्तमाङ्गे कण्ठादौ स्थितं 'पाशम्' 'उत्श्रथाय' ऊर्द्ध्वत एव शिथिलीकुरु ; 'मध्यमं" मध्यमाङ्गे कण्ठादौ च स्थितं पाशम् 'वि' श्रथाय विशेषेण शिथिली कुरु; 'अधमम्' अधमाङ्गे पादादौ च स्थितम्

হে সূর্য্য ! তুমি জগতের চক্ষুস্বরূপ হইতেছ এবং চক্ষুর যে শক্তি তাহাও তুমিই। আমার পাপ নষ্ট কর। প্রদীপ্ত এই চন্দ্রমা তোমাকে স্বীয় শীত কিরণদানে পরিতৃপ্ত করুন। তোমাকে নমস্কার। কেহ যেন আমাকে নষ্ট করিতে না পারে !। ৯

হে বরুণ দেবতা ! আমার উত্তমাঙ্গে কণ্ঠাদিতে অবস্থিত পাশ, শিথিল করিয়া উপর হইতেই খসাইয়া দাও ; মধ্যমাঙ্গে কটি দেশাদিতে অবস্থিত পাশ শিথিল করত বিযুক্ত কর; অধমাঙ্গে পাদাদিতে অবস্থিত পাশও শিথিল করিয়া নীচভাগ

---

९ – सूर्य्यो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सूर्य्योपस्थाने विनियोगः।

অদিতয়ে স্যাম ॥ ১০ ॥ শ্রীরসি ময়ি রমস্ব ॥ ১১ ॥ নেত্র্যৌ স্থো নয়তং মাম্ ॥ ১২॥ গন্ধর্ব্বো-স্যুপাব উপলা-

'অব' অধ্যায় নীচত এব শিথিলীকুরু ॥ কিঞ্চ হে 'আদিত্য" অদিতিঃ অখণ্ডস্যাংশ ! 'অথ' অনন্তরং পাশমুক্তাঃ সন্তঃ 'বয়ং' 'তব' 'ব্রতে' কর্ম্মণি 'অনাগসঃ' নিরপরাধিনঃ যথা 'স্যাম' তথা কুরু। কিমর্থমিত্যাহ—'অদিতয়ে' অখণ্ড-ফল-লাভায় ॥ ১০ ॥

হে মালে! ত্বং 'শ্রীঃ' শোভা 'অসি' অতঃ ত্বাম্ প্রার্থয়ে— 'ময়ি' মম শরীরে 'রমস্ব' বিহর অবস্থানং কুরু ॥ ১১ ॥

হে উপানহৌ ! যুবাং 'নেত্র্যৌ' নেতৃরূপৌস্থো 'মাং' দেশাদ্ দেশান্তরং সুখেন 'নয়তম্' প্রাপয়তম্ ॥ ১২ ॥

হে দণ্ড! ত্বং গন্ধর্ব্বঃ রক্ষণসমর্থঃ 'অসি' ভবসি, 'মাম্' হইতেই স্খলিত করিয়া দাও। হে অখণ্ডাংশ ! আমরা পাশমুক্ত হইয়া তোমার সন্তোষবিধান কার্য্যে অখণ্ড ফল লাভের নিমিত্ত যাহাতে নিরপরাধী থাকি এরূপ কর। ১০

হে মালা দেবতা ? তুমি শোভাস্বরূপা হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—মদীয় শরীরে অবস্থান কর। ১১

হে উপানৎ দেবতারা ! তোমরা নয়নকারিণী হইতেছ (অর্থাৎ তোমাদের সাহায্যে কণ্টকাদিতে আবৃত দুর্গম পথেও অনায়াসে যাওআ যায়) আমার গমনে সুখকারিণী হও। ১২

১০—বরুণো দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। মোচনে বিনিয়োগঃ।

১১—শ্রী দেবতা। যজুঃ। স্রগ্বন্ধনে বিনিয়োগঃ।

১২—উপান দ্দেবতা। যজুঃ। উপানত-পরিধানে বিনিয়োগঃ।

মব ॥ ১৩ ॥ যক্ষমিব চক্ষুষঃ প্রিয়ো বো ভূয়াসম্ ॥১৪॥ ওষ্ঠাপিধানা নকুলী দন্তপরিমিতঃ পবিঃ ॥ জিহ্বে মা বিহ্বলো বাচং চারু মাদ্যেহ বাদয় ॥১৫॥ বনস্পতে 'উপাব' সমীপমাগত্য রক্ষ। পুনঃ কথয়তি—'মাম্' 'উপাব' সমীপমাগত্য রক্ষ, সততং সর্ব্বতঃ রক্ষেতি যাবত্ ॥ ১৩ ॥

হে পরিষদঃ! অহং 'বঃ' যুষ্মাকং 'চক্ষুষঃ' 'যক্ষম্' যক্ষঃ 'ইব' 'প্রিয়ঃ' 'ভূয়াসম্', যক্ষঃ যথা সর্ব্বেষাং প্রিয়ঃ, তথা অহমপি ভূয়াসম্-ইতি প্রার্থয়ে ॥ ১৪ ॥

হে 'জিহ্বে'! ত্বং 'নকুলী' নকুলীবত্ 'ওষ্ঠাপিধানা' ওষ্ঠাভ্যামাচ্ছাদিতা নকুলী যথা বিলে প্রচ্ছন্না ভবতি ক্ষণেনাত্মপ্রকাশং করোতি পুনঃ ক্ষণেন প্রচ্ছন্না ভবতি তথাস্বভাবা, অহঞ্চ 'বিহ্বলঃ' কামাদিরিপুসাহচর্য্যাত্ 'পবিঃ' বজ্রঃ 'দন্তপরিমিতঃ' অপি ভবতি, অশুদ্ধাদিরূপঃ উচ্চারিত-বাগপি বজ্রা-

হে দণ্ডদেবতা! তুমি বিপদে রক্ষা করিতে সমর্থ হইতেছ অতএব তোমাকে গন্ধর্ব্ব বলা যায়, তুমি আমার নিকটে সতত অবস্থিতি কর। ১৩

হে সভাসদ্ মহোদয়গণ! আমি আপনাদের চক্ষে যেন যক্ষের ন্যায় প্রিয় হই! ।১৪

হে জিহ্বে! সর্ব্বদাই অধর ও ওষ্ঠের অভ্যন্তরে অবস্থিত তুমি নকুলীর ন্যায় হইতেছ, আমরা কামাদি রিপুর বশে সর্ব্বদাই বিহ্বল, দন্ত সাহায্যে উচ্চারিত কোন কোন

১৩—দণ্ডো দেবতা। যজুঃ। দণ্ড গ্রহণে বিনিয়োগঃ ॥

১৪—পরিষদো দেবতাঃ। যজুঃ। বীক্ষণে বিনিয়োগঃ।

১৫—জিহ্বা দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। মুখাপিধানে বিনিয়োগঃ।

বীড্বঙ্গো হি ভূয়া অস্মৎসখা প্রতরণঃ সুবীরঃ ॥ গোভিঃ সন্নদ্ধো অসি বীড়য়স্ব ॥ আস্থাতা তে জয়তু জেত্বানি ॥ ১৬ ॥

স্মকো ভবতীতি ভাবঃ। অতঃ প্রার্থয়ে—'অদ্য' 'ইহ' কর্ম্মণি মাং 'চারু' শোভনং 'বাচং' বচনং 'বাদয়' ॥ ১৫ ॥

হে 'বনস্পতে !' বনস্পতির্বৃক্ষঃ তদবয়বেন কাষ্ঠেন নির্মিত হে রথ! ত্বং 'হি' নিশ্চয়ং 'বীড্বঙ্গঃ' দৃঢ়াঙ্গঃ 'ভূয়াঃ' কিঞ্চ 'অস্মাত্' অস্মাকং 'সখা' সখি-রূপঃ সন্ 'প্রতরণঃ' ত্রাতা 'ভূয়াঃ' অপিচ 'সুবীরঃ' বীরশ্রেষ্ঠানাং বাহকঃ 'ভূয়াঃ'। 'গোভিঃ' গোচতুষ্টয়ৈঃ 'সন্নদ্ধঃ' সংযুক্তঃ 'অসি', স ত্বং 'বীড়য়স্ব' ইহৈব কিঞ্চিত্ ক্ষণং তিষ্ঠ। 'তে' তব 'আস্থাতা' আরোহী 'জেত্বানি' জেতুমুপযুক্তানি পরপক্ষীয়সেনাদলানি 'জয়তু' ॥ ১৬ ॥

বাক্যও বজ্রস্বরূপ প্রকাশ পায়; অতএব প্রার্থনা করি—অদ্য এই কার্য্যে আমাকে নির্দ্দোষ বাক্যের বক্তা কর। ১৫

হে বন্য-কাষ্ঠ-নির্ম্মিত রথ! তুমি নিশ্চয়ই দৃঢ়াঙ্গ, আমাদের সখারূপে বিপদে ত্রাতা হও ও বীর-শ্রেষ্ঠদিগের বহনকারী হও। গোসজ্ঞে সংযুক্ত হইয়াছ; কিঞ্চিৎক্ষণ এই স্থলেই স্থিতি কর; তোমার আরোহী রথী মহোদয় পরপক্ষীয় সেনাদলকে জয় করুন। ১৬

॥ ইতি সামবেদিয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে প্রথম প্রপাঠকস্য সপ্তমঃ খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

১৬—রথী দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। রথাভিমর্শনারোহণে বিনিয়োগঃ।

अथ अष्टमः खण्डः।

इमा मे विश्वतो वीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतं॥
पूषं स्त्वं पर्यावर्त्तयानष्टा आयंतुनो गृहान्॥१॥
इमा मधुमती र्मह्यमनष्टाः पयसा सह॥ गाव
आज्यस्य मातर इहेमाः सन्त भूयसीः॥ २॥

'विश्वतोवीर्यः' सर्व्वतोबलशाली 'भव'; 'मे' मम 'इमाः' गाः सन्ति, 'तं' ताः 'च' 'रक्ष' हे 'पूषन्!' देव! 'त्वं' एनाः 'पर्य्यावर्त्तय' प्रत्यावर्त्तस्व यथा च इमाः 'अनष्टाः सत्यः 'नः' अस्माकं 'गृहान्' 'आयन्तु' प्रत्यागच्छन्तु तथा कुरु॥ १॥

हे इन्द्र! 'इमाः' 'मधुमतीः' गाः 'पयसा' दुग्धेन 'सह' 'अनष्टाः' यथा स्यु स्तथा 'मह्यं' प्रत्यर्पय किञ्च 'इमाः' 'भूयसीः' भूयस्यः बह्वः 'गावः' 'इह' गृहे 'आज्यस्य' 'मातरः' जनयित्र्यः 'सन्तु' इति प्रार्थये॥ २॥

ইন্দ্র তুমি বলশালী হও, আমার এই গোগুলি রক্ষা কর। হে পূষন্! তুমি ইহাদিগকে গোষ্ঠ হইতে প্রত্যাবৃত্ত করাইবা, যাহাতে ইহারা নির্ব্বিঘ্নে আমাদের ভবনে প্রত্যাগমন করিতে পারে!। ১।

হে ইন্দ্র! এই মধুমতী গো-সকল, যাহাতে অপরিমিত দুগ্ধবতী হয়—গোষ্ঠহইতে এইরূপ করিয়া আনয়ন কর এবং

১, ২—इन्द्रोदेवता। अनुष्टुप्छन्दः। गोचारण-त्यागे विनियोगः।

গবাং স্নেহ্যাসি গাবো ময়ি স্নিহ্যন্ত ॥ ৩ ॥
সংগ্রহণ সংগৃহাণ যে জাতাঃ পশবো মম ॥ পূষৈষাং
শর্ম যচ্ছতু যথা জীবন্তো অপ্যয়াৎ ॥ ৪ ॥ ভুবন ম-
বি বাহস্ব মিন্দ্রায় ত্বা হুতো দদাৎ ॥ অন্তম-

হে বৎস ! ত্বং 'গবাং' 'স্নেহ্যা' স্নেহকঃ 'অসি' অতঃ ত্বাং প্রার্থয়ে—'গাবঃ' ইমাঃ 'ময়ি' মদ্‌গৃহে স্নিহ্যন্তু স্বচ্ছন্দাশ্লিষ্টন্তু ॥ ৩ ॥

হে সঙ্গ্রহণ ! 'মম' গৃহে 'যে' 'পশবঃ' গাবঃ, 'জাতাঃ', তান্ 'সঙ্গৃহাণ' রক্ষাং কুরু, 'এষাং' গবাং, 'পূষা' আদিত্যঃ 'শর্ম' কল্যাণং, তথা যচ্ছতু' দদাতু, যথা 'জীবন্তঃ' প্রাণান্ ধারয়ন্তঃ এতে, 'অপ্যয়াৎ' সময়' মিয়ুঃ [এতে আয়ুষ্মন্তো ভূয়াস্থরিতি ভাবঃ] ॥ ৪ ॥

এই বহুতর গোবৃন্দ এই পরিবারে অপরিমিত ঘৃতের জনয়িত্রী হউক । ২ ।

হে বৎসেরা ! তোমরা গো-সকলের স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গনের বস্তু হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—এই গোগুলি যেন ত্বৎ প্রসাদে মদীয় গৃহকে স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গন করে অর্থাৎ এই গৃহেই যেন চিরকাল সুখে বাস করে । ৩ ।

হে সঙ্গ্রহণ ! (পূষাদেব) আমার গৃহে যে সকল পশুরা হইয়াছে, তাহাদিগকে রক্ষা কর, এবং এই পশুদিগের (গোদিগের) পূষাদেব (আদিত্য) এরূপ কল্যাণ করুন, যাহাতে ইহারা প্রাণ ধারণ করতই সময়াতিবাহন করুক, অর্থাৎ

৩—স্নেহ্যা দেবতা । যজুঃ । গোবৎসমিলনে বিনিয়োগঃ ।

৪—অনুষ্টুপ্‌ছন্দঃ । পূষাদেবতা । বিক্রয়ন-হোমে বিনিয়োগঃ ।

रिष्टमिड़ादं ॥ ५ ॥ गोपोषणमसि गोपोषस्येशिषे-गोपोषाय त्वा ॥ सहस्रपोषणमसि सहस्र पोषस्ये-

हे स्वधिते! अस्त्र! त्वं 'भुवनं' भुवनोपकारकम्, 'असि' भवसि, अतएव पशूनां साहस्रं बाहुल्यनिमित्तं, 'असि', किञ्च 'इमोदेवः', 'त्वा' त्वां, 'इन्द्राय' 'अदात्' दत्तवान्, कथम्भूतं त्वां ?—'अक्षतं' अभग्नं, नूतनं वा, 'अरिष्टं' विघ्ननाशनं 'इड़ादं' अन्नदातारं ॥ ५ ॥

हे स्वधिते! 'गोपोषणं' गवां पुष्टिकरं, 'असि', किञ्च गोपोषस्य गवां पुष्टेः 'ईशिषे' वृद्धि-कर्त्ता 'असि' अतएव 'त्वा' त्वां 'गोपोषाय' गवां पुष्ट्यर्थं, गृहीतवान् इति सम्बन्धः—अपिच यतस्त्वं 'सहस्र पोषणं' बहूनां पशूनां पुष्टि निमित्तं 'असि' 'सहस्र पोषस्य' बहूनां पुष्टेः 'ईशिषे' वृद्धिकर्त्ता, 'असि' अतस्त्वं

ইহারা যাহাতে আয়ুষ্মান হউক এইরূপ কল্যাণ প্রদান কর ॥ ৪

হে অস্ত্র! তুমি ভুবন মাত্রের উপকারক হইতেছ, অতএব পশুদিগের বাহুল্য বিধানে হেতুভূত তুমিই হইতেছ, এবং অক্ষত, বিঘ্ননাশন এবং অন্নদাতা হইতেছ, দেখ—এই নিমিত্তই তোমাকে স্বম নামক দেবতা ইন্দ্রের প্রতি সমর্পণ করিয়াছেন ॥ ৫

হে অস্ত্র! তুমি গো-সকলের পুষ্টিকারী হইতেছ, আর তুমি গো-সকলের পুষ্টির উত্তরোত্তর বৃদ্ধিকারী হইতেছ, অতএব গো-সকলের পুষ্ট্যর্থ তোমাকে গ্রহণ করিয়াছি;

५—स्वधिति देवता। गायत्रीच्छन्दः वत्सस्य कर्णयोश्छिद्र-करणे विनियोगः।

श्रिषे सहस्र पोषाय त्वा ॥६॥ लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृतं ॥यावतीनां यावतीनां व ऐषमो लक्षण मकारिषं ॥ भूयसीनां भूयसीनां व उत्तरा मुत्तराꣳ समां क्रियासं ॥ ७ ॥ इय न्तन्ती गवां माता

'त्वा' त्वां 'सहस्र पोषाय' बहूनां पशूनां पुष्टि-वृद्ध्यर्थं, गृहीत-वान् इत्यनुसन्धानीयम् ॥ ६ ॥

हे गावः ! 'यावतीनां यावतीनां' यावत् सङ्ख्यकानां, 'वः' युष्माकं, 'लोहितेन' औदुम्बरेण, 'स्वधितिना' असिना, 'मिथुनं कर्णयोः' द्वयोः कर्णयोः, 'कृतं' वेदविहितं, 'लक्षणं' छिद्रं 'ऐषमः' अस्मिन् वर्षे, 'अकारिषं' कृतवानस्मि, 'भूयसीनां भूयसीनां' तेभ्योपि विपुलानां, 'वः' युष्माकं, 'उत्तरामुत्तरां' उत्तरस्मिन्२ 'समां' वर्षे, 'क्रियासम्' करिष्यामि ॥ ७ ॥

इयं 'तन्ती' वत्सबन्धनरज्जुः, 'गवां' 'माता' पालयित्री,

এবং তুমি অনেক পশুদিগের পুষ্টির নিমিত্ত হইতেছ ও অনেক পশুদিগের পুষ্টি-বর্দ্ধনকারী হইতেছ, অতএব আমিহ অনেক পশুদিগের পুষ্টি বৃদ্ধি করিবার নিমিত্ত তোমাকে গ্রহণ করিয়াছি ।। ৬

হে গো-সকল ! এ বৎসরে তোমাদিগের যত গুলির কর্ণদ্বয়েতে লোহিত অসিদ্বারা বেদ-বিহিত ছিদ্র করিয়াছি, উত্তরোত্তর বর্ষেতে তাহাহইতে অধিক গুলির ঐ রূপে ছিদ্র করিব ।। ৭

---

६ – दैवतादयः पूर्व्ववत् ।

७—गौर्द्देवता । त्रिपादनुष्टुप्छन्दः । कृत-लक्षणस्य गोरनुमन्त्रणे विनियोगः ।

सवत्सानां निवेशनी ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरां समां ॥ ८ ॥

अस्याः परिवज्ञा ह्वारादि प्रापकत्वेन गवां पालन कर्त्तृत्वम् । 'सवत्सानां' वत्ससहितानां गवां 'निवेशनी' प्रापयित्री, दोहन समये मातृजङ्घायां वत्सस्य बन्धनात्, 'सा' तन्ती, 'नः' अस्माकं 'उत्तरा मुत्तरां' उत्तरोत्तरम्, 'समां' वर्षं, 'पयस्वती' क्षीरवती सती, अर्थात् इष्टफलदायिनी सती, 'दुहा' कामानां प्रपूरयित्री स्यादित्यर्थः ॥ ८ ॥

এই রজ্জু গো-সকলের মাতাস্বরূপ হইতেছে এবং বৎসের সহিত গোদিগের একত্রকারিণী হইতেছে, সেই রজ্জু উত্তরোত্তর বর্ষে ক্ষীরবতী হইয়া অর্থাৎ ক্ষীরবতী গো-সংযুক্ত হইয়া আমাদিগের কামনা সমুদয়ের পূরণকর্ত্রী হউক ॥ ৮

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य अष्टमः खण्डः । समाप्तश्चायम्प्रपाठकः ॥

—:০:—

८—तन्ती देवता । अनुष्टुप्छन्दः । बद्धवत्सस्यानुमन्त्रणे विनियोगः ।

॥ अथ द्वितीयः प्रपाठकः ॥

तत्र

प्रथम-खण्डः

ओं ॥* यः प्राच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥ यो दक्षिणस्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः ॥ १ ॥ यः प्रतीच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः ॥ य उदीच्यां

'प्राच्यां दिशि, पूर्व्वस्यां दिशायां 'यः सर्पराजः' यः सर्पश्रेष्ठः वर्त्तसे, 'एष' मद्दत्तो 'बलिः' सखलु 'ते' तव ग्रहणीयो भवतु ; 'दक्षिणस्यां दिशि' 'यः सर्पराजः' इत्यादेरपि पूर्व्ववदर्थो वेदितव्यः ॥ १ । २ ॥

পূর্ব্বদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান, হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, দক্ষিণদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্প রাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, পশ্চিমদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, উত্তর

* "अथातः श्रवणा कर्म" इति गोभिलः ३, ७।

१—४—एषां चतुर्णां सर्पो देवता । निगदः। सर्पबलि-कर्म्मणि विनियोगः ।
" उदकं निनीय बलिं निर्वपति यः प्राच्यां दिशि" इत्यादि गो० ३, ७ ।

দিশি সর্পরাজ এষ তে বলিঃ॥ ২ ॥ নমঃ পৃথিব্যৈ দংষ্ট্রায় বিশ্বভৃন্মা তে অন্তে রিষাম॥ সংহৃতং মা বিবধী বিহৃতং মা ভিসম্বধীঃ॥ ৩॥ সোমো রাজা স.মস্ত্বো রাজা সোমো স্মাকং রাজা সোমস্য বয়ং স্মঃ॥

হে 'বিশ্বভৃত্'! অগ্নে,! তুভ্যং 'নমঃ' কিম্ভূতায়—'পৃথিব্যৈ' পৃথিব্যাঃ 'দংষ্ট্রায়' প্রধান ভূতায়, 'তে অন্তে' তব সমীপে, 'মা রিষাম' মা বিনশ্যেম॥ কিঞ্চ 'সংহৃতং' সঙ্গতং, অস্মাভিসহ বিবিধং 'মা বধীঃ' মা স্ফোটয়িষ্যসি, 'বিহৃতং' বিযুক্তমপি 'মা অভিসম্বন্ধীঃ' মা অভিনৈষী রিত্যর্থঃ॥ ৩॥

'সোমোরাজা' ব্রাহ্মণানাং সোমোদেবঃ রাজা, 'সোমস্তম্বো রাজা' দর্ভস্তম্বানাং সোমো দেবঃ রাজা; 'সোমো অস্মাকং রাজা' অস্ত্বিতি, 'সোমস্য' এতন্নামকস্য 'বয়ং' উপাসকাঃ, 'স্মঃ' ভবামঃ; ॥

দিক্ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল॥ ১ ২

হে বিশ্ব সংসারের ভরণকারী অগ্নিদেব! তোমাকে নমস্কার করি, তুমি পৃথিবীর রক্ষণে প্রধানভূত হইতেছ, তোমার নিকটে থাকিয়া যেন বিনাশপ্রাপ্ত না হই, এবং আমাদিগের সহিত যাহারা একত্র হইয়া আছে তাহাদিগকে বিযুক্ত করিওনা এবং যাহারা বিযুক্ত হইয়া আছে তাহাদিগকে পুনঃ সংযুক্ত করিতে আনিওনা॥ ৩

ব্রাহ্মণদিগের সোমদেব রাজা হইতেছেন, দর্ভস্তম্বেরও সোমদেব রাজা হইতেছেন, সোমদেবই আমা-

অহি জম্ভন মসি সোমস্তং ব৺ সোমস্তম্ব মহি জম্ভন মসি ॥ ৪ ॥ যা৺ সংধা৺ সমধত্ত যূয৺ সপ্তঋষিভিঃ সহ ॥ তা৺ সর্পা মাত্যক্রামিষ্ট নমো বো অস্তু মা নো হিং৺সিষ্ট ॥৫॥ মা ন স্তোকে তনয়ে মা ন আয়ৌ মা নো

হে সোমস্তম্ব ! সোমদেবতাকোদ্‌ভর্ভ স্তম্ব ! 'অহি জম্ভনং' অহীনাং স্তম্ভনং' 'অসি' ভবসি, দ্বির্ব্বচন মাদরার্থং ॥৪॥

হে সর্পাঃ ! 'যাং সন্ধাং' সন্ধিব্যবস্থাং, 'সপ্তভিঃ ঋষিভিঃ সহ যূয়ং সমধত্ত' সম্যক্‌ ধৃতবন্তঃ, 'তাং' ব্যবস্থাং 'মাত্যক্রামিষ্ট' মা অতিক্রমত, 'নমোবোঽস্তু' 'বঃ' যুষ্মাকং 'নমঃ' অস্তু, 'নঃ' অস্মান্, 'মা হিংসিষ্ট' যূয়ং ন হিংসত ॥ ৫ ॥

হে ভগবন্ 'রুদ্র' ! 'নঃ' অস্মাকং, 'তোকে' পৌত্রাদি বিষয়ে, তনয়ে পুত্রে, 'আয়ৌ' আয়ুষি, 'গোষু, অশ্বেষু' 'মা রীরিষঃ' দিগের রাজা হইতেছেন, এই সোমদেবেরই আমরা উপাসক হইতেছি, হে সোমাধিদৈবত দর্ভস্তম্ব ! তুমি সর্প সকলের স্তম্ভনস্বরূপ হইতেছ, তুমিই সর্প সকলের স্তম্ভন স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

হে সর্প সকল ! তোমরা সাতজন ঋষির সহিত সন্ধি পূর্ব্বক যে ব্যবস্থা ভালরূপে গ্রহণ করিয়াছিলে, সে ব্যবস্থা অতিক্রমণ করিও না, তোমাদিগকে আমরা নমস্কার করি, তোমরা আমাদিগকে হিংসা করিও না ॥ ৫

৫—অগ্নির্দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। ভূমিজপে বিনিয়োগঃ।

"ভূমৌন্যঞ্চৌ পাণীপ্রনিষ্ঠাপ্য নমঃ পৃথিব্যাঽইত্যেতং মন্ত্রং জপতি" গো॰ ২, ১।

मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामिनो वधी र्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे॥८॥

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे। शतं

हिंसां मा कृथाः, किञ्च 'नः' अस्माकं 'वीरान्' विक्रान्तान् मनुष्यान्, 'भामिनः' तेजस्विनः, 'मा बधीः' हिंसां मा कृथाः 'हविष्मन्तः' यजन्तो वयं 'त्वा' त्वां, 'हवामहे' आह्वयामः, सदमीति पादपूरणे, पुनः पुनः 'मा नो' वचनं प्रार्थनायां आवश्यकत्वादुक्तम्॥ ८॥

हे 'इन्द्र'! 'नः' अस्माकं 'शरदः' अनुपाय-हेतुत्वात् शरद्भूतायाः 'शतं' शतसंख्यां 'अजीजनत्' अजीजात् अभ्यवीभवत्, सुखेन अतिवाहयतीति स्पष्टार्थः, किञ्च 'यः' इन्द्रः 'नः' 'दुरितानि' दुरुत्तराणि व्यसनानि, 'विश्वा' विश्वानि स-

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্ রুদ্র! আমাদের পুত্রপৌত্র প্রভৃতির এবং গো অশ্ব প্রভৃতির পরমায়ু বিষয়ে হিংসা করিও না, এবং আমাদিগের বীর ও তেজস্বী মনুষ্য সকলকে নষ্ট করিও না, যজনশীল আমরা তোমাকে আহ্বান করি॥ ৮॥

হে ইন্দ্র! আমাদিগের শত শত শরৎ ঋতু, সুখে

६—सोमसर्पौ देवते। निगदः। भूमिजपे विनियोगः।

"दर्भस्तम्बं समूलं प्रतिष्ठाप्य सोमोराजेत्येतं मन्त्रं जपति" गो० ३, ७।

७—सर्पो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भूमिजपे विनियोगः।

"यां सर्व्वां समधत्तेतिच" गो० ३,७।

८—रुद्रो देवता। जगतीच्छन्दः। होमकर्म्मणि विनियोगः।

"जहुयात् ** मानस्तोक इति द्वितीयाम्" गो० ३, ८।

যো নঃ শরদো অজীজা দিন্দ্রো নেষ দতিদুরিতানি বিশ্বা ॥৫॥ যে চত্বারঃ পথয়ো দেবযানা অন্তরা দ্যাবাপৃথিবী বিযন্তি ॥ তেষাং যো অজ্যানি মজীজি মাবহা স্তস্মৈ

র্বাণি' 'অতিনিষৎ' অতিশয়েন বিনাশং নীতবান্' তস্মৈ ইত্যম্ভূতায় ইন্দ্রায়'—'শতায়ুধায়', বহু-প্রকারক-বজ্রায়, 'শতবীর্য্যায়' বহুবলায়' 'শতোতয়ে' বহু-প্রকারক-পালনায়, 'অভিমাতি' অভিমানাত্মকমহত্ত্বম্ আদত্তে, 'ষাহে' স্বাহা' হবিস্তদীয়ঃ স্যাৎ ॥ ৮ ॥

হে বিশ্বেদেবাঃ !' 'যে' 'চত্বারঃ পথয়ঃ' প্রস্থানঃ, 'দেবযানাঃ' স্বর্গমার্গাঃ 'অন্তরা' মধ্যে' 'দ্যাবাপৃথিব্যোঃ' স্বর্গ-মর্ত্ত্যয়োঃ' 'বিযন্তি' বিবিধং গচ্ছন্তি' 'তেষাং' চতুর্ণাম্মধ্যে 'যঃ' দেবঃ, 'অজ্যানিং' অমৃতত্ব-প্রাপ্তি-হেতুং, 'অজীজিং' ক্ষেমেণ অভীষ্টদেশং,

অতিবিহিত করিয়া থাক এবং যে ইন্দ্র আমাদিগের দুরিত সকল একবারে বিনাশ করেন্, এবং যিনি বিবিধ আয়ুধ-বিশিষ্ট, বহুবলশালী, বিবিধ প্রকার পালনকর্ত্তা হইয়া অভিমান করিতেছেন্, তাঁহাকে এই মদীয় হবি প্রদত্ত হইল ॥ ৯ ॥

হে বিশ্বেদেবা-দেব সকল ! দ্যুলোকও মর্ত্ত্যলোকের মধ্যে বিবিধ প্রকার যে চারিটী দেবমার্গ আছে, উহার মধ্যে অমৃত লাভের হেতুভূতও কল্যাণপ্রদ বিধায় অভীপ্সিত,

৮—ইন্দ্রো দেবতা। পংক্তিশ্ছন্দঃ। আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।

"আজ্যাহুতির্নিরভি জুহোতি শতায়ুধায়েত্যেতন্ প্রভৃতিভিঃ" গো০ ২, ৮।

नो देवाः परिदत्तेह सर्वे ॥ १० ॥ ग्रीष्मो हेमन्त उत-
नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु। तेषामृतूनाम्
शत-शारदानां निवात एषामभये स्याम ॥११॥ शत-

'आवहाः' नायकाः, 'तस्मै' देवाय, 'इह नः' इहलोके स्थितान्
अस्मान्, 'परिदत्त' समर्पयत, ॥ १० ॥

'ग्रीष्मः' ग्रीष्मऋतुः, 'हेमन्तः' हेमन्तऋतुः, 'उत' अपिच,
'वसन्तः' वसन्तऋतुः, 'शरत्' शरत्ऋतुः, 'वर्षा' वर्षाऋतुः, 'नः'
अस्माकम्, एते निर्द्दिष्टाः षट् ऋतवः! यूयं मया प्रार्थ्यन्ते, यत् इदं
अस्माकं कर्म्म, तत्, युष्मत्-प्रसादेन 'सुवितं' सुकृतं 'अस्तु'
भवतु, किञ्च यत्र कर्म्मणि ते ऋतवः 'शत-शारदानां' शतः शत-
वर्त्तनेन बहु-शरद्-विशिष्टानाम्, 'तेषां' 'एषां' ऋतूनां 'अभये'
निर्भये, 'निवाते' आश्रये, 'स्याम' निर्भया भवेम ॥ ११ ॥

স্থানে, যে দেব লইয়া যাইতেছেন, সেই দেবেতে ইহ-লোক স্থিত আমাদিগকে সমর্পণ করুন, এই হবি আপনাতে সমর্পিত হইল ॥ ১০ ॥

গ্রীষ্ম ঋতু, হেমন্ত ঋতু, এবং বসন্ত ঋতু ও শরৎ ঋতু, বর্ষা ঋতু, আমাদিগের সম্বন্ধে বর্ত্তমান এই সকল ঋতুগণ! তোমরা আমাদিগকর্ত্তৃক প্রর্থিত হইতেছ—আমাদিগের অনুষ্ঠিত এই কর্ম্ম তোমাদিগের প্রসাদে উত্তম রূপে সম্পন্ন হউক ;

१०—विश्वेदेवा देवताः। त्रिष्टुप्छन्दः। आज्यहोमे विनियोगः।

११— ऋतवो देवताः। त्रिष्टुप्छन्दः। आज्यहोमे विनियोगः।

...य परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः। ...। वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग्जीता अहता-स्याम ॥ १२ ॥ भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवास्त्वया वसेन

हे स्तोतारः ! येभ्यः मनुष्य-पितृ-देव-सम्बन्धि-तत्तत्-वत्सर-विशेष-कालेभ्यः इदं हविः 'बृहत् इत्' बृहदेव, यूयं 'कृणुत' कुरुत, तस्मै 'वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय' तत्तत्-काल-विशेषाय 'नमः' 'तेषां' वत्सराणां 'यज्ञियानां' यज्ञहेतुभूतानां, 'सुमतौ' शोभनायां बुद्धौ, वर्त्तमानाः 'वयं' 'ज्योक्' चिरं, 'जीताः' दुरितानां जेतारः सन्तः, 'अहताः' अपीड़िताः, 'स्याम' भवेमेति प्रार्थयते ॥ १२ ॥

হে 'দেবাঃ !' ব্রীহিময়াঃ, 'ত্বা' ত্বাং, বয়ং 'সশীমহি' আমরা একশত শরৎ ঋতু অর্থাৎ শতসংবৎসর যেন তোমাদিগের আশ্রয়ে নির্ভয়ে থাকি, [অর্থাৎ রোগ-শোকাদি-শূন্য হইয়া যেন শতায়ু হই] ॥ ১১ ॥

হে স্তোতৃগণ ! তোমরা মনুষ্য, পিতৃ, দেব সম্বন্ধি যথাক্রমে বৎসর, পরিবৎসর, সংবৎসর নামক যে সকল কাল বিশেষে এই হবি প্রশস্ত করিয়া থাক, সেই সকল বৎসরাদি কাল বিশেষকে নমস্কার করি আমরা যজ্ঞ সকলের জনকস্বরূপ সেই সকল বৎসরাদির অধীন হওতঃ সুমতিশালী হইয়া, চিরকাল যেন দুরিত জয়ী হইয়া রোগাদিদ্বারা অসংস্পৃষ্ট হইয়া থাকি ॥ ১২ ॥

१२—संवत्सरो देवता । त्रिष्टुपछन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

सग्रीमहि त्वा ॥ स नो मयोभूः पितेवा विशस्व शं तो काय तन्वै स्योन स्वाहा । १३ ॥ अमोसि प्राण तहतं

भुञ्जीमहि, 'त्वया' 'अन्नेन' पाथेयभूतेन, नवं नवं वर्षशतं प्रापिताः वयं सश्रीका भवेमेति भावः, किञ्च यूयं 'नः' अस्मान्, 'श्रेयः' एतन्नवान्न-प्राशन-प्रभव मारोग्यं 'सम-नैष्ट' सम्यक् प्रापयत, किम्भूतान् नः? 'भद्रान्' युष्मत्-प्रसादेन नवान्न-प्राशन-योग्यान्, अपिच हे ब्रीहे! अस्माभिः यस्त्वं प्राशनः 'सः' ब्रीहिमयो देवः, 'नः' अस्मान्, 'आविशस्व' प्रविश, कथम्भूतस्त्वम्? 'पितेव मयोभूः' पिता इव सुख-जनकः, 'तोकाय' 'शं' सुखरूपो भव 'तन्वै' शरीराय, 'स्योनः' सुखकरो भव ॥ १३ ॥

हे 'प्राण!' त्वं, 'अमः' गतिशीलः, 'असि' भवसि, 'तत्' एतत्, 'ऋतं' सत्यं 'ब्रवीमि' व्यक्तं वच्मि, 'हि' यस्मात्, 'अमाः' गति-शीलाः सन्तः 'सर्व्वं' अशेषं भूतजातम् 'अनु प्रविष्टः'

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! তোমাকে আমরা যেন ভক্ষণ করি, তুমি পাথেয় স্বরূপ, তোমাকর্ত্তৃক নূতন নূতন বর্ষ সকল প্রাপ্ত হইয়া আমরা সকলে যেন শ্রীবিশিষ্ট হই, এবং তোমরা আমাদিগকে এই নবান্ন প্রাশনের আরোগ্য রূপ ফল ভাল-রূপে প্রদান কর; আমরা তোমাদিগের প্রসাদেই নবান্ন প্রাশন করিতে যোগ্য হইতেছি, অপিচ——

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! যেহেতুক তুমি আমাদিগের ভক্ষ্য হইতেছ অতএব আমাদিগের অন্তরে প্রবেশ কর, তুমি

१३—ब्रीहयो देवताः। त्रिष्टुप्छन्दः। ब्रीहि- हवि-प्राशने विनियोगः।

ত্বমীশ্যমা হ্যসি সর্ব্বং মনু প্রবিষ্টঃ । স মে জরাং রোগ-মপ মৃজ্য শরীরা দপাম এধি মা মৃথান ইন্দ্র ॥১৪॥ অগ্নিঃ প্রাশ্নাতু প্রথমঃ স হি বেদযথা হবিঃ । শিবা

'অসি' ভবসি, 'সঃ' প্রাণময়ো দেবঃ 'মে' মম, 'শরীরাৎ' বপুষঃ 'জরাং' শরীর-পরিণাম-রূপাং, 'রোগং' দুঃখজনকং বপুষি আগন্তুকং জ্বরাদি, 'অপমৃজ্য' অপনীয়, 'অপামঃ' নির্দুষ্ট-গতিকঃ সন্, 'এধি' ভব, হে 'ইন্দ্র !' সর্ব্বৈশ্বর্য্যশালিন্ ! প্রাণ ! 'নঃ' অস্মান্, 'মা মৃথাঃ' মরণং দেহাদ্বিয়োগরূপং, মা কৃথা ইত্যর্থঃ ॥ ১৪ ॥

'অগ্নিঃ !' জাঠরোঽগ্নিঃ, 'প্রথমঃ' অগ্রে, 'হবিঃ' 'প্রাশ্নাতু' প্রাশনং করোতু 'হি' যতঃ—'স' দেবঃ, 'যথা' যেন রূপেণ, তদ্ধবিঃ

পিতার ন্যায় সুখ-জনক হইতেছ, তুমি আমাদিগের পৌত্রাদির নিমিত্ত কল্যাণরূপী হইয়া উদিত হও, আমাদিগের শরীরের নিমিত্তও সুখ-কারক হও অর্থাৎ কোন রোগাদির জনক হইয়া কষ্ট দিও না ॥ ১৩ ॥

হে প্রাণ ! তুমি গতিশীল হইতেছ, ইহা আমি সত্যই বলিতেছি, যেহেতু তুমি সমুদয় ভূতবর্গেতে গতিশীল হইয়াই অনুপ্রবেশ করিয়াছ, সেই প্রসিদ্ধ প্রাণরূপী দেব আমার শরীর হইতে জরা ও রোগ সকলকে অপনয়ন করত শরীরে নির্দ্দোষ-গমন-শীল হইয়া অবস্থিতি করুন, হে প্রাণ ! তুমি আমাদিগের দেহ-বিয়োগরূপ, মরণ-দুঃখ প্রদান করিও না ॥ ১৪ ॥

১৪—প্রাণো দেবতা । ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ । অঙ্গাভিমর্শনে বিনিয়োগঃ ॥
"প্রত্যভিমৃশেরন্ মুখং শিরোঙ্গানীত্যনুলোম মমীসীতি" গো॰ ৩, ৮ ।

अस्मभ्य मोषधीः कृणोतु विश्वचर्षणि स्वाहा ॥ १५॥

एतमुत्यं मधुना संयुतं यवꣳ सरस्वत्या अधिवनावच-

'वेद' जानाति, किन्तु 'अस्मभ्य' 'शिवाः' कल्याणकरीः 'ओ-षधीः' धान्य विशेषान्, सः 'विश्वचर्षणिः' विश्वस्य जगतः 'चर्षणिः' स्रष्टा अग्निः 'कृणोतु' ददातु ॥ १५ ॥

हे इन्द्र! 'एतं' ('उ' पादपूरणे) 'त्यं' तं, 'मधुना संयुतं यवं' 'सरस्वत्या' वाचा 'वना' सम्भजनीयं, 'अध्यवचर्क्रषि' अतिशयेन अधिकारं कुरु, गृहाणेति यावत्,—इदानीं यवान्न ग्रहणे इन्द्रस्य औचित्यं दर्शयति,—'इन्द्रः' 'शतक्रतुः' शत-संख्याक-यज्ञानुष्ठायी सन्नेव 'सीरपतिः' यवाद्युत्पादकस्य 'सीरस्य मेघस्य' 'पतिः' अधिपतिः-संरक्षण-कर्त्ता, 'आसीत्' अभूत् एवं यवाद्युत्पत्ति-सहकारिणोपि 'सुदानवः' शोभन

জাঠর (জঠরে উৎপন্ন) অগ্নি প্রথমে এই হবি ভক্ষণ করুন, যেহেতু তিনি যেরূপ এই হবি অবগত আছেন আমি তদ্রূপ জানি না, কিন্তু সেই বিশ্ব সংসারের স্রষ্টা অগ্নি আমাদিগকে কল্যাণ-জনক ধান্যাদি প্রদান করুন ॥ ১৫ ॥

হে ইন্দ্র! বাক্য দ্বারা সম্যক্‌রূপে ভজনীয়, মধু-সম্মি-শ্রিত, এই যব, ভালরূপে অধিকার কর, শতবার যজ্ঞানুষ্ঠান করিয়া শতক্রতু নাম ধারী ইন্দ্র দেবতা যবাদি অন্ন সকলের উৎপাদক মেঘের অধিপতি হইয়াছেন, এবং যবাদি অন্নের

१५—जाठरोऽग्नि र्देवता। अनुष्टुप्छन्दः। श्यामाकचरु-प्राशने विनियोगः।
"अग्निः प्राश्नातु प्रथम मिति श्यामाकानाम्" गो० ३, ८।

र्द्धि ॥ इन्द्र आसीत्सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन्मरुतः सुदानवः स्वाहा ॥ १६ ॥

दातारः, 'मरुतः' वायु-विशेषाः, 'कीनाशाः' वर्षण-कर्त्तारः, आसन् अभूवन् ॥ १६ ॥

উৎপত্তিতে সহকারী, কল্যাণ-প্রদ, মরুৎ নামক বায়ু বিশেষেরাও বর্ষণকারী হইয়াছেন ॥ ১৬ ॥

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमः खण्डः ॥

———:०:———

अथ द्वितीयः खण्डः ।

***प्रथमा ह्व्युवास सा धेनुर भवद्यमे ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरामुत्तरा्ँसमाम् ॥ १ ॥ प्रतिक्षत्रे**

हे अग्रहायणि देवते ! 'सा' 'हव्युवास' हविषि पयोलक्षणे कारणतया वसति या तथारुपा, 'धेनुः' 'यमे' धर्मराजस्य तोषार्थं 'प्रथमा' अग्रा 'अभवत्' भवति । 'सा' तां 'पयस्वती' पयस्वतीं बहुतर-दुग्धवतीं धेनुं 'उत्तराम् उत्तराम्' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'दुहां' अभ्यधिक-दुग्धदायिणीं कुरु इति शेषः ॥ १ ॥

হে আগ্রহায়ণী দেবতা! ধর্ম্মরাজের পরিতোষার্থ যে ধেনু সর্ব্ব প্রথমে দুগ্ধরূপ হবির কারণরূপে আবির্ভূত হইতে-

१६—इन्द्री देवता । जगतीच्छन्दः । यवचरुप्राशने विनियोगः ।

"एतमुत्यं मधुना संयुत मिति यवानाम्' गो० ३, ८ ।

* "अग्रहायण्यां वलि हरणम्" गो० ३, ९ ।

१ —आग्रहायणी देवता । अनुष्टुप्छन्दः । चरुहोमे विनियोगः ।

প্রতিতিষ্ঠামি রাষ্ট্রে প্রত্যশ্বেষু প্রতিতিষ্ঠামি গোষু ॥ প্রতি-প্রাণে প্রতিতিষ্ঠামি পুষ্টৌ প্রত্যঙ্গেষু ॥ প্রতি-তিষ্ঠাম্যাত্মনি ॥ ২ ॥ প্রতিদ্যাবাপৃথিব্যোঃ প্রতি-

হে অগ্নে! 'প্রতিক্ষত্রে' ক্ষত্রং ক্ষত্রং প্রতি প্রত্যেক-বেশ্মনি 'প্রতিতিষ্ঠামি' প্রতিতিষ্ঠেয়ম্ প্রথিততয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয় মিত্যর্থঃ। 'রাষ্ট্রে' রাজ্যমধ্যে চ তথৈব গুণবত্তয়া 'প্রত্যশ্বেষু' অশ্বমশ্বং প্রতি প্রতিতিষ্ঠামি' সুচালকতয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্। 'গোষু' গো-প্রভৃতি-পশুষু চ তথৈব পালকতয়া। 'প্রতিপ্রাণে' প্রাণং প্রাণং প্রতি প্রাণিমাত্রে 'প্রতিতিষ্ঠামি' সুহৃত্তয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্। 'পুষ্টৌ' পুষ্টিবিষয়ে বলাদৌ চ তথৈব বলবত্তয়া। 'প্রত্যঙ্গেষু' হস্ত-পদাদিষু 'প্রতিতিষ্ঠামি' দার্ঢ্য-কর্মোপযুক্তত্বাদিনা প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্। 'আত্মনি' চেতসি চ তথৈব জ্ঞানবত্তয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ॥ ২ ॥

ছেন, বহুতর দুগ্ধবতী সেই ধেনুকে উত্তরোত্তর বর্ষে অত্যধিক দুগ্ধদাত্রী কর ॥ ১ ॥

হে অগ্নে! আমি যেন বিখ্যাত হওত প্রতি ক্ষত্রিয় গৃহে প্রতিষ্ঠিত হই, রাজ্য মধ্যেও গুণবত্তা প্রচার হওত যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এবং প্রতি অশ্বেতে সুচালকতা গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, সেইরূপ গোপ্রভৃতি পশুবিষয়েও যেন পালন কারিতা গুণে প্রতিষ্ঠিত হই, এমন কি প্রাণিমাত্রেতেই সৌহৃদ্য গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এইরূপ পুষ্টি-বিষয়ে, বলাদি বিষয়ে,

২—অগ্নির্দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। জপে বিনিয়োগঃ।
"প্রতিক্ষত্র ইত্যেষা ব্যাহৃতি র্জপতি" গো০ ৩, ৯।

তিষ্ঠামি যজ্ঞে ॥ ৩ ॥ স্যোনা পৃথিবিনো ভবানৃক্ষরা নিবেশনী ॥ যচ্ছা নঃ শর্ম্ম সপ্রথোদেবান্মা ভয়া দিতি ॥ ৪ ॥*॥ যত্পশ্ব বঃ প্রধ্যায়ত কনসা

হে অগ্নে ! 'প্রতিদ্যাবাপৃথিব্যোঃ' সর্ব্বত্রৈব 'প্রতিতিষ্ঠামি' প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ! অদ্য ইহ 'যজ্ঞে' চ প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ॥৩॥

হে 'পৃথিবি !' 'অনৃক্ষরা' পাপশূন্যা 'নিবেশনী' প্রাণিনাং ধারণকারিণী ত্বং 'স্যোনা' কল্যাণরূপা 'ভব'। 'সপ্রথঃ' বিস্তীর্ণরূপা ত্বং 'নঃ' অস্মভ্যং সর্ব্বত্রৈব 'শর্ম্ম' কল্যাণং 'যচ্ছ' দেহি। 'দেবাত্' দেব-কৃতাত্ 'ভয়াত্' 'মা' মাং পাহীতি শেষঃ ॥ ৪ ॥

হস্তপাদ প্রভৃতি সমস্ত অঙ্গবিষয়ে, দৃঢ়তাজনক কার্য্য কারিতা গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই এবং জীবাত্মা বিষয়ে বিদ্যারূপ গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ২ ॥

হে অগ্নে! প্রতি দ্যাবা পৃথিবীর সর্ব্বত্রই যেন প্রতিষ্ঠিত হই, অদ্য এই যজ্ঞে যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ৩ ॥

হে পৃথিবি! তুমি পাপশুন্যা ও প্রাণিদিগের ধারণ কারিণী হইতেছ, এবং অতিশয় বিস্তৃত হইতেছ, তুমি আমাদিগের সম্বন্ধে কল্যাণস্বরূপ হইতেছ, অতএব সর্ব্বত্র আমাদিগকে কল্যাণ প্রদান কর, এবং দৈব ভয় হইতে আমাকে রক্ষা কর ॥৪ ॥

৩—অগ্নি দেবতা । যজুঃ । জপে বিনিয়োগঃ ।

৪—পৃথিবী দেবতা । অনুষ্টুপ্ছন্দঃ । জপে বিনিয়োগঃ ।

স্যোনা পৃথিবি নো ভবে তেরসা মৃচং জপতি গো০ ৩, ৯ ।

* অথ অষ্টকা প্রকরণম্ । অষ্টকা রাত্রি দেবতেত্যাদি গো০, ৩, ১০ ।

হৃদয়েন চ॥ বাচা সহস্রপাশয়া ময়ি বধ্নামি বো মনঃ ॥৫॥* অনু ত্বা মাতা মন্যতামনু পিতানু ভ্রাতা

হে 'পশবঃ'! যূয়ং 'যৎ' যেন 'মনসা হৃদয়েন চ' 'প্রধ্যায়ত' চিন্তাং কুরুথ, তদেব 'বঃ' যুষ্মাকং 'মনঃ' মানসম্ অদ্য 'সহস্রপাশয়া' বহুতর-রজ্জু-রূপয়া 'বাচা' বিনয়বাক্যেন 'বধ্নামি' স্ববশং নয়ামি ॥ ৫ ॥

হে পশো! দৈব পৈত্রে চ কর্ম্মণি বিনিযুক্তং 'ত্বা' ত্বাং, 'মাতা' ত্বদীয়-জননী 'অনু মন্যতাম্' দেব-পিতৃ-কার্য্য-সাধনায় শরীর-বিসর্জ্জনে অনুমতিং দদাতু। 'পিতা' ত্বদীয়-জনকঃ 'অনুমন্যতাম্'। 'ভ্রাতা' বৈমাত্রেয়াদিঃ ত্বদীয়ঃ 'অনুমন্যতাম্'। 'সগর্ভ্যঃ' সোদরঃ ত্বদীয়ঃ 'অনুমন্যতাম্'। 'সখা' ত্বদীয়ঃ 'অনুমন্যতাম্'। 'সযূথ্যঃ' ত্বদীয়-যূথ-চারী অপরাপরশ্চ 'অনুমন্যতাম্' ॥ ৬ ॥

হে পশুসকল! তোমরা সকলে হৃদয়ের সহিত যে মনের দ্বারা ধ্যান করিয়া থাক, তোমাদিগের সেই মানস, অদ্য বিনয় বাক্য স্বরূপ বহুতর রজ্জুদ্বারা বন্ধন করিতেছি অর্থাৎ স্ববশে আনিতেছি ॥ ৫ ॥

হে পশো! দৈব, পৈত্র কার্য্যে বিনিযুক্ত তোমাকে তোমার জননী দেব পিতৃ কার্য্য সাধনের নিমিত্ত শরীর বিসর্জন করিতে অনুমতি প্রদান করুক, তোমার জনকও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার বৈমাত্রেয়াদি ভ্রাতারাও অনুমতি

৫—পশবো দেবতাঃ। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। হোমে বিনিয়োগঃ।

* হৃদয়াৎ যৎ পশবঃ প্রধ্যায়ন্তেতি গো০ ২, ৫।

नु सगर्भ्योनु सखा सयूथ्यः॥६॥ आत्तं देवेभ्यो हविः॥७ यत्पशुर्मायु मकृतरो वा पद्भि राहत। अग्नि र्मा तस्मा देनसो विश्वान्मुञ्च त्वंऽ हसः॥ ८॥ अग्ना वग्निश्च

हे पशो! त्वं 'देवेभ्यः' देवार्थं 'हविः' भक्ष्यम् इति 'आत्तम्' गृहीतम्॥ ७॥

हे अग्ने! अयं 'पशुः' 'यत्' यावत् परिमितम् 'आयुः' 'अकृत' प्राप्तवान् भोग्यत्वेनेति शेषः, तत् त्वं जानासीति वाक्यान्वयः। किञ्च 'ऋतः' ऋतं यज्ञं 'रोपद्भिः' स्थापयितृभिः अस्माभिः 'आहत' अयं पशु राहन्यते इति त्वं वेत्सि। 'सः' 'त्वम्' 'अग्निः' 'ह' निश्चयम् 'तस्मात्' आयुषो न्यूनी-करणरूपात् 'एनसः' पापात् 'मा' मां (न केवलं मामेव) अपितु 'विश्वान्' सर्व्वानेव याज्ञिकान् 'मुञ्च' मोचय॥ ८॥

প্রদান করুক, তোমার সোদর ভ্রাতাও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার সখা অনুমতি প্রদান করুক, অপরাপর তোমার দল-প্রবিষ্টেরাও অনুমতি প্রদান করুক॥ ৬॥

হে পশো! তুমি দেবতাদিগের নিমিত্ত হবি (ভক্ষ্য) রূপে গৃহীত হইয়াছ॥ ৭॥

হে অগ্নে! এই পশু যাবৎ পরিমিত আয়ু প্রাপ্ত হইয়াছিল, তাহা তুমি জ্ঞাত আছ, এবং সত্য যজ্ঞানুষ্ঠায়ি আমা-

---

६—पशु र्देवता। यजुः। अनुमन्त्रणे विनियोगः।
हुत्वा चानु मन्त्रयेतानुत्वा माता मन्यतामिति गो० २, ९।
७—पशु र्देवता। यजुः। उदक-सेचने विनियोगः।
आत्तं देवेभ्यो हविरित्यथैनामुदगुत् सृप्य गो० २, ९।
८—अग्नि र्देवता। अनुष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः।
पितृ-दैवत्ये संज्ञप्तायां जुहुयात् यत् पशु र्मायुमकृतेति गो० २, ९।

রতি প্রবিষ্ট ঋষীণাং পুত্রো অধিরাজ এষঃ॥ স নঃ স্যোনঃ সুযজা যজা চ যথা দেবানাং জনিমানি বেদ॥ ৯ ॥ ঔলূখলাঃ সংপ্রবদন্তি গ্রাবাণো হবিষ্কৃ-

'ঋষীণাং পুত্রঃ' ঋষিভির্মন্থনেনোৎপাদ্যমানত্বাৎ ঋষীণাং তনয় ইব 'এষঃ' যঃ 'অগ্নিঃ', 'অধিরাজঃ' অধ্যধিকদীপ্তঃ সন্ 'অগ্নৌ' আহবনীয়াগ্নৌ 'প্রবিষ্টঃ' প্রবেশং কুর্বন্ 'চরতি' হবির্ভক্ষয়তি। 'সঃ' অগ্নিঃ 'নঃ' অস্মাকং 'স্যোনঃ' কল্যাণকরঃ ভবতু। অহঞ্চ 'সুযজা' যাজ্ঞিকঃ 'দেবানাম্' তেষাং 'জনিমানি' উৎপত্ত্যাদীনি 'যথা' 'বেদ' জানামি, তথৈব 'যজা' যজে ॥ ৯ ॥

'পরিবৎসরীণাম্' প্রতি বৎসর-সম্পাদ্যমানানাং অষ্টকাণাম্ সিদ্ধ্যর্থং 'হবিষ্কৃণ্বন্তঃ' হবিষ উপযোগিন স্তণ্ডুলান্

দিগকর্ত্তৃক এই পশু হত হইতেছে—ইহাও তুমি জানিতেছ, অতএব আয়ুর ন্যূনতা করণ জন্য প্রত্যবায় হইতে অবশ্যই তুমি আমাকে—কেবল আমাকে নয়, এইরূপ সত্য যজ্ঞানুষ্ঠানে ব্রতী তাবৎকেই মোচন করব ॥ ৮ ॥

ঋষিদিগকর্ত্তৃক অরণিদ্বয় মন্থনে উৎপন্ন বিধায় ঋষিদিগের পুত্ররূপী যে অগ্নি অত্যধিক প্রদীপ্ত হওত আহবনীয় অগ্নিতে প্রবেশ করিয়া হবি ভক্ষণ করেন, সেই অগ্নি আমাদিগের কল্যাণ-প্রদ হউন, আমি যাজ্ঞিক, সেই সকল দেবদিগের যেরূপ উৎপত্ত্যাদি অবগত আছি, তদনুরূপেই যাগ করিতেছি ॥ ৯ ॥

৯—অগ্নি দেবতা। বিরাট্ ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। হোমে বিনিয়োগঃ।
চতুর্গৃহীত মাজ্যম্ গৃহীত্বাষ্টর্চং প্রথমযা জুহুযাদ্গ্রাবগ্নি রিতি গো০ ৪, ১।

খন্তঃ পরিবৎসরীণাম্॥ একাষ্টকে সুপ্রজসঃ সুবীরা জ্যোগ্ জীবেম বলিহৃতো বয়ং তে ॥ ১০॥ ইডায়াস্পদং ঘৃতবৎসরীসৃপং জাতবেদঃ প্রতি হব্যা গৃভায়॥ যে

নিষ্পাদয়ন্তঃ 'ঔলূখলাঃ' উলূখল-রূপেণ পরিণতাঃ ইমে 'গ্রাবাণঃ' পাষাণাঃ 'সম্প্রবদন্তি' অস্ফুট-শব্দং কুর্ব্বন্তি। হে 'একাষ্টকে!' এক-সংখ্যান্বিতে অদ্য বর্ষীয়ে অষ্টকে! 'তে' ত্বৎসিদ্ধ্যর্থং 'বলিহৃতঃ' বল্যাহরণকারিণঃ 'বয়ং' 'সুপ্রজসঃ' সুন্দর-প্রজয়া সমন্বিতাঃ কিঞ্চ 'সুবীরাঃ' সমর্থাশ্চ সন্তঃ 'জ্যোক্' দীর্ঘকালং 'জীবেম' প্রাণধারণং কুর্ম্ম ইতি প্রার্থয়ে ॥ ১০ ॥

হে 'জাতবেদঃ'! অগ্নে! 'ইড়ায়াস্পদম্' অন্নস্য স্থানং 'ঘৃতবৎ' ঘৃতেন সিক্তম্ অতএব 'সরীসৃপং' সুচিক্কণং 'প্রতিহব্যা'

প্রতি বৎসরে সম্পাদ্যমান অষ্টকা সকলের সাধন করিতে হবির উপযোগী তণ্ডুলের নিষ্পাদন কারি' উলূখল রূপে পরিণত, এই সকল পাষাণেরাও সম্যক্‌রূপে অস্ফুট শব্দ করিতেছ, হে একাষ্টকে! (এই বৎসরের অষ্টকা) তোমার সাধনে প্রবৃত্ত আমরা বলির আহরণ করিতে তৎপর হইয়া সুন্দর পুত্রাদি দ্বারা সমন্বিত এবং সমর্থ থাকিয়া দীর্ঘকাল যেন জীবিত থাকি—ইহা প্রার্থনা করি—॥ ১০ ॥

হে জাতবেদঃ অগ্নে! তুমি অন্নের আস্পদ, ঘৃতসিক্ত, অতএব চিক্কন, এইরূপ হবনীয় দ্রব্য মাত্রই গ্রহণ করিয়া আমাকে এই বর দাও—বিবিধাকারে বর্ত্তমান যে সকল গ্রাম্য গো

১০,১১—অনয়োঃ অষ্টকা দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। হোমে বিনিয়োগঃ।

তৃতীয় পাত্র মবদায় দ্বিতীয়াতৃতীয়াভ্যাং জুহোতি গো০ ৪, ১।

গ্রাম্যাঃ পশবো বিশ্বরূপা স্তেষাং সপ্তানাং ময়ি রন্তি রস্তু॥১১॥ এষৈবসা যা পূর্ব্বা ব্যৌচ্ছত্ সেয় মপ্স্বন্তস্চরতি প্রবিষ্টা॥ বসূর্জ্জিগায় প্রথমা জনিত্রী বিশ্বে হ্যস্যাং মহিমানো অন্তঃ॥১২॥ এষৈব সা যা প্রথমা

হবনীয়-দ্রব্যমাত্রং 'গৃভায়' গৃহাণ। গৃহীত্বা চ মহ্যমমুং বরং দেহি—যত্, 'যে গ্রাম্যাঃ' 'বিশ্বরূপাঃ' বিবিধাত্মকাঃ 'পশবঃ' গোমহিষ্যাদয়ঃ তেষাং 'সপ্তানাং' বহূনাং 'ময়ি' মদ্গৃহে 'রন্তি' রমণং-প্রসন্ন ভাবঃ 'অস্তু'॥ ১১॥

'যা' অষ্টকা 'পূর্ব্বা' প্রথমকালীনৈব 'বি ঐচ্ছত্' বিশেষেণ প্রকাশমানবতী 'সা' এব 'এষা'। কিঞ্চ যা 'অপ্সু' নদী-তড়াদি স্থিতেষু 'অন্তঃ প্রবিষ্টা' সতী 'চরতি' ভ্রমতি 'সা এব 'ইয়ম্'। বসূঃ পার্থিবান্ সমস্তদ্রব্যান্ 'জিগায়' জিতবতী। ইয়ঞ্চ প্রথমা 'প্রধানা' 'জনিত্রী' জানয়িত্রী কামানা মিতি শেষঃ। 'অস্যাম্ অন্তঃ অষ্টকায়াং মধ্যে 'বিশ্বে' সর্ব্বে 'হি' এব 'মহিমানঃ' সন্তি॥ ১২॥

মহিষ প্রভৃতি পশু সকল রহিয়াছে তৎসমুদয়েরই আমার গৃহে প্রসন্নতা থাকুক্॥ ১১॥

পূর্ব্বকালেতে যে অষ্টকা বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল, সেই এই অষ্টকা, এবং যে অষ্টকা জলেতে প্রবিষ্ট হইয়া ভ্রমণ করিতেছিল, সেই অষ্টকা এই পার্থিব সমস্ত দ্রব্য জয় করিয়াছে, এই প্রধানা, ও কামনা সকলের জননকারিণী হইতেছে, এই অষ্টকারই মধ্যে সমস্ত মহিমা আছে॥ ১২॥

১২—অষ্টকা দেবতা ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ। অবদানে বিনিয়োগঃ।
চতুর্থী-পঞ্চমীভ্যাং ষষ্ঠী-সপ্তমী-ভ্যাঞ্চ শেষ মবদায় গো০ ৪, ১.।

व्यौच्छत् सा धेनु रभवद्विश्वरूपा॥ संवत्सरस्य या पत्नी सा नोअस्तु सुमङ्गली॥१३॥ यां देवाः प्रति पश्यन्ति रात्रीं धेनु मिवायतीं॥ सा नः पयस्वती दुहा उतरा मुत्तराᳬ समाम्॥१४॥ संवत्सरस्य प्रतिमां

'एषा एव सा' अष्टका, 'या' 'प्रथमा' पूर्व्वकालीना एव 'वि ऐच्छत्' विशेषं प्रकाशमाप्तवती। 'सा' इयं 'विश्वरूपा' बहुजनसेव्यत्वात् बहुरूपा, 'धेनुः' यथाभिलषितप्रदत्वात् काम-धेनुरिव। 'या' इयं 'संवत्सरस्य' 'पत्नी' भोग्यत्वात् उच्यते वेदे, 'सा' 'नः' अस्माकं 'सुमङ्गली' कल्याणी 'अस्तु' ॥ १३ ॥

'देवाः' द्योतमानाः 'यां' 'धेनुम् इव आयतीम्' यथा गोष्ठात् धेनु रागच्छतीव तथैव वर्षान्ते पुनरागच्छतीव अष्टका इति तां 'रात्रीं' उत्तराष्टकां प्रति 'पश्यन्ति' आगमन-पथं निरीक्षन्ति, 'सा' अष्टका रात्री 'दुहा' 'कर्म्म-फलानि दुह्यन्ते यस्या स्तथा भूता 'उत्तराम् उत्तराम्' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'पयस्वती' अभ्यधिक-दुग्धवतीवभव तु ॥ १४ ॥

এই অষ্টকাই—সেই, যে পূর্ব্বকালেতে বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল, যে অষ্টকা বহু লোকের সেব্য বিধায়, বহুবিধ অভিলষিত প্রদান করায় কামধেনু স্বরূপ, এবং যে—সংবৎসর কাল পর্য্যন্ত ভোগ্য হওয়ায় সংবৎসরের পত্নীস্বরূপ, সেই অষ্টকা আমাদিগের সমন্ধে সুমঙ্গল দায়িনী হউক ॥ ১৩ ॥

গোষ্ঠ হইতে ধেনুর আগমনের ন্যায় বর্ষান্তে পুনরাগমশীল যে—সেই উত্তর-অষ্টকা, তাহার আগমন পথ দেব-

१३, १४, १५—एषां सर्व्वं पूर्व्ववद्। बृहतीच्छन्दः इत्येव भेदः।

ত্বা রাত্রি! যজামহে॥ প্রজামজর্য্যাং নঃ কুরু রায়স্পো
ষেণ সংসৃজ॥ ১৫ ॥ অন্বিয়ন্নো অনুমতি র্যজ্ঞং
দেবেষু মন্যতাম্। অগ্নিশ্চ হব্যবাহনঃ স নো ঽদাদ্দা
শুষে ময়ঃ॥ ১৬ ॥

হে 'রাত্রি'! অষ্টকায়া রজনি! 'সংবৎসরস্য' 'প্রতিমাং' পরিমাপয়িত্রীং 'যাং' 'ত্বা' ত্বাং 'যজামহে' বয়ং, সা ত্বং 'নঃ' অস্মাকং 'প্রজাং' 'অজর্য্যাং' জরা-শূন্যাং 'কুরু'; কিঞ্চ অস্মান্ 'রায়স্পোষেণ' ধনস্য সম্বন্ধি-পোষণেন 'সং সৃজ' অতিসর্জয়॥ ১৫ ॥

'ইয়ং' 'অনুমতিঃ' দেবী 'দেবেষু' ইন্দ্রাদিষু 'যজ্ঞম্' ইদং 'অনুমন্যতাম্ বোধয়তাম্'। 'হব্যবানঃ' হব্যানাং বহনকারী 'চ' 'সঃ' অয়ম্ 'অগ্নিঃ' 'দাশুষে' হবির্দত্তবতে যজমানায় 'নঃ' মহ্যং 'ময়ঃ' সুখম্ 'অদাত্' দদাতু॥ ১৬ ॥

তারা নিরীক্ষণ করিতেছেন, সেই অষ্টকা রাত্রি (উত্তরাষ্টকা) অত্যধিক দুগ্ধবতী গোর ন্যায়-উত্তরোত্তর বর্ষে ইষ্ট-ফল-প্রসবিনী হউক ॥ ১৪ ॥ হে অষ্টকা-রাত্রি! তুমি সংবৎসরের পরিমাণকর্ত্রী, তোমাকে আমরা পূজা করিতেছি, তুমি আমাদিগের অপত্যাদিকে জরা শূন্য কর, এবং আমাদিগকে ধনের রক্ষণ সহকারে পালন কর ॥ ১৫ ॥

এই অনুমতি দেবী ইন্দ্রাদি দেবগণেতে যজ্ঞ বোধন কারন্, এবং হব্য-সমুদয়ের বহনকারী এই অগ্নি দেবতা, দত্ত-হবিস্ক* আমাদিগকে সুখ প্রদান করুন ॥ ১৬ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয়প্রপাঠকস্য দ্বিতীয় খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

১৬—অগ্নির্দেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। হোমে বিনিয়োগঃ। সৌবিষ্টকৃতমষ্টম্যা জুহুয়াত্, গো০ ৪.৭

*দত্ত-হবিস্ক—দত্ত হইয়াছে হবি যাহা কর্ত্তৃক।

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वं ॥ ६ ॥
अमी मदंत पितरो यथाभागमावृषा इषत् ॥ ७ ॥
नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः शूषाय ॥

'पितरः' 'अत्र' पिण्डे 'मादयध्वम्' तृप्यत, 'यथा भागम्' यो यस्य भागः तम् 'आवृषायध्वम्' अभिलषत ॥ ६ ॥

अनेन पिण्डदानेन 'अमी' 'पितरः' 'मदन्तः' तृप्तवन्तः सन्तः 'यथा भागम्' यो यस्य भागः तं 'आवृषा इषत्' अभिलषितवन्तः गृहीतवन्तः ॥ ७ ॥

हे 'पितरः' 'वः' युष्मभ्यं 'नमः' नमामि, कस्मै? इत्युच्यते— 'जीवाय' दीर्घजीवनाय । 'शूषाय' बलाय । 'घोराय' परितृप्तये

ক্রমে আচরিত, পথেরদ্বারা এই স্থানে আগমন কর; আসিয়া এই সংসারে আমাদিগকে দ্রব্য দাও, এবং কল্যাণ, দাও; অপিচ, অন্নধন এরূপ প্রদান কর যদ্বারা পুত্র পৌত্রাদি সকল অনায়াসে জীবন নির্ব্বাহ করিতে পারে ॥ ৫ ॥

পিতাসকল এই পিণ্ডে তৃপ্ত হউন যাহার যে ভাগ তাহা লাভ করুন ॥ ৬ ॥

এই পিণ্ডদান করায় এই সকল পিতারা পরিতৃপ্ত হইয়া আপনার আপনার ভাগ গ্রহণ করিলেন ॥৭॥

হে পিতাসকল! আপনাদিগকে নমস্কার করিতেছি, দীর্ঘজীবী হইবার নিমিত্ত, বলী হইবার নিমিত্ত, পরিতৃপ্ত

६, ७ — अनयोः पितरो देवताः । यजुः । जपे विनियोगः ।

'जपत्यत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमित्यपर्य्यावृत्य पुरोच्छ्वासादभिपर्य्यावर्त्त-मानो जपे दमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषा इषतेति" गो० ४,३ ।

नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसाय ॥८॥ नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यवे॥ नमो वः पितरः पितरो नमो वः॥ ९ ॥ गृहान्नः पितरो दत्त ॥ १० ॥ सदोवः पितरो देष्म॥ ११ ॥

'रसाय' आनन्दाय ॥ ८ ॥ स्वधायै' अन्नाय 'मन्यवे' क्रोधाय— क्रोधमूल-सम्पत्तये । अन्यत् सुगमम् ॥ ९ ॥

हे 'पितरः !' 'गृहान्नः' गृहस्य अन्नानि 'दत्त' प्रयच्छत । अथवा 'नः' अस्मभ्यं 'गृहान् 'दत्त' प्रयच्छत ॥ १० ॥

हे "पितरः' 'वः' युस्मभ्यं 'सदः' स्थानं 'देष्म' वय मिति शेषः ॥ ११ ॥

হইবার নিমিত্ত, আনন্দ লাভের নিমিত্ত, অন্নলাভের নিমিত্ত, ইহ লোকে উপকারি-ক্রোধের মূলীভূত-সম্পত্তির নিমিত্ত, বার বার নমস্কার করিতেছি ॥ ৮ ॥—॥ ৯॥

হে পিতাসকল! গৃহের অন্ন [ভক্ষ্য] সকল প্রদান কর, অথবা আমাদিগকে গৃহ প্রভৃতি স্থাবর পদার্থ সকল প্রদান কর ॥১০ ॥

হে পিতাসকল! তোমাদিগকে আমরা এই স্থান উপবেশন করিতে দিলাম ॥ ১১ ॥

८, ९— अनयोः, पितरो देवताः । उष्णिक् छन्दः । जपे विनियोगः ।

'पूर्व्वस्यां कर्ष्वां दक्षिणेनोत्तानौ पाणी कृत्वा—नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरो शूषायेति मध्यमायां, सव्योत्तानौ-नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसायेत्युत्तमायां, दक्षिणोत्तानौ—नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यव इति, अथाञ्जलिकृतो जपति – नमो वः पितरः पितरो नमो व इति गो॰ ४, ३ ।

१०— पितरो देवता । यजुः । गृहिण्य वेक्षणे विनियोगः ।

'गृहानवेक्षते गृहान्नः पितरो दत्तेति' गो॰ ४, ९ ।

११ — पितरो देवताः । यजुः ।पिण्डावेक्षणे विनियोगः ।

'पिण्डानवेक्षते सदो वः पितरो देष्मेति' गो॰ ४, ११ ॥

एतद्वः पितरो वासः॥१२॥ ऊर्ज्जं वहन्तीः रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतꣳस्वधास्थतर्पयत मे पितॄन्॥१३॥ आधत्त पितरो गर्भंकुमारंपुष्करस्रजं॥ यथेह पुरुषस्यात्॥ १४ ॥

हे 'पितरः !' 'वः' युष्माकम् 'एतत्' 'वासः' परिधेयं वसनम् ॥ १२ ॥

हे आपः ! यूयं 'स्वधा' पितॄणां परमाशिषः 'स्थ' भवथ, अतः 'ऊर्ज्जम्' अन्नम् 'अमृतम्' जरामृत्यु-शून्य-कारिणम् मधु, 'घृतं', 'पयः' क्षीरं 'कीलालम्' जलञ्च 'परिस्रुतं' इदं सर्व्वं 'वहन्तीः' वहन्त्यः 'एतॄन्' इमान् 'तर्पयत' परितृप्तान् कुरुत ॥ १३ ॥

हे 'पितरः!' 'पुष्करस्रजम्'। अम्बरमाला-धारिणम् सूर्य्यं चन्द्र मिव वा 'कुमारं' पुत्ररूपं 'गर्भं' 'आधत्त' प्रददत। पुनश्चो-

হে পিতাসকল ! তোমাদিগকে আমরা এই বস্ত্র পরিধান করিতে দিলাম ॥ ১২ ॥

হে জল ! তোমরা পিতৃদিগের পরম সুখ-দায়ক হইতেছ এই হেতু অন্ন, ও জরা-মৃত্যু-প্রভৃতির বিনাশক মধু, ঘৃত, দুগ্ধ, এবং পরিস্রুত জল এই সকল বহন করত এই সকল পিতাকে পরিতৃপ্ত কর ॥ ১৩ ॥

१२—पितरो देवताः । यजुः । सूत्रदाने विनियोगः ।
सूत्रतन्तुं गृहीत्वा ** पिण्डे निदध्यात् ** पितुर्नाम गृहीत्वा सावेतत्त वासो—येचात्रत्वानुयांश्च त्वमनु तस्मै ते स्वधेति, गो० ४,३ ॥

१३—पितरो देवताः । पिपीलिक मध्योष्णिक् छन्दः । पिण्डपरिषेके विनियोगः ॥
'पिण्डान् परिषिञ्चेदूर्जं वहन्तीरिति' गो० ४, ३ ।

१४—पितरो देवताः । गायत्री छन्दः पिण्ड प्राशने विनियोगः ।
'मध्यमं पिण्डं पत्नी पुत्रकामा प्राश्नीयादाधत्त पितरो गर्भमिति गो० ४,३ ।

अभून्नोदूतो हविषो जात वेदा अवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ॥ प्रादात् पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन् प्रजानन्नग्ने पुनरेहि योनिं ॥ १५ ॥
वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैतान्वेत्थ निहितान् पराचः ॥ मेदसः कुल्या अभितान्

ष्यते—'इह' मद्गर्भे 'पुरुषः' पुरुष इति विख्यातः तनयो 'यथा-स्यात्' तथा प्रसन्नो भवेति शेषः ॥ १४ ॥

'जातवेदाः' अग्निः 'नः' अस्माकं सम्बन्धिनः 'हविषः' 'दूतः' वाहकः 'अभूत्'। अतएव 'हव्यानि' अस्मद्दत्तानि 'सुरभीणि कृत्वा' 'अवाट्' वहनं कृतवान्। 'स्वधया' अस्मदुक्तया वाचा सह तानि च 'पितृभ्यः' 'प्रादात्' दत्तवान्। 'ते' च पितरः 'अक्षन्' तानि भक्षितवन्तः। इदानीं प्रार्थये—हे 'अग्ने !' पितृभक्षणं 'जानन्' सन् 'योनिं' स्वस्थानम् अत्र 'पुनः एहि' पुनः प्रत्यागच्छ ॥ १५ ॥

হে পিতাসকল! আকাশরূপি মালাধারি সূর্য্যের ন্যায় বা ঐরূপ চন্দ্রের ন্যায় পুত্ররূপি গর্ভ প্রদান কর, পুনশ্চ এই আমার গর্ভ পুরুষ বলিয়া খ্যাত্যাপন্ন পুত্র, যেরূপে হয় এবম্বিধ আশীর্ব্বাদ কর ॥ ১৪ ॥

জাতবেদ নামক অগ্নি, অস্মদাদি-প্রদত্ত-হবির দূত (বাহক) হইয়াছিল, অতএব অস্মদাদি প্রদত্ত-হব্য সমুদয়কে সুগন্ধি করত বহন করিয়া ছিল; স্বধা রূপি অস্মদাদ্যুক্ত বাক্য-সহকারে সেই সমুদয় হব্য পিতৃগণকে দিয়াছিল; পিতৃলোকেরা

१५—अग्निर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। उल्मुका भ्युक्षणे विनियोगः।
"अभून्नो दूतो हविषो जातवेदा इत्युल्मुक मभिरभ्युक्षा" गो ४, ३।

स्तत्रं तु सत्या एषा माशिषः संतु कामात् स्वाहा ॥ १६ ॥
जातवेदो वपया गच्छ देवाꣳ स्त्वꣳहि होता प्रथमो

हे 'जातवेदः' अग्ने ! यत्र' यस्मिन् प्रदेशे 'एतान्' 'वा' पितॄन् 'पराचः' गमन-पराङ्मुखान् उपविष्टानिति यावत् 'निहितान्' स्थितान् 'इच्छ' जानीहि, तत्रैव प्रदेशे तेभ्यः 'पितृभ्यः' 'वपां' मेदः [चरवि] 'वह' प्रापय। 'मेदसः' अस्य 'कुल्याः' कृत्रिमासरितः 'तान्' 'अभिस्रवन्तु'। 'एषाम्' तेषामं 'कामात्' इच्छातः हेतोः 'आशिषः' आशीर्व्वादाः 'सत्याः' अनृताः सफलाः 'सन्तु' ॥ १६ ॥

हे 'जातवेदः' अग्ने ! 'हि' यतः 'त्व'' 'प्रथमः' मुख्यः 'होता' সেই সমুদয় ভক্ষণ করিয়াছিলেন ; সম্প্রতি প্রর্থিতেছি— হে অগ্নে! পিতৃলোকের ভক্ষণ জ্ঞাত হইয়া স্বস্থানে (এইস্থলে) পুনঃ প্রত্যাগমন কর ॥ ১৫ ॥

হে জাতবেদ অগ্নে ! যে প্রদেশে গমন-পরাঙ্‌মুখ, অবস্থিত, এই সকল পিতৃলোককে জানিবা, সেই স্থানেতে পিতৃদিগকে মেদ বহন করিয়া দাও,—এই মেদের কুল্যা (কৃত্রিম-সরিৎ) প্রস্তুত করত অভিষেক কর; এই সকল পিতৃদিগের স্বেচ্ছা পূর্ব্বক প্রদত্ত আশীর্ব্বাদ-সকল সত্য (সফল) হউক ॥ ১৬ ॥

---

१६ अग्नि र्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। वपाहोमे विनियोगः।

* 'अथान्वष्टक्य स्थालीपाकेन' इति गो॰ ४, ४।
'पितृ देवत्ये षु पशुषु वह वपां जात वेदः पितृभ्य इति वपां जुहुयात् गों ४, ४ ।

* अथोतो हलाभियोगः गो॰ ४, ४।
"स्थालीपाकस्य जुहुयादेकाष्टका तपसा तप्यमानेति" गो॰ ४, ४ ॥

বভূব॥ সত্যা বপা প্রগৃহীতা মে অস্তু সমৃধ্যতাং মে যদিদং করোমি ॥১৭॥ যৎ কুসীদমপ্রদত্তং ময়েহ যেন যমস্য নিধিনা চরামি ॥ ইদং তদগ্নে অনৃণো ভবামি জীবন্নেব প্রতিদত্তে দদানি ॥ ১৮ ॥ একাষ্টকা-তপসা

দেবানামাহ্বাতা 'বভূব', অতঃ 'বপয়া' অস্মদ্দত্তয়া গৃহীতয়া 'দেবান্' ইন্দ্রাদীন্ গচ্ছ। ইয়ঞ্চ 'মে' মম 'প্রগৃহীতা' প্রদানায় বপা' 'সত্যা' দোষশূন্যা 'অস্তু' ত্বৎপ্রসাদাদিতি ভাবঃ। 'যৎ ইদং' কর্ম্ম করোমি তৎ 'সমৃধ্যতাম্' সমৃদ্ধি-যুক্তং কুরু ॥ ১৭ ॥ হে 'অগ্নে!' 'ইহ' জন্মনি 'যৎ' 'কুসীদম্' 'অপ্রদত্ত'' ন দত্তম্, 'যেন' হেতুনা 'যমস্য' ধর্ম্মরাজস্য 'নিধিনা' কেশ-গ্রহণেন 'চরামি' অহ মিতি যাবৎ, 'তৎ' 'ইদং' কুসীদম্ 'দদানি' প্রতিদত্তে চ অস্মিন্, অহং 'জীবন্ এব' জীবিত শরীর এব 'অনৃণঃ' ঋণশূন্যো ভবামি ॥ ১৮ ॥

হে জাতবেদ অগ্নে! যেহেতু তুমি দেবতাদিগের মুখ্য আহ্বান-কর্ত্তা হইয়াছিলে, অতএব তুমি অস্মদ্দত্ত বপার সহিৎ ইন্দ্রাদি-দেবতা দিগের নিকটে যাও, তোমার প্রসাদে আমার দানের নিমিত্ত আয়োজিত বপা (মেদ) দোষ-শূন্য হউক, আমি এই যজ্ঞ করিতেছি অতএব আমাকে সমৃদ্ধিশালী কর ॥ ১৭ ॥

হে অগ্নে! এই জন্মে যাহা কিছু ঋণ করিয়া কুসীদ (শুদ) প্রদান করি নাই;—যেহেতু আমি ধর্ম্মরাজ-কর্ত্তৃক যেন কেশা-

১৭—অগ্নি দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। বপা হোমে বিনিয়োগঃ।

'দেব দেবত্যে ষু জাতবেদো বপয়া গচ্ছ দেবানিতি" গোঁ ৪, ৪।

১৮—অগ্নির্দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। হোমে বিনিয়োগঃ।

ঋণে প্রজ্ঞায়মানে গোলকানাং মধ্যম পর্ণেন জুহুয়াৎ যৎ কুসীদমিতি গোঁ ৪,৪।

তপ্যমানা জজান গর্ভং মহিমান মিন্দ্রং ॥ তেন দেবা অসহন্ত শত্রূন্‌হন্তা সুরাণা মভবচ্ছচীভিঃ ॥ ১৯ ।

‘একাষ্টকাতপসা’ এক সংখ্যকাষ্টকায়াঃ তপসা শাস্ত্রোক্ত বিধিবত্ কর্ম্মণা ‘তপ্যমানা’ তপঃ কর্ম্মবতী কাচিত্ অদিতিঃ অখণ্ডনীয়া নিত্যাশক্তিঃ ‘মহিমানং’ মহত্বযুক্তম্ ‘ইন্দ্রং’ ঐশ্বর্য্যশালিনং ইন্দ্রনামকং বা ‘গর্ভং’ ‘জজান’ জনিতবতী। ‘তেন’ ইন্দ্রেণ অধিপতিভূতেন সহ মিলিত্বা ‘দেবাঃ’ বায়্বাদয়ঃ ‘শত্রূন্’ বৃত্রাদীন্ ‘অসহন্ত’ পরাভূতান্ কৃতবন্তঃ। ততঃ প্রভৃতি স ইন্দ্রঃ ‘শচীভিঃ’ বৃত্রবধাদিভিঃ স্বকর্ম্মভিঃ ‘অসুরাণাং’ ‘হন্তা’ ইতি প্রসিদ্ধঃ ॥ ১৯ ॥

কর্ষিত হইয়া আচরণ করি অতএব সেই কুসীদ দিব, এবং দিতেছি, জীবিত থাকিতে থাকিতেই এ শরীরে ঋণ-শূন্য হইব ॥ ১৮ ॥

বিধিমত একটি অষ্টকারূপ তপোদ্বারা তপ্যমান কোন এক অখণ্ডনীয় অদিতি নাম্নী নিত্যাশক্তি, মহিমাশালি ইন্দ্র-নামে গর্ভ প্রাদুর্ভূত করিলেন, বায়ু প্রভৃতি দেবতারা সেই অধিনায়ক ইন্দ্রের সহিৎ মিলিত হইয়া বৃত্রাদি শত্রু-দিগকে পরাভব করিয়াছিলেন্ তদবধি সেই ইন্দ্র বৃত্রবধাদি স্বীয় ক্রিয়া রূপিণী শচীর সহিৎ বিরাজমান হইয়া অসুর-দিগের হন্তা বলিয়া প্রসিদ্ধ হইলেন্ ॥ ১৯ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয় প্রপাঠকস্য তৃতীয়-খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

---

১৯ — ইন্দ্রাণী দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। স্থালী পাক হোমে বিনিয়োগঃ।

॥ অথ চতুর্থঃ খণ্ডঃ ॥

ইদং ভূমে র্ভজামহ ইদং ভদ্রং সুমঙ্গলং ॥ পরা সপত্না নবাধস্বান্যেষাং বিন্দতে বস্বন্যেষাং বিন্দতে ধনং ॥১॥

ইমং স্তোম মর্হতে জাতবেদসে রথমিব সংমহেমা

হে অগ্নে! 'ভূমেঃ' 'ইদং' খণ্ডং স্থণ্ডিলাত্মকং 'ভজামহে, 'ইদং' 'ভদ্রং' কল্যাণকরং 'সুমঙ্গলং' মঙ্গলকরং পুনরুক্ত্যা অতি-কল্যাণকরং অস্মাকং ভবত্বিতি শেষঃ। কিঞ্চ 'সপত্নান্' অস্মচ্ছত্রূন্ 'পরাবাধস্ব' সুষ্ঠু পীড়য়স্ব। কিঞ্চান্যদপি 'অন্যেষাং' পরেষাং শত্রূণাং 'বসু' ধনম্ 'বিন্দতে' লভতে ইত্থং যাজক ইতি শ্রুতমিত্যভিপ্রায়ঃ॥ 'অন্যেষাং বিন্দতে ধনম্'—ইত্যংশস্তু 'অন্যেষাং বিন্দতে বসু' ইতি স্থানীয়ং রাণী পাঠমিতি যুক্ত মত ॥ ১ ॥

'ইমং' 'স্তোমং' স্তবং, 'সম্মহেমা' পূজোপকরণযুক্তং কুর্য্যাম, —কিমর্থং? 'জাত বেদসে' এতন্নামকায়াগ্নয়ে, 'অর্হতে' স্তুত্যায়, 'মনীষয়া' প্রজ্ঞয়া, সারথি র্যথা 'রথমিব' রথং সম্মহেমা তদ্বত্

হে অগ্নে! আমরা ভূমির এই স্থণ্ডিল ভাগ উপাসনা-করিতেছি তুমি আমাদের কল্যাণকর, মঙ্গলকর অতিশয় কল্যাণকর হইতেছে. অতএব আমাদের সপত্ন-শত্রুদিগকে ভাল-রূপে পীড়া দাও এবং অন্যান্য শত্রুদিগের ধন হরণ কর॥ ১ ॥

নিজ প্রজ্ঞাবলে সারথি যেমন রথকে চালনোপযুক্ত করে তদ্রূপ আমরা এই স্তুতিকে জাতবেদ নামক অগ্নির নিমিত্ত পূজোপকরণে উপযুক্ত করি, যেহেতু, এই অগ্নির

১—অগ্নির্দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। ভূমি জপে বিনিয়োগঃ।

*'কাম্যেষ্যত জঙ্গম্ গীং ৪, ৫।

ভূমৌ ন্যস্তৌ পাণী প্রতিষ্ঠাপ্যেদং ভূমির্ভজামহ ইতি বস্বন্তং রাণী ধর্মমিতি গীং ৪,৫।

मनीषया ॥ भद्रा हि नः प्रमति रस्य सᳫसद्यग्ने सख्ये मारिषामा वयं तव ॥२॥ भरा मेध्यं कृणवामा हवीᳫंषि ते चितयन्तः पर्व्वणा पर्व्वणा वयं ॥ जीवातवे प्रतराᳫ साधया धियोऽग्ने सख्ये मारिषामा वय न्तव ॥३॥

इति शेषः। 'हि' यतः, 'नः' अस्माकं, 'अस्य' अग्नेः प्रसादात्, 'भद्रा' कल्याणी 'प्रमतिः' प्रकृष्टा मतिः, 'संसदि' सभायां जायते; हे 'अग्ने!' 'तव' 'सख्ये' सख्यतया अवस्थिताः वयं सर्व्वे, केनाप्यनेन दुरात्मना 'मा' 'रिषामा' मा हिंसिस्महि ॥२॥

हे 'अग्ने!' त्वदर्थं, 'इध्म' यज्ञदारु, 'भवाम' आहरामः, 'हवींषि' चरु-प्रभृतीनि, 'पर्व्वणा पर्व्वणा' पर्व्वणि पर्व्वणि, 'चितयन्तः' उत्पादयन्तः, 'कृणवामा' सम्पादयामः, निर्व्वपामइति यावत्, किमर्थं?—'प्रतरां' सुदीर्घकालं, 'जीवातवे' जीवनाय, किञ्च 'धियः' कर्म्माणि 'साधया' सफलानि कुरु, शिष्टं पूर्व्ववत् ॥ ३ ॥

প্রসন্নতাতেই আমাদের, সভাতে কল্যাণদায়িনী প্রকৃষ্ট-বুদ্ধি হইয়াথাকে, হে অগ্নে! তোমার সখ্যভাবে অবস্থিত আমরা সকলে, যেন কোন দুরাত্মাদি কর্ত্তৃক নষ্ট না হই ॥ ২॥

হে অগ্নে! দীর্ঘায়ুর নিমিত্ত আমরা যজ্ঞ-কাষ্ঠের আহরণ ও পর্ব্বে পর্ব্বে চরু প্রভৃতি হব্য সকলের সম্পাদন করিয়া, তোমাকে দান করি, তুমি আমাদিগের কার্য্য-সকল সফল কর, আমরা তোমার সহিৎ সখ্যভাবে অবস্থিত, আমাদিগকে যেন কোন দুষ্টাত্মা হিংসা না করে ॥ ৩ ॥

२,३,४ — एषां त्रयाणां अग्निमारुते देवते। जगती छन्दः। परिसमूहने विनियोगः। इमं स्तोममिति त्यृचेन परिसमूहेत् गो४, ५ ।

শকেম ত্বা সমিধঙ্ সাধয়া ধিয় স্তে দেবা হবি রন্ত্যাহুত'॥ ত্ব মাদিত্যা ঙ্ আবহ তান্ হ্যুশ্মস্যগ্নে সখ্যে মারিষামা বয় ন্তব॥ ৪॥ তপশ্চ তেজশ্চ শ্রদ্ধাচ হ্রীশ্চ সত্যঞ্চা ক্রোধশ্চ ত্যাগশ্চ ধৃতিশ্চ ধর্ম্মশ্চ সত্ব'চ

হে 'অগ্নে' ত্বং অস্মাকং 'ধিয়ঃ' কর্ম্মাণি, বুদ্ধীর্ব্বা 'সাধয়া' সাধয়, ত্বদারাধনযোগ্যানি নিষ্পাদয়। যথা বয়ং 'ত্বা' ত্বাং, 'সমিধং' পরিচরিতুং 'শকেম' শক্নুয়াম, 'তে' ত্বয়ি, 'আহুতং' দেবাঃ 'অদন্তি' ভক্ষয়ন্তি, অতস্ত্বং 'তান্' 'আদিত্যান্' অদিতেঃ পুত্রান্, 'আবহ' আবাহয় 'হি' যতঃ বয়ং 'তান্' আদিত্যান্ 'উশ্মসি' কাময়ামহে। শিষ্টং পূর্ব্ববৎ॥ ৪॥

'তপশ্চ' ইত্যাদি যানি 'তানি' অহং 'প্রপদ্যে' শরণং গতোঽস্মি। 'তানি' তপঃ-প্রভৃতীনি ব্রহ্মপর্য্যন্তানি 'মাং' 'অবন্তু'

হে অগ্নে! তুমি আমাদের কর্ম্মসকল ও বুদ্ধিসকল তোমার আরাধনের যোগ্য কর, যাহাতে আমরা তোমার পরিচর্য্যা করিতে যোগ্য হই, তোমাতে যাহা আহুতি দেওয়া যায়, তাহা দেবতারা ভক্ষণ করেন, অতএব তুমি সেই অদিতিপুত্র দেবগণকে আহ্বান কর, আমরা তাঁহাদিগকে কামনা করিতেছি, আমরা তোমার সহিত সখ্য ভাব অবলম্বন করিয়া থাকি, কোন দুরাত্মা যেন আমাদিগকে হিংসা না করে॥ ৪॥

তপ, তেজ, শ্রদ্ধা, লজ্জা, সত্য, অক্রোধ, ত্যাগ, ধারণা, ধর্ম্ম সত্ব, বাক্য, মন, আত্মা, ব্রহ্ম, এই সকলের আমি শরণাপন্ন হইতেছি, এবং এই তপঃ প্রভৃতি ব্রহ্ম পর্য্যন্ত আমাকে

বাক্ চ মনশ্চাত্মাচ ব্রহ্মচ তানি প্রপদ্যে তানি মা-মবন্তু ভূর্ভুবঃ স্বর্ ওঁ মহান্ত মাত্মানং প্রপদ্যে ॥ ৫ ॥ বিরূপাক্ষোঽসি দন্তাঞ্জি স্তস্য তে শয্যা পর্ণে গৃহা অন্তরিক্ষে বিমিতꣳ হিরণ্যয়ং তদ্দেবানাꣳ হৃদয়ান্য-

রক্ষন্তু। তত্র 'ভূঃ' পৃথিবী, 'ভুবঃ' অন্তরীক্ষং, 'স্বঃ' দ্যৌ এতৎ ত্রিলোক-ব্যাপকম্ 'ওঁ' ইত্যেতৎ প্রতীকেন বোধ্যং 'মহান্তং' অতিমহৎ-পরিমাণম্ অনন্তম্ 'আত্মানম্' আত্মস্বরূপম্ 'প্র-পদ্যে' প্রপন্নোঽস্মি ॥ ৫ ॥

হে অগ্নে ! ত্বং 'বিরূপাক্ষঃ' অনিয়মিত চক্ষু বিশিষ্টঃ সহ-স্রাক্ষঃ অনন্তাক্ষ ইতি যাবৎ 'অসি' ভবসি, 'দন্তাঞ্জিঃ' ব্যক্ত দন্তশ্চ অসি সর্ব-ভুক্ত্বাৎ । 'তস্য' এবম্ভূতস্য 'তে' তব 'পর্ণে'

রক্ষা করুন, আমি ভূ (পৃথিবি) ভুব [অন্তরীক্ষ] স্ব [দ্যু] এই ত্রিলোকব্যাপক, ওঁ—এই প্রণব বাচ্য, অতি মহান্ আত্মার, শরণাপন্ন হইতেছি ॥ ৫ ॥

হে অগ্নে ! তুমি বিরূপাক্ষ (অনন্তনয়ন) এবং ব্যক্ত দন্ত হইতেছ, তোমার শয্যা শুষ্ক তৃণ পত্রাদিতে হইয়া থাকে, বিদ্যুৎ রূপে প্রকাশিত হওয়ায় অন্তরীক্ষে হিরণ্ময় গৃহ, বিশেষ-রূপে যেন নির্ম্মিত হইয়া আছে· সেই হেতু তোমার গৃহস্থিত লৌহময় ঘটের মধ্যে ইন্দ্রাদি দেবগণের মন যেন স্থাপিত হইয়া আছে, তুমি অমুদ্রিত নয়ন রাক্ষসের অপেক্ষায় প্রমাদ-শূন্য ও সমধিক বলশালী হইতেছ ; তুমি বলের অবসাদ-

৫— রুদ্ররূপীঽগ্নির্দেবতা । নিগদঃ । জপে বিনিয়োগঃ ।

কাম্যে যুক্ত প্রপদস্তপশ্চ তেজস্বীতি জপিত্বা গোঁ ৪,৫ ।

यस्मये कुम्भे अन्तः सन्निहितानि बलभृच्च बलसाच्च रक्षतो प्रमनी अनिमिषतः सत्यं यत्ते द्वादश पुत्रा स्ते त्वा सम्वत्सरे सम्वत्सरे कामप्रेण यज्ञेन याजयित्वा पुनर्ब्रह्मचर्यमुपयन्ति त्वं देवेषु ब्राह्मणोऽस्यहं मनुष्येषु, ब्राह्मणो वै ब्राह्मण मुपधावत्युप त्वा धावामि

सुष्कहृण-पश्चाद्धी 'मध्या' सुखशयन-स्थानम् अस्ति। 'अन्तरिक्षे' च 'हिरण्ययं' हिरण्मयं 'विमितं विशेषेण निर्मितं 'गृहा' गृहम् अस्ति विद्युद्रूपेण विद्योतमानत्वात्। 'तत्' तत्र च गृहे, 'अयस्मये' लोहमये 'कुम्भे' घटे 'अन्तः' मध्ये, 'सन्निहितानि' स्थापितानि इव देवानां इन्द्रादीनां 'हृदयानि' मनांसि सन्ति सर्वेषां हविर्वाहकत्वात्। 'अनिमिषतः' अक्षिणी अनिमीलितः 'रक्षतः' अपेक्षया 'अप्रमणी' प्रमाद-शून्यः स अधिकः 'बलभृत्' बल-शाली 'च' अपिच 'बलसात्' बलस्य सीदयिता

কারী হইতেছ তোমার দ্বাদশটী আত্ম-ভাবাপন্ন পুত্র সকল যাহা প্রসিদ্ধ আছে, তাহা সত্য; সেই সকল পুত্রেরা প্রতি বৎসরে যথাভিলষিত ফলপ্রদ যজ্ঞের দ্বারা তোমাকে যজন করাইয়া পুনঃপুনঃ ব্রহ্ম-সামীপ্য প্রাপ্ত করায়; তুমি সমস্ত দেবতাদিগের (সমস্ত প্রদীপ্ত বস্তুদিগের) মধ্যে ব্রাহ্মণ [মুখ্য] হইতেছ, আমি মনুষ্যদিগের মধ্যে ব্রাহ্মণ হইতেছি; ব্রাহ্মণই ব্রাহ্মণের অর্থাৎ স্বজাতীয়ই সজাতীযের বিশেষ উপকার করিতে পারে অতএব তোমার জপানুষ্ঠায়ি আমার প্রতি প্রতিকূল জপ করিও না; তোমার উদ্দেশে হবন কারি আমার প্রতি প্রতিকূল হবন করিও না; যাগাদ্যনুষ্ঠান কারি আমরা

জপন্তং মা মাপ্রতিজাপী র্জুহ্বন্তং মা মাপ্রতিহৌষীঃ কুর্ব্বন্ত মা মাপ্রতিকার্ষ্যী স্ত্বাং প্রপদ্যে, ত্বয়া প্রসূত ইদং কর্ম্ম করিষ্যামি তন্মে রাধ্যতাং তন্মে সমৃধ্যতাং ত ন্ম উপপদ্যতাং সমুদ্রো বিশ্বব্যচা ব্রহ্মা নুজানাতু তুর্য্যো মা বিশ্ববেদা ব্রহ্মণঃ পুত্রোনুজানাতু

ত্বমসীতি শেষঃ। 'তে' তব দ্বাদশ সংখ্যকাঃ 'পুত্রাঃ' আত্মভাবাঃ ইতি 'যত্ প্রসিদ্ধং' তত্ সত্যম্। 'তে' পুত্রাঃ 'সংবত্সরে সংবত্সরে' প্রতিহায়নে 'কামপ্রেণ' যথাভিলষিতফলেন 'যজ্ঞেন' 'ত্বাম্' 'যাজয়িত্বা' 'পুনঃ' পুনশ্চ 'ব্রহ্মচর্য্যম্' ব্রহ্ম-সামীপ্যম্ 'উপযন্তি' প্রাপ্নুবন্তি। 'ত্বং' 'দেবেষু' সমস্ত-প্রদীপ্ত-বস্তুষু 'ব্রাহ্মণঃ' মুখ্যঃ 'অসি', অহং 'মনুষ্যেষু' ব্রাহ্মণঃ ব্রাহ্মণকুলোত্পন্ন ইতি যাবত্; 'ব্রাহ্মণো বৈ ব্রাহ্মণম্' সজাতীয় এব সজাতীয়ম্ উপধাবতি উপকরোতি, অতঃ 'জপন্তং' 'মা' মাং 'মা প্রতিজাপীঃ' প্রতিকূলজপং মা কুরু—'কুর্ব্বন্তং' যাগাদ্যনুষ্ঠান কারিণং 'মা'

প্রতি প্রতিকূল যাগ করিও না, আমি তোমাকে শরণ লইতেছি; তোমাকর্ত্তৃক অনুজ্ঞাত হইয়াই আমি এই কার্য্য করিতেছি; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সিদ্ধ হইবে, এবং তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সমৃদ্ধি যুক্ত হইবে; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য উপপন্ন হইবে; আপনি সমুদ্রের ন্যায় অসীম, সর্ব্বত্রগামী, ব্রহ্মা, [অতি বৃহৎ পরিমাণক] হইতেছেন্; আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি তুর্য্য (দব, বাড়ব, জাঠর, বৈদ্যুৎ ভেদে চতুর্থ) সর্ব্ববিৎ, ব্রাহ্মণের পুত্র [ঈশ্বরের পুত্র]

श्वात्रोमा प्रचेता मैत्रा वरुणो नुजानातु तस्मै विश्वरू पाक्षाय दन्ताञ्जये समुद्राय विश्वव्यचसे तुथाय विश्व-

मां 'मा प्रतिकार्षीः' प्रतिकूलं कर्म मा कुरु। 'त्वां' 'प्रपद्ये' प्रपन्नोस्मि। 'त्वया' 'प्रसूतः' अनुज्ञातः अहम् 'इदं' 'कर्म' करिष्यामि 'तत्' तस्मात्-त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म 'राध्यतां' सिद्धं भवतु किञ्च 'तत्' तस्मात्—त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म 'समृद्ध्यतां' समृद्धि युक्तं भवतु—'तत्' तस्मात् त्वत्-प्रसादात् 'मे' ममेदं 'कर्म' 'उपपद्यताम्' उपपन्नं भवतु। 'समुद्रः' समुद्रइव असीमः, 'विश्वव्यचाः' विश्वं समस्त-पदार्थं विविधम् अञ्चति गच्छति यः—सः विश्वव्यचाः सर्व्वगः, 'ब्रह्मा' अति वृहत् परिमाणकः भवान् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'तुथ्यः' दव, वाड़व, जाठर, वैद्युतेति भेदात् चतुर्थत्व मापन्नः, 'विश्ववेदाः' सर्व्ववित् सर्व्वज्ञत्वात्, 'ब्रह्मणः पुत्रः' ईश्वरस्य तनय प्रसिद्धः आदिसृष्टि इति रूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'श्वात्रः' श्वापदभयात् त्राता, 'प्रचेता' प्रवृद्धज्ञानः, 'मैत्रावरुणः' मित्रस्यसू—र्य्यस्य वरुणस्य—चन्द्रस्य च अंशः, तेजोरूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'विरूपाक्षाय' विरूपाक्ष नामतः प्रसिद्धाय १, 'दन्ताञ्जये' दन्ताञ्जिनामतः प्रसिद्धाय २, 'समुद्राय' समुद्रनामतः प्रसिद्धाय ३,

রূপে প্রসিদ্ধ, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি শ্বাপদ ভীতি হইতে ত্রাণকর্ত্তা, প্রবৃদ্ধজ্ঞান শীল, সূর্য্য চন্দ্রের অংশ স্বরূপ, হইতেছেন্, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; বিরূপাক্ষ, ১ দন্তাঞ্জি, ২ সমুদ্র, ৩ বিশ্বব্যচা, ৪ তুর্য্য ৫ বিশ্ব-

বেদসে শ্বাত্রায় প্রচেতসে সহস্রাক্ষায় ব্রহ্মণঃ পুত্রায় নমঃ ॥ ৬ ॥ সহস্র বাহুঃ গৌপত্যঃ সপশূ নভি রক্ষতু ॥ ময়ি পুষ্টিং পুষ্টিপতি র্দধাতু ময়ি প্রজাং

‘বিশ্বব্যচসে’ বিশ্বব্যচানামতঃ প্রসিদ্ধায়, ‘তুর্থ্যায়’ তুর্থ্যনামতঃ প্রসিদ্ধায় ৫, ‘বিশ্ববেদসে’ বিশ্ববেদোনামতঃ প্রসিদ্ধায় ৬, ‘শ্বাত্রায়’ শ্বাত্রনামতঃ প্রসিদ্ধায় ৭, ‘প্রচেতসে’ প্রচেতো নামতঃ প্রসিদ্ধায় ৮, ‘সহস্রাক্ষায়’ সহস্রাক্ষ নামতঃ প্রসিদ্ধায় ৯, ‘ব্রহ্মণঃ পুত্রায়’ ব্রহ্মপুত্র নামতঃ প্রসিদ্ধায় ১০, ‘তস্মৈ’ অগ্নয়ে ‘নমঃ’। অত্রে-দমপ্যবধেয়ং—বিরূপাক্ষাদীনি দশ নামানি, ‘ব্রহ্মা’ ইতি পূর্ব্ববর্ণিতঞ্চ নাম, অগ্নিনাম্না সংকলনয়া দ্বাদশ সংখ্যাং পূরয়তি, ইত্থঞ্চ অগ্নে র্দ্বাদশ পুত্রা ইতি প্রসিদ্ধিঃ; অতএব ভাগবতে দ্বাদশ পুত্রাঃ দ্বাদশ নামানীত্যুক্তম্ ॥ ৬ ॥

‘গৌপত্যঃ’ গোপতিঃ পশুপতিঃ রুদ্রঃ ‘সঃ’ ‘সহস্রবাহুঃ’ অনন্তবাহুঃ সন্ ‘পশূন্’ গবাদীন্ ‘অভিরক্ষতু’ রক্ষাং করোতু।

বেদা ৬ শ্বাত্র, ৭ প্রচেতা ৮ সহস্রাক্ষ ৯ ব্রহ্ম-পুত্র ১০ এই সকল নামে প্রসিদ্ধ অগ্নিকে নমস্কার করি [এই দশটী এবং পূর্ব্ব বর্ণিত ব্রহ্মা ও সামান্য অগ্নি এই দুইটী নাম,—এই সমুদয়ে দ্বাদশটী সঙ্খ্যা পরিপূর্ণ হয়, সুতরাং অগ্নির দ্বাদশ পুত্র বলিয়া প্রসিদ্ধি সিদ্ধ হইল] ॥ ৬ ॥

সেই প্রসিদ্ধ, পশুপতি রূদ্র, সহস্রবাহু বা অনন্তবাহু

---

৬ – রুদ্ররূপোগ্নির্দেবতা ॥ নিগদঃ । জপে * বিনিয়োগঃ ।

*এষ এব জপো বিরূপাক্ষ জপ ইত্যুচ্যতে ।

‘প্রাণায়ামায়ম্যার্থমনা বৈরূপাক্ষ মারভ্যো জুহেন্ গো০ ৪,৫ ।

प्रजापतिः स्वाहा ॥ ७ ॥ कौतोमतं ॥ संवननंसुभागं करणं मम ॥ नाकुली नाम ते माता यथाहं पुरुषानयः॥ यन्नौकामस्य विच्छिन्नं तन्नौ संधे ह्योषधे! ॥ ८ ॥

'पुष्टिपतिः' पुष्टिदोदेवः 'मयि' मत्पशौ 'पुष्टिं' दधातु। 'प्रजापति र्देवः 'मयि' मत्पशौ 'प्रजां' वत्सादिकं दधात्विति काकाक्षिगोलकन्यायेनान्वयः ॥ ७ ॥

'कौतोमतं' कुतः मन्यते प्रकाश्यते इति न जाने इत्यर्थे कुतोमतमेव कौतोमतं—वचनं, 'संवननं' सम्यक् भजनात्मकं, त्वं 'मम' 'सुभगं करणं' सौभाग्य कारि, भवसि, 'ते' तव 'माता' 'नाकुली' नकुलवत् विलवासस्वभावा, जिह्वेति भावः। 'अपि' 'अहं' 'पुरुषानयः' पुरुषेण हृदिस्थेन नीयते उच्चारणादि-सर्व्वकर्मसु। इदानीम् ओषधिं प्रार्थये—'नौ' आवयोः दम्पत्योः 'यत्' यावत् 'कामस्य' प्रणयस्य 'विच्छिन्नं' विभिन्नं वर्त्तते, हे 'ओषधे!' 'नौ' आवयोः 'तत्' तावत् 'सन्धेहि' सन्धिभावापन्नं कुरु ॥ ८ ॥

হইয়া গবাদি পশুসকলকে রক্ষা করুন, আপনি পুষ্টিদাতা হইতেছেন, আমাতে পুষ্টি প্রদান করুন ; আপনি প্রজাপতি হইতেছেন, আমাকে এবং আমার বৎসাদিকে পুষ্ট করুন ॥ ৭ ॥

তুমি সম্যক্‌রূপে উপাসনীয়, কুতোমত (অজ্ঞাত প্রকা-

७—प्रजापति र्देवता। उष्णिक् छन्दः। पशुस्वस्त्ययने विनियोगः।
पशुस्वस्त्ययन कामो व्रीहि यव होमं प्रयुञ्जीत सहस्र वाहु गौंपत्य इति गो० ४,५।
८—वागोषधी देवते। त्रिपादनुष्टुप् छन्दः। युग्ममहा वृक्ष फलदाने विनियोगः
"कौतोमतेन महा वृक्ष फलानि परिजप्य प्रयच्छेत्" गो० ४,५।

সর্ব্বৌমা বিৱাসন! বিৱাসয়॥১১॥ কোশ ইব পূর্ণো বসু-
না ত্বং প্রীতো দদসে ধনং॥ অদৃষ্টো দৃষ্টমাভর সর্ব্বান্
কামান্ প্রযচ্ছমে॥ ১২॥ আকাশস্যৈষ আকাশো যদে-

আশ্রিতমস্তি। হে 'বিৱাসন!' প্রকাশক! 'তেন' 'সর্ব্বেণ' ম-
হিম্না 'মা' মাং 'বিৱাসয়' প্রকাশয়॥ ১১॥

'ত্বং' 'কোশইব' কোশো ধনাগারং যথা ধন পূর্ণং ভবতি তথা
'বসুনা' ধনেন 'পূর্ণঃ' অসি, কিঞ্চ 'প্রীতঃ' প্রসন্নঃ সন্ ধনং
'দদসে'। 'অদৃষ্টঃ' বহিরিন্দ্রিয়াদিভিরলক্ষ্যস্ত্বং 'দৃষ্টং' যত্ফলং
তত্ 'আভর' আহর আনয়, 'মে' মহ্যং 'সর্ব্বান্' 'কামান্' অভি-
লষিতান্ 'প্রযচ্ছ' প্রদেহি॥ ১২॥

'এষঃ' আত্মা 'আকাশস্য' অবকাশস্য অপি 'আকাশঃ'
অবকাশ অন্তর্হিতঃ, কিং স্বরূপ ইত্যাহ—'যত্' 'এতত্' আকা-

আশ্রিত আছে, হে প্রকাশক! সেই সকল মহিমার দ্বারা
আমাকে প্রকাশিত কর॥ ১১॥

ধানাগার যেরূপ ধনপূর্ণ হয়, তুমি সেইরূপ ধন পূর্ণ
হইতেছ; এবং প্রসন্ন হইয়া ধন প্রদান করিয়া থাক; তুমি
বহিরিন্দ্রিয়াদি দ্বারা অলক্ষ্য হইতেছ, দৃষ্ট যে ফল তাহা
আহরণ কর; আমাকে অভীপ্সিত-সকল প্রদান কর॥ ১২॥
এই আত্মা অবকাশ স্বভাবাত্মক, আকাশেরও আকাশ—অর্থাৎ

১১। আত্মা চন্দ্রমা বা দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। তিল তণ্ডুল হোমে বিনিয়োগঃ।
"তৃতীয়য়া চন্দ্রমসি তিলতণ্ডুলান্" গো ৪, ৫।

১২—আত্মা আদিত্যোবা দেবতা অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। উপস্থানে বিনিয়োগঃ।
"চতুর্থ্যাদিত্য মুপস্থায়ার্থান্ প্রপদ্যেত" গো০ ৪, ৫।

तद्भाति मण्डलं ॥ एवं त्वा वेद यो वेदेशानेशान् प्रयच्छ मे ॥१३॥ भूर्भुवः स्व रोऽं सूर्य्य इव दृशे भूयास मग्निरिव तेजसा वायुरिव प्राणेन सोम इव गन्धेन

शाद वहिस्थ 'मण्डलं' परिधिः 'भाति' दीप्यते, तत् ब्रह्म आत्मेति च। हे 'वेदेशान' वेदाधिप! आत्मन्! 'त्वा' त्वाम् एवं एवम्प्रकारेण 'यो' यः—अहं 'वेद' जानामि, तस्मै 'मे' मह्यं 'ईशान्' ऐश्वर्य्यान् प्रयच्छ ॥ १३ ॥

हे 'भूर्भुवः स्वरोम्!' 'भूः' पृथिवी, 'भुवः' अन्तरीक्ष, 'स्वः' द्यौः—एतल्लोकत्रय-व्यापक! 'ओं' आत्मन्! [अथवा पृथिवी-स्थानोऽग्निः, अन्तरीक्षस्थो वायुः, स्वस्थः सूर्य्यः, ओ मित्यात्मनः प्रतीकं एतच्चतुष्टय मेवात्र सम्बोध्यम्] भवतः प्रसादात् 'दृशे' समदर्शनाय 'सूर्य्यइव' 'भूयासम्', 'तेजसा' 'अग्निः इव' यथा अग्निस्तेजस्वी तथा भूयासम्, 'प्राणेन' प्रभावेन 'वायुरिव'

অবকাশ-দায়ক ; তাহা কিরূপ ?—যাহার আকাশ হইতেও বাহিরে পরিধি ভান হইতেছে ; উহা ব্রহ্ম, বা আত্মা হইতেছে ; হে বেদাধিপ ! আত্মন্ ! তোমাকে এই রূপেই আমি জানিতেছি, আমাকে ঐশ্বর্য্য প্রদান কর ॥ ১৩ ॥

হে ভূর্ভুবঃস্বঃ [ত্রিলোক] ব্যাপক, প্রণব [ওঁ]বোধ্য আত্মন্ ! আপনার প্রসাদে সকল বস্তুর সমদর্শনে যেন সূর্য্যের ন্যায়, তেজেতে যেন অগ্নির ন্যায় প্রভাবেতে যেন বায়ুর ন্যায়, গন্ধ গ্রহণে যেন চন্দ্রের ন্যায় বুদ্ধিতে যেন বৃহস্পতির ন্যায়

१३—आत्मा आदित्योवा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। उपस्थाने विनियोगः।
"पश्चम्यादित्य मुपस्थाय गृहान् प्रपद्येत" गो० ४, ५।

যতঃ পার্শ্বয়ো রুত্তুতা নধি॥ ভরস্তো বহুদান্ ঘোরান্ বিঘনান্ বিষ্টহামিব স্বাহা ॥ ৩ ॥ বন্ধুণাভ্যাং মে লোহিতা দান্যো নিহান্যজ্জিহানধি ॥ জরুভ্যো

'মে' মম 'বাহুভ্যাং' 'উত্' ঊর্দ্ধ্বং স্থিতান্, 'তু' অপিচ 'পার্শ্বয়োঃ' উভয়োঃ 'যতীয়তঃ' 'অধি' অধিকৃত্য বর্ত্তন্তে, 'ভ-রস্তঃ' বক্ষঃ প্রদেশাত্ত 'তান্' 'বহুদান্' 'ঘোরান্' 'বিঘনান্' 'বঃ' যুস্মান্ বৈশ্রবণান্ 'বিবৃহামি' ॥ ৩ ॥

'মে' মম অঙ্গেষু 'অধি' অধিকারিণঃ বৈশ্রবণান্ কীদৃশান্ ?— 'লোহিতাদান্' লোহিতানি রক্তানি যে অদন্তি তাদৃশান্ 'যোনি-হান্' যোনিং উত্পত্তিস্থানং যে ঘ্নন্তি তাদৃশান্ অশ্লিষ্যমাণস্য অশ্লিষ্যমাণায়া বা-প্রাণ বিয়োগভয়শূন্যেন যে শ্লিষ্যন্তে আলি-

দিগকে আমার গ্রীবা হইতে স্কন্ধদ্বয় হইতে নাশিকাদ্বয় হইতে এবং আমার বদনমণ্ডল হইতে ভালরূপে দূরীভূত করিতেছি ॥ ২ ॥

বাহুদ্বয়ের ঊর্দ্ধ্বভাগে অবস্থিত, পার্শ্বদ্বয়ে যতটুকু অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, এই রূপ বক্ষ স্থলে বর্ত্তমান, ভয়ানক, বিনা-শন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ, তোমাদিগকে আমরা বাহুদ্বয়ের ঊর্দ্ধ্ব প্রদেশ হইতে পার্শ্বদ্বয়ে ততটুকু স্থান হইতে এবং বক্ষ স্থল হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৩ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, শোণিত ভক্ষক, যোনি-(উৎপত্তি স্থান) ঘাতক, আমাকর্ত্তৃক কোন পুরুষ বা স্ত্রী গাঢ় আলিঙ্গিত হইলে তাহাদের প্রাণ বি-

निस्लिषो घोरान् विषनान् विबृहामिव स्वाहा ॥ ४ ॥
जंघाभ्यां मे यतोयतः पाष्णाँ रुत्तानधि ॥ पादयो
र्विकिरान् घोरान् विषनान् विबृहामिव स्वाहा ॥ ५ ॥
परिबाधं यज्ञामहे ग्रुजंघ७ शवलोदर॥ यो नोयं

ह्नन्ते तादृशान् 'घोरान्' 'विषनान्' 'वः' युस्मान् वैश्रवणान् 'अक्षाभ्यां' अक्षियुगलात् 'जरुभ्यः' जरुद्वयस्य सर्व्वतश्च 'विब्रहामि' ॥ ४ ॥

'मे' मम अङ्गेषु 'अधि' अधिकारिणः वैश्रवणान्; कीदृशान् ?—'जङ्घाभ्यां' 'उत्' उपरिष्टात् 'स्थितान्' 'पार्ष्णिः' गुल्फाधोभागयोः यतो यतः सर्व्वतः स्थितान् पादयोः च 'यतः' यत्र यत्र स्थितान्, 'तान्' तादृशान् 'विकिरान्' विक्षेपकान् 'घोरान्' विषनान् 'वः' युस्मान् 'विब्रहामि' ॥ ५ ॥

'यः' 'अयं' यक्षः 'नः' अस्मभ्यं 'दानाय' 'भगाय' ऐश्वर्य्याय 'च' परिबाधते अभीष्ट-फल-दातॄन् देवानिति यावत्, तम्

য়োগ হইবে এবম্বিধ ভীতি শূন্য, অতএবই ভয়ানক-সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ বলিয়া প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে অক্ষিযুগল হইতে ঊরুদ্বয় হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৪ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, অর্থাৎ জঙ্ঘাদ্বয়ের উপরি ভাগে অবস্থিত, পাদদ্বয়ের যে টুকু স্থান ব্যাপিয়া অবস্থিত, বিক্ষিপ্ত কারক, অতএবই ভয়ানক, ও সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে সেই সেই স্থান হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৫ ॥

পুনর্মায়ন্তু দেবতা যামদপচক্রমুঃ ॥ মহস্বন্তো মহান্তো ভবাম্যস্মিন্ পাত্রে হরিতে সোম পৃষ্ঠে ॥ ১০ ॥ রূপ রূপং মে দিশঃ প্রাতরহ্নস্য তেজসঃ ॥ অন্নমুগ্রস্য প্রাশিষমস্তু বয়িমযি ত্বয়ীদমস্তু ত্বয়ি ময়ীদং ॥ ১১। যদিদং পশ্যামি চক্ষুষা ত্বয়া দত্তং প্রভাসয়া ॥ তেন মা

'দেবতাঃ' অভীষ্টদেবাঃ 'অস্মিন্' প্রত্যক্ষে 'সোমপৃষ্ঠে' 'হরিতে' পাত্রে 'যামত্' গৃহীতুম্ 'অপচক্রমুঃ' গতবন্তঃ, তে চ 'মা' মাং 'পুনঃ আয়ন্তু' পুনরাগচ্ছন্তু, অহঞ্চ 'মহস্বন্তঃ' মহস্বান্ তেজস্বী 'মহান্তঃ' মহান্ 'ভবামি' ভবেয়মিতি প্রার্থয়ে ॥ ১০ ॥

হে 'রূপ !' দৃশ্যমান-সমস্ত-রূপাত্মক ! আদিত্য ! 'প্রাতরহ্নস্য' প্রভাতস্য তেজসঃ রূপং মহ্যং 'দিশ' বিসর্জয়, দেহীত্যর্থঃ। 'উগ্রস্য' প্রদীপ্তস্য তব অন্নম্ আশিষম্ অস্তু মদর্থমিতি যাবত্। 'ময়ি' মদন্তিকে যত্ অস্তি, তত্ 'ইদং' হব্যং 'ত্বয়ি' 'অস্তু' 'ত্বয়ি' চ যদস্তি 'ইদং' সামর্থ্যং তত্ 'ময়ি' অস্তু। ১১ ॥

'ত্বয়া' 'দত্তং' দত্তয়া প্রকটিতয়া 'প্রভাসয়া' 'যত্' কিঞ্চন

যে অভীষ্টদেবেরা এই সোম পৃষ্ট পাত্রে আসিয়াছেন্ তাঁহারা আমার প্রতি আগমন করুন্; আমি যেন মহান্ ও তেজস্বী হই —এই প্রার্থেতেছি ॥ ১০ ॥

হে দৃশ্যমান সমস্তের রূপ (চক্ষু) স্বরূপ আদিত্য ! প্রাতঃকালের রূপ আমাকে প্রদান কর, তোমার প্রদীপ্ত স্বরূপ আমার নিমিত্ত আশীর্ব্বাদ হউক, আমার নিকটে যাহা কিছু আছে; সেই সকল তোমাতে সমর্পিত হউক, এবং তোমাতে যাহা কিছু সামর্থ্যাদি আছে তাহা আমাতে হউক ॥ ১১ ॥

भुङ्क्ष्व तेन भुक्षिषीय तेन मा विश॥१२॥ अहर्नो अत्य- पीपरद्रात्रिर्नो अतिपारयत्॥ रात्रिर्नो अत्यपीपरद- हर्नो अतिपारयत्॥१३॥ आदित्य नाव मारोहं

इदं' हव्यं 'चक्षुषा' पश्यामि, 'तेन' हविद्रव्येण प्राप्तेन 'मा' मां 'भुङ्क्ष्व' गृहाण, किञ्च 'तेन' सामर्थ्येन सह त्वं 'मा' माम् 'आविश प्रविश; आवयोः ऐकात्म्यं भवत्विति प्रार्थनाभि प्रायः॥ १२॥

अहः' दिवारूपः त्वत्-कृतः कालः 'नः' अस्मान् 'अति' अतिशयेन 'अपीपरत्' पुनः पुनः प्रतिदिनं परतु पालनं करोतु, 'रात्रिः' अपरश्च त्वत्-कृतः कालः 'नः' अस्मान् अति अतिशयेन 'पारयत्' पारयतु दुस्तरं जीवनं याप- यतु। अथवा 'रात्रिः' एवं 'नः' अस्मान् 'अत्यपीपरत्' प्रति- दिनं अतिशयेन पालनं करोतु, 'अहः' च 'नः' अस्मान् 'पार- यत्' पारयतु दुस्तरं जीवनं यापयतु, उभयथा त्वमेवास्य पाता संहर्त्तेतिचाभिप्रायः॥ १३॥

তোমার আলোকে যাহা কিছু এই মদ্দত্ত হব্য চক্ষুর- ারা দেখিতেছি, সেই প্রাপ্ত হবি-দ্রব্য ারা আমাকে ভোগ কর; এবং আমি ও তোমার সামর্থ্য প্রাপ্ত হইয়া উপভোগ করি; তুমি সেই সামর্থ্যের সহিৎ আমাতে আবেশ কর, অর্থাৎ তোমাতে আমাতে একাত্মভাব হউক-এই প্রা- র্থনা॥ ১২॥

ত্বৎকৃত দিবারূপ কাল প্রতিদিন আমাকে ভালরূপে রক্ষা করুক; এবং ত্বৎকৃত রাত্রিরূপ কাল, ভালরূপে

पूर्णां मपरि पादिनीं॥ अच्छिद्रां पारयिष्णवीꣳ शतारित्राꣳ स्वस्तये ॥ ओन्नम आदित्याय नम आदित्याय नम आदित्याय ॥ १४॥ उद्यंतंत्वादित्यानूदियासं ॥१५॥

हे 'आदित्य !' 'नावम्' नौ-यानम् 'आरोक्षम्' आरोहितवान् कीदृशं नावमित्याह—'पूर्णां' पूर्णावयवां 'अपरिपादिनीम्' आपच्छून्यां, 'अच्छिद्रां' छिद्ररहितां, 'पारयिष्णवीं' भवार्णव पारकरण समर्थां 'शतारित्रां' बहुजनस्य विपत्त्राण कारिणीं, एतादृशीं कृपातरिम् आरोहितवानित्यर्थः ॥ १४ ॥

हे 'आदित्य !' 'उद्यन्तं' 'त्वा' त्वां 'अनु' पश्चात् एव प्रतूषएव 'उदियासम्' दण्डायमानो भूयासम् ॥१५॥

আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক ; অথবা—রাত্রি আমাকে প্রতিদিন ভালরূপে রক্ষা করুক, দিবা ভালরূপে আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক [উভয়রূপেই তুমি জীবনের রক্ষাকর্ত্তা এবং সংহার কর্ত্তা-এই সমুদয়মন্ত্রের অভিপ্রায়] ॥ ১৩ ॥

হে আদিত্য ! সকল অবয়ব পরীপূর্ণ, আপৎশূন্য, অচ্ছিদ্র, ভবার্ণব পারকরণে সমর্থ, বহুলোকের বিপদে ত্রাণকর্ত্রী এবম্বিধ তোমার কৃপারূপি তরীতে আরোহণ করিয়াছি ॥ ১৪ ॥

হে আদিত্য ! তোমার উদয়কাল শেষ হইতে না হইতেই অর্থাৎ তাহার পূর্ব্বেই অতি প্রত্যূষে উঠিয়াছিলাম ॥ ১৫ ॥

१४——आदित्यो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । स्वस्त्ययने विनियोगः ।
" स्वस्त्ययन मादित्य नावमिति" गो० ४, ६ ।

१५—आदित्यो देवता । यजुः । पूर्व्वाह्न-प्रार्थने विनियोगः ।
" उद्यन्तं त्वादित्यानूदिया समिति पूर्व्वाह्ने" गो० ४, ६ ।

প্রতিষ্ঠিতস্তং ত্বাদিত্যায়ানু প্রতি তিষ্ঠাসং ॥১৬॥ ভলায় স্বাহা ॥১৭॥ ভল্লায় স্বাহা ॥১৮॥

হে 'আদিত্য !' 'প্রতিতিষ্ঠন্তং' অস্তং গচ্ছন্তং 'ত্বা' ত্বাম্ 'অনু' পশ্চাৎ 'প্রতিতিষ্ঠাসম্' প্রতিষ্ঠিতেন উপবিষ্টো ভূয়াসম্॥ ত্বদীয়োদয়াস্তং কালং দণ্ডায়মানসমর্থো ভূয়াসমিতি ভাবঃ ॥১৬।

'ভলায়' দাত্রে পালন কর্ত্রে ইতি যাবৎ। 'ভল্লায়' সংহারকর্ত্রে। আদিত্যায় তুভ্যং, 'স্বাহা' হবিরিদং প্রযচ্ছামি ॥১৭,১৮

হে আদিত্য ! আমি তোমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রতিষ্ঠিত হইয়া উপবিষ্ট হইয়াছি [অর্থাৎ তোমার উদয়াবধি অস্তকাল পর্য্যন্ত দণ্ডায়মানে সমর্থ হইয়াছি] ॥ ১৬ ॥

পালন ও সংহার কর্ত্তা আদিত্য তোমাকে আমি এই হবি দিতেছি ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

॥ ইতি সামবেদিয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয়-প্রপাঠকস্য পঞ্চমঃ খণ্ডঃ সমাপ্তঃ।

১৬—আদিত্যো দেবতা। যজুঃ। অপরাহ্ণ প্রার্থনে বিনিয়োগঃ।
"প্রতিতিষ্ঠন্তং ত্বাদিত্যানুপ্রতিতিষ্ঠাসমিত্যপরাহ্ণে" গো০ ৪, ৬।
১৭—১৮—আদিত্যো দেবতা। যজুঃ। হোমে বিনিয়োগঃ।
"অভিমুখো জুহুয়াৎ ভলায় স্বাহা ভল্লায় স্বাহেতি" গো০ ৪, ৬।

॥ अथ षष्ठ-खण्डः ॥

*** वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मांत्स्वावेशो अनमीवो भवान:॥ यत्ते महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदेशं चतुष्पदे।१। हये राके सिनीवालि**

हे 'वास्तोष्पते' इन्द्र! त्वं 'अस्मान्' 'प्रतिजानीहि' फलार्थिन इत्यवगच्छ; 'किञ्च नः' अस्माकं सम्बन्धे रोगशून्यश्च 'भव' तथाच यथा त्वं तथास्मानपि कुरु—इति प्रार्थना। 'यत्' यस्मात् 'ते' तुभ्यं 'महे' पूजये 'तत्' तस्मात्, 'नः' अस्मान् 'प्रति जुषस्व' प्रतिसेवय; अभीष्ट-दानादिनेति भावः। त्वं हि 'द्विपदे' मयि, 'नः' अस्माकं 'शं' कल्याणकरः 'भव', 'चतुष्पदे' दम्पतीभावापन्ने 'च' मयि 'शं' कल्याणकरः भव ॥ १ ॥

'हये' इत्यादिपदं प्रत्येकं सम्बुद्ध्यन्तम्; सिनिवाली नामतो

হে গৃহ-পতে ইন্দ্র! তুমি আমাদিগকে ফলাকাঙ্ক্ষি বলিয়া জানিবে, এবং আমাদিগের সম্বন্ধে সুন্দররূপে প্রবেশ-ক্ষম, রোগশূন্য হও, অর্থাৎ যেরূপে তুমি হইতেছ, সেই রূপ আমাদিগকে কর,—এই প্রার্থিতেছি; যেহেতু আমরা তোমাকে পূজা করিতেছি অতএব আমাদিগকে অভীপ্সিত ফল প্রদান কর, যেহেতু আমাদিগের দ্বিপদাবস্থায় এবং চতুষ্পদাবস্থায় অর্থাৎ—দম্পতীভাব প্রাপ্ত হইলে, তুমিই কল্যাণ-প্রদাতা হইতেছ ॥ ১ ॥

---

* अथ गृहप्रवेशः।

१—इन्द्रो देवता। अनुष्टुप्छन्दः। नव गृह प्रवेशे पायसचरुहोमे विनियोगः।

"अत गृहीतं जुहुयात् वास्तोष्पत इति' गों ४,७।

सिनीवालि पृथुष्टुके॥ सुभद्रे पथ्ये रेवति पथ्यानो यशः आवह स्वाहा॥ २॥ ये यन्ति प्राञ्चः पन्थानो य उचोत्तरत आययुः॥ ये चेमे सर्वे पन्थानस्तेभिर्नो यश आवह स्वाहा॥ ३॥ यथा यन्ति प्रपदो यथा मासा-

देवतादयः विद्यन्ते। यूयं 'पथा' सन्मार्गेण 'नः' अस्मान् 'यशः' 'आवह' प्रापय॥ २॥

'यथा' 'प्रपदः' प्रपदाः पादाग्रभागाः उत्तरोत्तरं 'यन्ति' गच्छन्ति, 'मासाः' 'यथा' 'अहर्ज्जरं' अहोभिः जरात्वम् अवसानभावं 'यन्ति' गच्छन्ति; 'श्रीधातारः' श्रियो विधातारः देवाः 'एवं' एवमेवोत्तरोत्तरं 'सर्व्वतः' सम्पूर्णतः 'मा' मां 'समवयन्तु' समवेता भवन्तु, श्रियं ददतु इति भावः॥ ३॥

'ये' 'पन्थानः' मार्गाः 'प्राञ्चः' 'यन्ति', 'ये' 'उत्तरोत्तरतः'

হে হয়ি প্রভৃতি দেবতারা! তোমরা সকলে সৎমার্গের দ্বারা আমাদিগকে যশো লাভ করিয়া দাও; ॥ ২ ॥

যেরূপে পাদের অগ্রভাগ সকল, উত্তরোত্তর যাইতেছে, যেরূপে মাস সকল দিবার ক্ষয়ে ক্ষীণতা প্রাপ্ত হইতেছে; সেইরূপে শ্রী বিধাতা দেবতারা উত্তরোত্তর আমাতে সম্পূর্ণ রূপে সমবেত হউন, অর্থাৎ—শ্রী প্রদান করুন॥ ৩॥

যে প্রাচীন পথ-সকল চলিতেছে, যে প্রাচীন পথ-সকল

२–५–एषां चतुर्णां हय्यादयो देवताः। अनुष्टुप् छन्दः। आरण्याग्रहायणी कर्म्मणि स्वस्त्ययन होमे विनियोगः।

'हये राक इत्येकैकयाञ्जलिना जुहुयात् प्राङ्‌मुपक्रम्य वसुवन एधीत्यन्तं' गो० ४,८।

अहर्क्षीरं । एवं मा श्रीधातार: समवयंतु सर्वत: स्वाहा । ४ । यथा समुद्रं स्रवन्ती: समवयन्ति दिशो दिश: ॥ एवं मा सखायो ब्रह्मचारिण: समवयन्तु दिशो दिश स्वाहा ॥ ५ ॥ वसुवन एधि वसु-

'आयन्तु:' आजग्मु:, किमधिकेन ? 'ये च इमे' 'सर्व्वे पन्थान:' 'तेभिः' तै: पथिभि: करणै: हे आदित्य ! 'नः' अस्माकं 'यश:' 'आवह' प्रापय अस्मानिति यावत् ॥ ४ ॥

'यथा' 'स्रवन्ती:' स्रवन्त्य: नगशिखरादित: क्षरन्त्य: नद्य: 'दिश: दिश:' सर्व्वस्मात्दिश: 'समुद्र' 'समवयन्ति' सम्यक् अवगच्छन्ति, 'एवं' एवमेव 'मा' मां 'ब्रह्मचारिणः, ब्रह्मध्यान परायणा द्विजा: 'सखायः' बान्धवा: 'दिश: दिश:' सर्व्वस्मात् दिश: समवयन्तु ॥ ५ ॥

हे 'वसुवनि' वसुधनं वनति भजते इति वसुवनि: धना-

উত্তরোত্তর (প্রবহমান হইয়া) আসিতেছে, অধিক কি ? যে এই সকল-পথ, তৎসমুদয় পথ দ্বারা হে আদিত্য ! আমাদিগকে যশঃ প্রাপ্তি করাও ॥ ৪ ॥

যেমন পর্ব্বত-শিখর হইতে পরিস্রুত নদীরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, সমুদ্রেতে সমবেত হইতেছে, তদ্রূপ বান্ধব, বেদ-চিন্তাশীল দ্বিজেরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, আমাতে সমবেত হউন্ ॥৫ ॥

হে ধনাধিপ ! আমার গৃহে আগমন কর, হে ধনাধিপ!

বন এধি বসুবন এধি ॥ ৬ ॥ বশংগমৌ দেবযানৌ যুবং স্থো যথা যুবয়োঃ সর্ব্বাণি ভূতানি বশমায়ন্ত্যেবং মমাসৌ বশমেতু স্বাহা ॥ ৭ ॥ শংখশ্চ মন আয়ুশ্চ দেবযানৌ যুবং স্থো যথা যুবয়োঃ সর্ব্বাণি ভূতানি বশমায়ন্ত্যেবং মমাঽসৌ বশমেতু স্বাহা ॥ ৮ ॥ আকূতীং

ধিপঃ, তস্য সম্বোধনং 'বসুবন!' হে ধনাধিপ! 'এধি' এহি, ইহ গৃহে ইতি যাবৎ। বারত্রয়োক্তিরতিশয়ার্থা ॥ ৬ ॥

হে 'বশঙ্গমৌ' ঈশ্বরনিয়মস্য বশীভূতৌ চন্দ্রাদিত্যৌ! 'যুবাং' 'দেবযানৌ' দেবানাং দ্যোতমানানাং মার্গৌ 'স্থঃ' ভবথঃ। 'সর্ব্বাণি ভূতানি' 'যথা' 'যুবয়োঃ' 'বশং' 'আয়ন্তি' আগচ্ছন্তি, 'এবং' 'অসৌ' ঈশ্বরঃ 'মম' 'বশম্' 'এতু' আগচ্ছতু ॥ ৭ ॥

'শঙ্খঃ মনঃ' শঙ্খো যথা স্বচ্ছঃ শুভ্রঃ তদ্বৎ মনঃ 'চ' অপি চ 'আয়ুশ্চ' ইমৌ 'যুবাং' 'দেবযানৌ' 'স্থ' ভবথঃ। অন্যৎ পূর্ব্ববৎ ॥ ৮ ॥

আমার গৃহে আগমন কর, আমি পুনশ্চ বলিতেছি—আমার গৃহে অগমন কর ॥ ৬ ॥

হে ঈশ্বরের বশতাপন্ন চন্দ্রাদিত্য দেবদ্বয়! তোমরা দেবদ্বয় অন্যান্য দেবতাদিগের পথ স্বরূপ হইতেছ। সকল চরাচর বর্গ যেমন তোমাদের বশে থাকে সেইরূপ এই ঈশ্বরও আমার বশে আসুন ॥ ৭ ॥

শঙ্খ যেমন স্বচ্ছ, শুভ্র, তদ্রূপ মন ও আয়ু এই দুইটী

৬ – ইন্দ্রো দেবতা। যজুঃ। জপে বিনিয়োগঃ।
"প্রাঙুপক্রম্য বসুবন এধীত্যূর্দ্ধ্ব মুদীক্ষমাণো' গো° ৪,৮।
৭,৮ চন্দ্রাদিত্যৌ দেবতে। যজুঃ। পৃথক্ পৃথক্ ব্রীহি যব হোমে বিনিয়োগঃ।
"বশঙ্গমৌ শঙ্খশ্চেতি পৃথগাহুতী ব্রীহিযবহোমৌ প্রযুঞ্জীত' গো° ৪,৮।

দেবীং মনসা প্রপদ্যে যজ্ঞস্য মাতরꣳ সুহবা মে অস্তু ॥ যস্যাস্ত একমক্ষরং পরꣳ সহস্রা অযুতংচ শাখা স্তস্যৈ বাচে নিহবে জুহোম্যা মা বরো গচ্ছতু শ্রীর্যশশ্চ স্বাহা ॥ ৯ ॥ ইদমহমিমং বিশ্ব কর্মাণꣳ শ্রীবৎস-

'যজ্ঞস্য' 'মাতরং' প্রমাণকর্ত্রীম্ 'আকূতীং দেবীং' বাগ্রূপাং দেবতাং 'মনসা' অন্তঃকরণেন সাকং 'প্রপদ্যে' প্রপন্নোঽস্মি, কিমর্থমিত্যাহ—'মে' মম 'সুহবা' সুহবং সুন্দরাহ্বানং 'অস্তু' 'যস্যাঃ' 'তে' তব 'একম্' 'অক্ষরং' বর্ণং 'পরং' উৎকৃষ্টং 'চ' অপিচ 'সহস্রা' সহস্রং 'অযুতং' দশসহস্রং বহুতরমিতি যাবৎ 'শাখাঃ' বিদ্যন্তে 'তস্যৈ' ইদৃশ্যৈ 'নিহবে' আহ্বানযোগ্যায়ৈ 'বাচে' বাগ্রূপিণ্যৈ তুভ্যং 'জুহোমি' হবিঃ প্রযচ্ছামি। তথাচ 'বরঃ' প্রসাদঃ এষঃ যথা 'শ্রীঃ' লক্ষ্মীঃ 'যশশ্চ' 'মা' মাম্ আগচ্ছতু ॥ ৯ ॥

দেব মার্গ হইতেছে, সকল চরাচর যেমন তোমাদের বশে থাকে তদ্রূপ এই ঈশ্বর আমার বশে থাকুন্ ॥ ৮ ॥

যজ্ঞের প্রমাণ-কর্ত্রী বাণী রূপা দেবীর মনের সহিত শরণাপন্ন হইতেছি; আমার সুন্দর রূপে আহ্বান হউক তোমার সম্বন্ধে এক বর্ণই উৎকৃষ্ট হইতেছে; এবং সহস্র অযুত অর্থাৎ—বহুতর, শাখাও আছে; এতাদৃশরূপে আহ্বান-যোগ্য, বাণীরূপি তোমাকে আমি হবিঃ প্রদান করিতেছি, অতএব তুমি প্রসন্ন হইয়া এই বর প্রদান কর যে, আমাতে শ্রী(লক্ষ্মী, যশ) আসিয়া সমবেত হউক ॥ ৯ ॥

৯ – বাগ্ দেবতা। যজুঃ। প্রসাদ করণে বিনিয়োগঃ।
(গৃহ্যসূত্রে ঽস্য বিনিয়োগো ন দৃশ্যতে)

मभिजुहोमि स्वाहा ॥ १० ॥ पूर्णहोमं यशसे जुहोमि योऽस्मै जुहोति वरमस्मै ददाति वरं वृणे यशसा भामि लोके स्वाहा ॥ ११ ॥ इन्द्रामवदात्तमोवः परस्तादहंवो ज्योति र्मामभ्येत सर्वे स्वाहा ॥ १२ ॥

'श्रीवत्स'' श्रीवत्स-मणिमिव 'इदं'' पण्यद्रव्यं 'इमम्' 'विश्वकर्माणं' सर्व्वस्य स्रष्टारं देवं उद्दिश्य 'अभि' अभितः 'जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १० ॥

'पूर्णहोमः' अयं 'यशसे' यशोलाभाय 'जुहोमि' 'यः' यजमानः 'अस्मै' अग्नये 'जुहोति', 'अस्मै' यजमानाय सः अग्निः 'वरं'' प्रसादं 'ददाति', अतोऽहं 'वरं' 'वृणे' प्रार्थये— तदेवोच्यते='लोके' इह 'यशसा' यशस्वी सन् 'भामि' प्रकाशितोस्मि—इत्येव प्रार्थना ॥ ११ ॥

'इन्द्राः' हे इन्द्रादयो देवाः ! 'वः' युष्माकं 'परस्तात्' पृष्ठतः स्थितं 'तमः' अज्ञानम् 'अवदात्' खण्डनं कुरु, तथाच 'अहं' 'वः' युष्माकं 'ज्योतिः' गमेयमिति शेषः । 'सर्व्वे' देवाः 'मा' माम् 'अभ्येत' वरं दातुम् आगच्छत ॥ १२ ॥

শ্রীবৎসমণির ন্যায় এই পণ্য দ্রব্য বিশ্বকর্ম্মার উদ্দেশে অগ্নিতে নিক্ষেপ করিতেছি ॥ ১০ ॥

এই পূর্ণাহুতি যশোলাভের নিমিত্ত হবন করিতেছি, যে, অগ্নিতে পূর্ণাহুতি হবন করে, তাহাকে সেই অগ্নিদেব বর প্রদান করেন, অতএবই আমি বর প্রার্থনা করিতেছি—ইহ লোকে যেন যশস্বী হইয়া প্রখ্যাত হই ॥ ১১ ॥

१०—विश्व कर्म्मा देवता । निगदः । पण्यलाभ कामस्य होमे विनियोगः । "पण्यं होमं जुहुयादिदमहमिमं विश्वकर्माणमिति" गो० ४,८ ।

अन्नं वा एकछन्दस्यं अन्नꣳ ह्येकं भूतेभ्यश्छदयति स्वाहा ॥ १३ ॥ श्रीर्वा एषा यत्सत्वानो विरोचनो मयि सत्वमवदधातु स्वाहा ॥ १४ ॥ अन्नस्य घृतमेव

'अन्नं' व्रीह्यादिकं 'वा' एव 'एकछन्दस्यम्' अद्वितीयं छादकं 'हि' यतः 'एकम्' असहायम् 'अन्नम्' 'भूतेभ्यः' भूतान् सर्व्वानेव 'छदयति' प्राणधारकत्वेन आवृणोति ॥ १३ ॥

'यत्' ये इमे 'सत्वानः' भजन-कारिणः वयं तत् 'एषा' 'वै' निश्चयं 'श्रीः' शोभा ईश्वरस्य आदित्यस्य वेति शेषः । 'विरोचनः' दीप्तिमान् देवः आदित्यः 'मयि' 'सत्वम्' वलम् 'अवदधातु' स्थापयतु ॥ १४ ॥

'अन्नस्य' व्रीह्यादेः 'घृतम् एव' 'रसः' सारः, तच्च घृतं

হে ইন্দ্রাদি দেবতারা! তোমাদিগের পশ্চাৎ অবস্থিত অজ্ঞান তিমিরকে নষ্ট কর, তাহা হইলে আমি তোমাদের জ্যোতিঃ প্রাপ্ত হই। সকলদেবতারা আমাকে বর প্রদান করিতে আগমন করুন ॥ ১২ ॥

অন্নই প্রাণীদিগের প্রাণ-ধারণে অসাধারণ কারণ, অতএব অন্নই প্রাণ-ধারণ রূপ ধর্ম্মদ্বারা সমস্ত ভূতদিগকে রক্ষা করিতেছে ॥ ১৩ ॥

উপাসনা তৎপর যে আমরা,—ইহা সকল, অবশ্যই আদিত্যের শোভা হইতেছে, আদিত্য-দেব আমাতে বল প্রদান করুন ॥ ১৪ ॥

---

१२ – इन्द्री देवता । गायत्री छन्दः । सहाय कामस्य पूर्व्वहोमे विनियोगः । "सहाय काम उत्तरा" गो° ४,८ ।

१३,१४ – अनयोः आदित्यो देवता । निगदः । आज्य होमे विनियोगः । "आज्यमादित्य मभिमुखो जुहुयादन्नं वा एकछन्दस्यं श्रीर्वा एषेतिच गो° ४,९ ।

रसस्तेजः सम्पत्कामो जुहोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ क्षुधे स्वाहा ॥ १६ ॥ क्षुत्पिपासाभ्याᳬ स्वाहा ॥ १७ ॥ माभैषी र्नमरिष्यसि जरदृष्टि र्भविष्यसि ॥ रसं विषस्य नाविदमुग्रं फेनमिवास्यं ॥ १८ ॥ तुरगोपाय मा नाथ

'तेजः' स्वरूपं, 'सम्पत्कामः' अहं तत्ते जः 'जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १५ ॥

अनयोरर्थः सुगमः ॥ १६,१७ ॥

हे सर्पदष्ट ! 'मा भैषीः' मृत्युर भयं मा कुरु, 'न मरिष्यसि' 'जरदृष्टिः' जराव्याप्तजीवी 'भविष्यसि'। इदं 'आस्य' आस्यगतं 'विषस्य' रसम् निर्यासं 'उग्रं' फेनम् इव' अन्यकालजं फेनमिव न 'अविदम्' अपितु यत्सामान्य मितिभावः ॥ १८ ॥

অন্নের সার ভাগ ঘৃত, তেজ স্বরূপ হইতেছে, আমি সম্পত্তি কামনায় ঐ তেজ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৫ ॥ আমি ক্ষুধা নিবৃত্ত্যর্থ, এবং ক্ষুৎপিপাসা উভয়েরই শান্ত্যর্থ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

হে সর্প-দষ্ট ! মৃত্যুর ভয় করিও না, তুমি মরিবে না, তুমি সমুদয় জরাবস্থা ব্যাপিয়া জীবীত থাকিবে, আস্যান্তর্গত এই বিষরস মরণ জনক ফেনের ন্যায় নহে কিন্তু যৎসামান্য হইতেছে ॥ ১৮ ॥

१५—अग्नि र्देवता। वृहती छन्दः। आज्यहोमे विनियोगः।
'अन्नस्य घृतमेवेति ग्रामे" गों ४,८।
१६,१७—क्षुत्पिपासे देवते। यजुः। सायं प्रात र्होमे विनियोगः।
सायं प्रात र्जुहुयात् "क्षुधे स्वाहा क्षुत्पिपासाभ्यां स्वाहेति" गों ४,८।
१८—सर्पो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। विषापनोदने विनियोगः।
"माभैषी र्नमरिष्यसीति विषवता दष्टमद्भि रभ्युक्षणञ्जपेत" गों ४,८।

गोपाय मा ॥ अघस्तिभ्यो अरातिभ्यः स्वस्त्ययनमसि ॥ १९ ॥

हे 'तुर !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय, हे 'नाथ !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय, केभ्यः ?—'अघस्तिभ्यः' क्रूरकर्मभ्यः । 'अरातिभ्यः' शत्रुभ्यः । तुरः त्वं 'स्वस्त्ययनं' कल्याणकारणम् 'असि' भवसि यतस्तत एवेत्थं प्रार्थितम् ॥ १९ ॥

হে তুর ! আমাকে রক্ষা কর, হে নাথ ! আমাকে রক্ষা কর, ক্রূরকর্ম্মা শত্রুদিগ হইতে রক্ষাকর, হে তুর ! তুমি যে-রূপে স্বস্ত্যয়ন স্বরূপ হইতে থাক এই রূপ প্রার্থনা করিতেছি ॥ ১৯ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे

षष्ट खण्डः समाप्तः ॥

——:०:——

॥ अथ सप्तम-खण्डः ॥

***हतस्ते अत्रिणा क्रिमिर्हतस्ते जमदग्निना गोतमेन तिनीकृतो ऽस्मै व त्वा क्रिमे ! ब्रह्मवद्यमवदं ।१।**

'अत्रिणा' ऋषिणा 'ते' तव पूर्व्वपुरुषः 'क्रिमिः' 'हतः' हिंसितः, 'जमदग्निना' ऋषिणा 'तिनीकृतः' तनूकृतः स्वल्पी-

তোমার পৃষ্ঠদেশে অবস্থিত পুরুষ অত্রি ঋষি কর্ত্তৃক

१९—दण्डीदेवता । यजुः । दण्डस्थापने विनियोगः ।

"तुरगोपायेति स्नातकः संवेशन बेलायां वैणवं दण्डमुपनीयोद्दधीत स्वस्त्ययनार्थं" ४, ९ ।

१—अत्र्यादयो देवताः । बृहतीछन्दः । क्रिमिपातने विनियोगः ।

*इह खण्डे स्थिताः सर्व्वे एव क्रिमि मन्त्राः ।

"हतस्ते अत्रिणा क्रिमिरिति क्रिमिमन्तं देशमद्भिरभ्युक्षन् जपेत्" गो ४, ९ ।

भरद्वाजस्य मन्त्रेण सन्तिनोमि क्रिमे त्वा ॥ क्रिमिꣳ ह वक्रतोदिनं क्रिमिमान्त्रानुचारिणं ॥ क्रिमिं द्वि-शीर्षमर्जुनं द्विशीर्षꣳ ह चतुर्हनुं ।२। हतः क्रिमीणां क्षुद्रको हता माता हतः पिता ॥ अथैषां भिनकः

क्षतः । हे 'क्रिमे !' अद्य अहं 'अत्रैव' 'ब्रह्मवद्य' ब्रह्मघ्न 'त्वा' त्वां 'अवद्यं' निन्दनीयं करोमीति शेषः ॥ १ ॥

हे 'क्रिमे !' 'त्वा' त्वां 'भरद्वाजस्य मन्त्रेण' 'सन्तिनोमि' सम्यक् तनूकरोमि, कीदृशं क्रिमि मित्याह—'क्रिमिं' ('ह' व्यर्थः) 'वक्रतोदिनं' वक्रभावेन व्यथा-कारिणम्, 'क्रिमिम्' 'आन्त्रा-नुचारिणं' अन्त्रमध्ये अनुचरण शीलं, 'क्रिमिं' 'द्विशीर्षं' अत-एव 'चतुर्हनुम्', 'अर्जुनं' शुक्लवर्णम् ॥ २ ॥

'क्रिमीणां' 'क्षुद्रकः' वत्स-सङ्घः 'हतः', 'माता' जनयित्री क्रिमीणामेव 'हता', 'पिता' जनकश्च क्रिमीणामेव 'हतः' । বিনষ্ট হইয়াছে, তোমার পৃষ্ঠদেশ-স্থিত পুরুষ জমদগ্নি ঋষি কর্ত্তৃক হিংসিত হইয়াছে এবং গোতম ঋষি তাহাকে সূক্ষ্ম (খাট) করিয়াছেন। হে ক্রিমে! অদ্য আমি এই স্থলেই ব্রহ্মঘ্ন তোমাকে নিন্দনীয় করিতেছি ॥ ১ ॥

হে ক্রিমে! তুমি বক্রভাবে পীড়াজনক, অন্ত্র (দহ বন্ধক নাড়ীবিশেষ) মধ্যে গতি শীল, দ্বিমস্তক, অতএব চতুর্হনুক, ও শুক্লবর্ণা হইতেছ, তোমাকে ভরদ্বাজ ঋষির মন্ত্র বলে ভাল-রূপে সূক্ষ্ম করিতেছি ॥ ২ ॥

ক্রিমিদিগের বৎস-সমুদয় ও মাতা, পিতা সমুদয়ই আমা-

२—भरद्वाजो देवता । त्रिपादनुष्टुप्छन्दः । क्रिमिपातने विनियोगः ।

কুম্ভো য এষাং বিষধানকঃ ॥ ৩ ॥ ক্রিমিমিন্দ্রস্য বাহুভ্যা মবাঞ্চং পাতয়ামসি ॥ হতাঃ ক্রিময়ঃ সাশাতিকাঃ সনীলমক্ষিকাঃ ॥ ৪ ॥

অপরস্য 'এষাং' ক্রিমীণাং 'বিষধানকঃ' বিষাধারঃ 'কুম্ভঃ' কলসস্য 'ভিন্নকঃ' ভিন্নঃ ময়েতি শেষঃ ॥ ৩ ॥

'সাশাতিকাঃ' অশাতিকয়া সহ বর্ত্তমানাঃ 'সনীলমক্ষিকাঃ' নীল-মক্ষিকয়া সহ বর্ত্তমানাঃ 'ক্রিময়ঃ' সর্ব্বে 'হতাঃ'। তস্য নষ্টং 'ক্রিমিং' ক্রমিকুলং 'ইন্দ্রস্য' 'বাহুভ্যাং' 'অবাঞ্চম্' অধোমুখং 'পাতয়ামসি' পাতয়ামঃ ॥ ৪ ॥

কর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে এবং ইহাদিগের বিষাধার, কুম্ভ ও আমাকর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে ॥ ৩ ॥

অত্যুচ্চ আশার সহিত বর্ত্তমান, নীলমক্ষিকার সহিত বর্ত্তমান, ক্রিমি-সকল আমাকর্ত্তৃক হত হইয়াছে, সেই হত ক্রিমিকুলকে ইন্দ্রের বাহুরদ্বারা অধোমুখে পাতিত করিতেছি ॥ ৪ ॥

ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্রব্রাহ্মণে
সপ্তমখণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

३—मदहाशीदेवता । अनुष्टुप्छन्दः । क्रमिपातने विनियोगः ।
क्रमिपातने विनियोगः ।

॥ अथ अष्टमः खण्डः ॥

*अर्हणा पुत्र वाससा धेनु रभवद्यमे ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरां समां ॥ १ ॥ इद मह मिमां पद्यां विराज मन्नाद्यायाधितिष्ठामि ॥ २ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञी र्बह्वीः शत-

या इयम् 'अर्हणा' पूजासम्पादिनी 'धेनुः' 'सा' 'यमे' धर्मे अतिथि सत्कारात्मके 'अभवत्', 'सा' च धेनुः 'उत्तराम् उत्तरां' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'नः' अस्माकं गृहे 'पयस्वती' दुग्धवती सती 'दुहा' दुग्धदात्री भवतु ॥ १ ॥

'अहम्' अतिथिः 'इदं' आसनं, 'इमां' 'पद्यां' पाद्यं 'विराजं' शोभितं गृहम् 'अन्नाद्याय' अन्नभक्षणं कर्त्तुम् 'अधितिष्ठामि। आश्रये ॥ २ ॥

যে এই পূজা সম্পাদন শীল ধেনু, ইহা অতিথি-সৎকার রূপি ধর্ম্মের নিমিত্ত হইয়াছিল, সেই এই ধেনু উত্তরোত্তর বর্ষে আমাদিগের গৃহে দুগ্ধবতী হইয়া দুগ্ধ প্রদান করুক ॥ ১ ॥

আমি (অতিথি) অন্ন ভক্ষণ করিবার নিমিত্ত এই আসন, এই পাদ্য গ্রহণ করিয়া শোভিত গৃহে অধিকার করিতেছি ॥ ২ ॥

---

१ – अर्हणीय-देवता। अनुष्टुप्छन्दः। धेनु बन्धने विनियोगः।

*अथार्चनीयप्रकरणम्। "षडार्घ्यारिहाभवन्ति – आचार्य्य – ऋत्विक्—स्नातका – राजा – विवाह्यः – प्रियोतिथिरिति,, गों ४,१०।

२—अर्हणीय-देवता। यजुः। उपविशतो जपे विनियोगः

"इमां पद्यां** इति प्रतिष्ठमानो जपेत्" गों ४,१०।

विचक्षणाः ॥ तामह्यमस्मिन्नासने छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ३ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञी र्विष्ठिताः पृथिवीमनु ॥ तामह्य मस्मिन् पादयोरच्छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ४ ॥ यतो देवीः प्रतिपश्याम्याप स्ततोमारा-

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः फलपाकान्ता व्रीहयः, 'सोम-राज्ञीः' चन्द्रमा देवताकाः, 'बह्वीः' बह्वः 'बहुतराः 'शत-विचक्षणाः' बहु-जीवन-रक्षण-निपुणाः 'अस्मिन्' आसने 'अच्छिद्राः' निरन्तर स्थिताः—'ताः' 'मह्य' 'शर्म' कल्याणं 'यच्छत' प्रदानं कुरुत ॥ ३ ॥

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः 'सोमराज्ञीः चन्द्रमा देवताकाः 'पृथिवीम् अनु विष्ठिताः' भूमि मनुलक्ष्य अधिस्थिताः; परार्द्धार्थः पूर्व्ववत् ॥ ४ ॥

हे 'आपः !' 'यतः' हेतोः युस्मान् 'देवीः' 'प्रति पश्यामि'

বহু জীবন রক্ষণে নিপুণ, এই আসনে নিরন্তর অবস্থিত যে, চন্দ্রদেবতা-জীবন, ওষধি (ধান্যাদি) সকল,—তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৩ ॥

ভূমিতে অধিষ্ঠিত, যে চন্দ্র-দেবতা জীবন, ওষধিরা, তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৪ ॥

হে আপঃ ! তোমাদিগকে আমি দেবতা রূপে দেখিতেছি,

४,४—अर्थ्यः ओषधीर्देवता । अनुष्टुप् छन्दः । पादयोरधस्तात् विष्टरदाने विनियोगः "या ओषधीरित्युदञ्चं विष्टरमास्तीर्य्याभ्युपविशेत् द्वौचेत् पृथक्पृथक्भ्यां पादयोः" गो४,१०

द्वि रागच्छतु ॥ ५ ॥ सव्यं पादमवनेनिजेऽस्मिन् राष्ट्रे श्रियं दधे ॥ ६ ॥ दक्षिणं पादमवनेनिजे ऽस्मिन् राष्ट्रे श्रिय मावेशयामि ॥ ७ ॥ पूर्व्वमन्य मपरमन्य मुभौ

'यतः' तस्मात् प्रार्थये—यदयं 'धिः' धृतिशीलः यजमानः 'मारात्' विघ्नात् 'आगच्छतु' विघ्नान् विसृज्य एतु ॥ ५ ॥

'सव्यं' वामं 'पादम्' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन 'अस्मिन् राष्ट्रे' एतद्-गृहस्थस्य शासनाधीन-राज्ये गृहे 'श्रियं' शोभां लक्ष्मीं वा 'दधे' स्थापयामि ॥ ६ ॥

अस्यार्थः पूर्व्ववत् सुगमः ॥ ७ ॥

'पूर्व्वं' प्रथमम् 'अन्यं' पादम्, 'अपरं' द्वितीयं 'अन्यं' पादम् एवं कृत्वा क्रमात् 'उभौ पादौ' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन किम्फल मित्याह—'राष्ट्रस्य' एतद्गृहस्थ-संसारस्य

অতএব প্রার্থিতেছি যে, এই আমার মেধাবী জমান, বিঘ্নকে অপসৃত করত আগমন করুক ॥ ৫ ॥

বাম পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, পাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৬ ॥

দক্ষিণ পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, পাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৭ ॥

এই সংসার সমৃদ্ধিযুক্ত করিবার নিমিত্ত এবং অভয়ের

५—आपो देवताः । विराट् छन्दः । पादप्रक्षालनार्थोदके विनियोगः ।
"यतोदेवीरित्यपः प्रेक्षेत" गों ४,१० ।
६ – अर्हणीय श्रीर्देवता । निगदः । वामपादप्रक्षालने विनियोगः ।
"सव्यं पादमवनेनिजे इति सव्यं पादं प्रक्षालयेत् गों ४,१० ।
७ — अर्हणीय-श्रीर्देवता । निगदः । दक्षिणपादप्रक्षालने विनियोगः
"दक्षिणं पादमवनेनिजे इति दक्षिणं पादं प्रक्षालयेत्" गों ४,१० ।

स्वसादित्याना ममृतस्य नाभिः ॥ प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागा मनागा मदितिं वधिष्ट ॥ १४ ॥

अष्टानां देवानां 'दुहिता', 'आदित्यानां' द्वादशानां 'स्वसा' 'अमृतस्य' दुग्धरूपस्य 'नाभिः' उत्पत्ति-स्थानम् । अतः 'अदितिं' अदीनाम् 'अनागां' निरपराधां 'गाम्' इमां हे यजमान परिचारकाः! यूयं 'मा बधिष्ट' बधं मा कुरुत, अहञ्च तव प्रभोराज्ञात्युगति-दोष-प्रशमनाय 'चिकितुषे' ज्ञानवते 'जनाय' यजमानाय त्वत्-प्रभवे 'प्रनुवोचम्' पूर्व्वमेवोक्तवान्, इदमिति यावत् ॥ १४ ॥

খড়্গহস্ত সেই গো-শত্রুকে হনন করিবার নিমিত্ত, ত্যাগ কর ॥ ১৩ ॥

ইনী (গো) রুদ্র সকলের মাতা হইতেছেন, বসু সকলের দুহিতা হইতেছেন, আদিত্য সকলের ভগিনী হইতেছেন, অমৃতের উৎপত্তি স্থান হইতেছেন, অতএব অখণ্ডনীয় নিরপরাধ এই গোকে, হে যজমান-পরিচারকেরা ! তোমরা সকলে, বধ করিও না, আমি জ্ঞানবান্ যজমানকে—অর্থাৎ তোমার প্রভুকে, তোমার প্রভুর আজ্ঞা-অবহেলা রূপ অপরাধ মার্জ্জনা করাইবার নিমিত্ত পূর্ব্বেই বলিয়াছিলাম ॥ ১৪ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे अष्टम-खण्डो द्वितीय-प्रपाठकस्य समाप्तः ॥

१३— गौर्देवता। बृहती छन्दः । गोमोचणे विनियोगः ।
"मुञ्च गां वरुणपाशा द्विषन्तं **ब्रूयात्" गो० ४,१० ।
१४—गौर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । गवानुमन्त्रणे विनियो[illegible]
"माता रुद्राणामित्यनुमन्त्रयेत" गो० ४,१० ।

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिरे—वि,ए,उपाधिधारिणः श्रीजीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यस्य सकाशात् लभ्यानि ।



